मेवै रा रूंख ?

अन्नाराम 'सुदामा'

धरती प्रकाशन

मेवै रा रूंख ?

(उपन्यास)

उस जनपद का क व ह : 1981)

अरघान (कविता संग्रह : 1984)

I-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

1

"सुगना, आव देखा, चिलम झड़का'र वैगो-सो दारै, सूरज निकळग्यो है भलो, भातो आवै वी सू पैला-पैला एक पाथ पूरी करणी है आपानै," सिनाथ (सिवनाथ) आपरै काकै रै बेटै भाई नै कैयो।

"आयो ही," चिलम झडकावतै वण उथळो दियो।

"रेत सावळ नाखी ऊपर, आवैगी कोई चिणख उड'र···"

"नहीं, नहीं आ थोड़ी ही हुवै ?"

"हुवण नै तो रैवण दे तू, आगै-आगै हुगी, आ तो नहीं हुई ही आछी, कसिया झूपड़ी मे ही खडा कियोड़ा है भलो।"

"ठा है।"

काधां कसिया, माथा पर रेतिया गमछा, उघाडा अर कोछा टाग्या, दोनू भाई निनाण खातर टुरग्या, जवान मोरचै पर जावता हुवै ज्यू।

"सुगना तावै आवै तो चिलमड़ी नै छोड छिटकावै नी, धुवै सू किसो पेट भरीजै गैला, आ खुराक थोडी ही है आदमी री।"

"चिलम अर चुगली मू लागी माडी ही है, हूं जाणू घणी", थोड़ो रुक'र वो भळे बोल्यो, "बाबो जांवता-जांवता आ दे'र गया है—लाड मे, रोज भर-भर देवतो बानै सागै हू ही सीखग्यो पण, अबै थारै नहीं जची तो आज सू ही छोडी ई ठीकरी नै, काईं काढणो है ई काट मे, किसो डील माजीजै है ई सू ?"

"और तो काईं है रे, कदेई झूपड़ती धुखगी तो, आपां नै ही दोरी है, आपणो तो माल-गोदाम ही ओ है।"

"झूपडी अर कांई झूपड़ो, डील सू ऊचा थोडा ही है, माडी जिकी माडी ही माडी।"

बात करता-करता वै, डेरै सू खासा अळगा, डैरी मे पूगग्या अर आपरै

बौपार मे लागग्या। सिनाथ बरस पैंतीसेक रो अर सुगनो कोई तीस रै आसै-पासै। है न्यारा-न्यारा, खेती सागै ही करै, हेत है आछो। सिनाथ है तो मैट्रिक ही पण भणाई सू बीरी गुणाई जादा है।

खेत मे धान चौपन्नै सू ले'र अठपन्नै ताई, पण तिसवारी करतो, वो अळसाईजै हो अर मांय-मांय, कोई-कोई तुम्गो झुळसीज' र जमी रै चिपै ही। सिनाथ धान नै जिया ही उदास अर तिसायो देख्यो, आख्या रै रस्तै एक गैरी उदासी बीरी आखी चेतना मे उतरगी। जियां-जिया कसियो चालै हो, बिया-बिया ही बीरो मन। सोचै हो, 'पाच-सात दिन जे की छाटा-छिड़को नही हुयो तो तुम्गो सगळो सीज'र, रेत सागै लेखै लागसी अर आपां हाथ झडका'र आपणै घरे, घरे ही नही काई ठा कठै जावता ठैरस्या? आ सोचता ही एक अणमावती पीड बीरै रूं-रूं मे व्यापगी। 'पाच-सात मण दाणां धूड मे खिडाणा हा, खिडा दिया।' फेर सूरज सामो देख्यो, निकळतो ही क्रांतिकारी। पून बन्द अर तिडकी तर-नर बधतै ओग-सी ताती, अधघडी ही मसां हुई है खोरता, पसीनै रा रीगा अबार ही चालू हुग्या, अर्क पूरो काढसी, 'आडंग रा आसार है', बधती पीड अर उदासी नै जाणू एकर की बिसराम मिलग्यो। डावै हाथ कानी देख्यो, एक कैलियै री लम्बी छायां मे रमतो चिडकल्या धूड मे न्हावै हो, बीरो डोलतो बिस्वास और जमग्यो एकर, चैरै पर एक थिरता मूर्तिमन्त हुगी।

दिस्टी सामनै गई ठेठ---पचास पावडा खेत री सीव तांई, बोल्यो, "सुगना, हे वै देख, दो-तीन डागरा बडै खेत मे, धणी मरै आंरा मठ्ठो ठोकण नै तो त्यार रैसी, साभता नै मौत पड़ै, दोड देखां", अर बो कसियै समेत ही दौड्यो। "कसियै री ऊंधी-सूधी दे मत लिए कठै ही कोई गवतरी रै भलो ?" दौडतै नै बीनै भळै सुणीज्यो। कह'र पाछो ही बो कसियो चलावण लागग्यो। कसियो चलावतो-चलावतो आपरै मत्तै ही बोल्यो, "डांगरा किसा टिकण दे सोरे-सास, काई दूर मे बाडतो और करणी" अर कसियो चालै हो खाथो-खाथो। हाथ इसा सध्योड़ा कै कसियै री धार नै आडी-टेढी करतो वो धान रै चिपाचिप अर सागै ऊग्यै निनाण री जड ही ढेड़ै करतो, धान रो भळै रूं ही खाडो हुवै किसी पोल पड़ी है। घडी दो-ढाई-एक निनाण कियो हुसी, सामनै मा अर टाबर आवता दीस्या---भातो ले'र। अधघडी हाथ और

चला'र, झूपड़ी कानी टुरग्या दोनू भाई।

थारियै में रोटचा, तड़क्योड़ी छाछ, पाच-सात गाठ कादा री अर एक चीरड़ी में थोड़ा लूण-मिरच। मा बोली, "भई महीनै-मास में जे रोडती च्यायगी तो छाछ-रावडी घपाऊ खाया, नी जितै फोडो ही है। कादा नै ही वाळनजोगां ने काई मरी खाई है अंम, ढाई रिपिया कीलो दिया है धन्नै वाणियै।

"ढाई रिपिया !"

"लाई हू नी, वै ही भळे उडता-उडता।"

"इसो काई नाक झरै हो बा बिना, लूण मिरच ही सही, जाट रा बेटा हां, एकर तो पाणी में अलो'र ही जीम लेवता।"

"वेटा, मिरच किसी सस्ती पड़ै, दस-बारै रिपिया कीलो, की गुंढ कौं कचरो-कूस अर की कसती, कूटचा पछै रिपियै में चोखी चटणी एक ही हुवै। कांदा रा च्यार छूतका मागै टुकड़ो गळै सौरो उतरसी।"

बाप ही आयग्यो लार रो लार, कांधै कसियो, उघाडो अर सिर पर मटमैलो अर खूस्योड़ो-सो गमछियो, वरस साठेक रो, ओछी दाड़ती, कद रो ओछो ही पण जिलाड़ री लीका मे जीवण रो अनुभव लम्बो अर निखरयोड़ो।

बात की डोकरै रै कानां में ही पड़गी, बोल्यो, "दो रिपिया तो अबार सहर में है कादा, अर ढाई कीलो हा जेठ मे। धन्नै वाणियै, एक लोड पूरो, ले'र नाख दियो एक साळ मे, तीन मू कम काईं पड़चा हुसी बीरै, दो अर ढाई में सै काढ दिया, गरीब आदमी काईं तो खायलै अर कांई पैरलै, एढो-टारडो कोई आ पड़ै तो बीरो सास निकळनो सोरो, एढो निकळनो दोरो।"

सिनाथ जीमतो-जीमतो ही बोल्यो, "रिपियै रा छव-सात बटै तो ही धन्नै जिसै नै धाप नी आवै, फेर ही उडतो ही तोलसी। इसो ही रूळो, राज लाग्यो मन्नै, दूकानदार बापा रै, सामो ही नी जोवै।"

"अरे वेटा, चोर-चोर सै, मौसियाई भाई, राज है कठै, मलीदां माथै उतरयोड़ा है, भोट द्यो थारी सेवा करस्यां, अरे सेवा थे थारी अर थारै लुगाई टाबरा री करता म्हारी कियां करस्यो, सेवा करणआळी रात ही थारी मावां थांनै जणती तो घाटो ही क्यांरो, आज ताईं अकास रै पगोथिया

नी लगा देंवता थे ? जामसी कोई भागण वापडी ईं धरती रो उदो आसी वी दिन। सेवा नैं जावण दो, मिणियो मोस'र मारो नी तो ही चोखो, थारा गुण मानां, टुकडो कमा'र तो तो खावण दो।"

डोकरै छाया पडी लोटड़ी उरिया मिरका'र बूक चडाई, दो गुटका ले'र बोल्यो, "पाणी सदा जिसो ठंडो नी लाग्यो आज, बिरखा नैंडी ही हुणी चाईजै। सुण तो आ ही राखी है—

'मटकी मे पाणी गरम, चिडिया न्हावैं धूड।
ईंडा ले कीडी चडै, तो बिरखा भरपूर।।"

कनै बैठे, जीमतै सिनाथ नैं; टैम री आ बात इसी लागी जाणू बीरी आत्मा ही बाप रैं कंठां सू बोली है। डोकरो कसियो ले'र निनाण खोरण टुरग्यो। सिनाथ रैं जी मे ही कै बाप नैं सुणाऊ, "सुगनैं आज चिलम छोड़दी है", फेर सोच्यो लारैं सू हेलो कुण मारसी, दो घड़ी पछैं ही सही। दोनां भाया डोढ-एक रोटडी मसा चिगळी हुवैली, एक रोटी छाछ मे चूरैं हा का परिया, आंवती-सी एक जीप रो हरडाट सुणीज्यो अर दोनू हा ज्यू ही थाळी छोड'र भाग्या, आगळचा ही नी चाटी, ऊपरला दात ऊपर अर नीचला नीचे, आथूणी सोव री खाई में जा'र पेट तणां पड़ग्या, दस मिट ताईं सिर ही ऊंचो नी कियो। लुगाया दोनूं झूपडी मे वड़गी, ईंण पाछो ही घिरग्यो। आप, डोकरी अर दो पोता बरस दमदसेक रा वारैं ऊभा जीप-री आवाज कानी झाकैं हा। परियां एक मोटर जावती दीसी गांव कानी। खतरो टळग्यो, जद डोकरो गयो—खाई कनैं, जा'र हेलो मारयो, 'सिनाथिया आवो रे' जद वैं निकळचा।

उठ'र डेरैं आया, रोटड़ी खाई ईंतै-चोनै बाको फाड़ता-फाड़ता।

डोकरो बोल्यो, "काईं टैम आई है, अर काईं ओ तोफो चाल्यो है, कीनैं ही जीवण देसी का नी ? साळा इसा गूगा हुयोडा है कै कोई आठ रो ठा न कोई साठ रो। रावतियै मेघवाळ नैं वाढ़'र बेकार कर दियो, म्हारैं सू पन्दरै दिन मोटो है। प्रभुआळै पोतै नैं—वापडो कुतर री लाद ले'र गयो हो सहर, एक सिपाईड़ै पोटा'र वढा दियो।"

"वीरी तो सगाई हुई ही लारैं सैं ?" सुगनैं कैमो।

"बेईमाना व्याव रो फोड़ो ही मेट दियो, ईंण हरख-कोड सूं व्याव

करतो, कूक'र रैयग्या बापड़ा—हाथी नै हिरावड़ो कुण बतावै रे भाई ?"

"सुणी है बाबा, रोही गाव मे लुगाई अर मोटघार झाडबढ, फरसी, डाग अर सेला ले'र, राज री एक जीप आगै ऊभग्या, बोल्या, "मारस्या अर मरस्या, जे कण ही हाथ लगा लियो म्हारै तो। जीपड़ी सागी पगा ही दौड़गी, मुड़'र पाछी आज तांई नी आई ।"

"मौत रै छेड़ै फतै लेवणियां किता है, अर भळै राज सू थोड़ो ही सकीजै, हा सगळी रैत उलटघा तो राज नै मुश्कल ही है पण आ कद हुवै बैगीसी । अै तो आपरै कियां नै आपे ही पूगसी मोडा-वैगा, जाणा हा घड़ो भरीजणआळो है अबै तो—अनीत री ऊमर घणी लम्बी नी हुवै ।" डोकरो भळै टुरग्यो निनाण कानी अर अै भाई-भाई दोनू एक खेरडी री गैरी छाया कानी—पाच मिट अन्न पौढावण नै ।

आडा हुया ही हा, पूरो पसवाड़ो ही नी फोरघो, कान्हो कोटवाळ आवतो दीस्यो । सिनाथ बैठो हुग्यो । बोल्यो, "आव कोटवाल, सुणा गांव री गल्ला ?"

लम्बी सास ले'र बैठतो बोल्यो, "गाव री गल्ल थारै सू किसी छांनी है, जजमान ।"

"हूं तो अबार दस दिन हुग्या, गाव ही नी गयो, आ रोही भली अर म्हे दोनू ।"

"जद ही पच्चीस-तीस हळ रो निनाण काढ लियो, नुवों पइसो ही नी लगायो, काम री तो मसीन हो थे दोनूं, म्हारो बो च्यार हळ रो टुकड़ो ही ऊंधै माथै पड़घो है ।"

"खैर, तनै तो ऊमर ही आयगी, पिचपन-छप्पन री, है ही खासो थाकल, पण छोरो है, लुगाई है मोटियार जवान बीरै ।" आ कह'र सिनाथ जाणू बीरै रुक्योड़ै आंसुवां आगला तोणा खोल दिया हुवै । वो बैठो-बैठो सजळ हुग्यो । टोपा गालां पर हुंता ठोडो री दाड़ी मे आ'र अदीठ हुग्या । एक मिट वो की नी बोल्यो ।

"क्यो कान्हा म्हारो कारू है तू, म्हारै सारू कोई काम है तो [illegible] कायरी किया आई थारै ?"

"जजमान थे म्हारा हो, थारै सू आगै ही मैं केई दफै दुख-सुख [illegible] करी

है, म्हारी कोटवाळी मरी जद ही वे म्हारी पूरी मदद करी, गुण तो एकर ही हुवै मिनख रो कोई मानै तो।"

"हा तू की कह तो सरी ?"

"छोरै रै आ रॉडहती माड़ी आयगी, नातो कर'र खराब हुयो, पइसै सू ही खळेट हुयो अर मानखै सू ओर गयो, म्हारो थाकेलो ओ ही है।"

"थारी पार नही पड़ै तो, दो रोटड़ी आपणै अठै सू ले जाया कर।"

"बात रोटी री नी है जजमान, बात है, लुगावडी है परलै पार। बीनै साबण अर अतर-फलेल चाईजै। आ तो कोई सेठाणी है, सेठ कीनै ही हाथ रो मैल ही नी दै, ई नै तो घणो ही टूठै। कान पापी है जजमान, सुणूं जद काया घणी ही सीजै, पण जगत री जीभ, थोड़ी ही पकड़ीजै। छोरो पांच-पांच, सात-सात दिन स्कूल नै जावै परो। छोरो अर छोरी है अगली रा, वै मनै सेकै, टुकड़ो तो मारै का नही, हू तो लाठी अर भीत विचाळै आयोड़ो हू—कीनै जाऊ बतावो ?"

"लुगावडी ही हाथ तो हिलावती है ली की ?"

"सेठा रै पोठिया थापदै, खाखळ वारदै, अर बठै ही पेट भराई करलै, मोड़ी-बैगी मन मे आवै जद आवै, गोळां रा टीगर केई, ईनै-बीनै घर कानी झाका घालै, लोह ही खोटो हुवै तो कँवू ही कीनै, आपरी साथळ उघाड्यां आप ही लाज मरू, घणी ही एक चढै अर एक उतरै, पण, बळ बिना बुद्धि बापडी है।"

"तो छोरै नै समझाऊ कदेई ?"

"ना ओ, बो राड रै मे रत्ती हुवै तो घाटो ही क्यारो, गुटको ले'र गोळां जिसो ही वो है, एक रत्ती बिना पाव रत्ती है ओ।"

"की तो दुनिया है रे, विगाणै ही उठा खड़ी करै।"

"नही माईता, सूई रो मूसळ तो खैर हुणै सकै, पण सूई ही नही हुवै जद ?"

"हां आ तो है ई, अबार ?"

"सेतडो देख'र आऊ, कदास दो मण कांट करम मे लिखी हुवै तो, थारो मन देख्यो जद दो मिट दुख छांट लियो थारै आगै, नही जद हू तो इसी बात नै जीभ पर ही नी चढण दू।"

सिनाथ बीरै चैरै मामो एकर गौर सू देख्यो, बीनैं लागी गरीब डोकरै री आंख्यां में ऊची आंवती पीड़ री तस्वीर अर चैरै रै सळां में बीनै फोडा घालती बेजा परेसानी। बात री दिस फोर'र बो बोल्यो, "कोटवाळ, एक जीपड़ी गई दीसै ही गांव कांनी ?"

"हां माईतां, भूल ही ग्यो हूं तो थानैं कैणो, गांव मे आज थाणो आयो है।"

"कियां रे ?"

"पीरू गगो कुम्भार छांणां रो गधियो ले' र आवै हो रोही सू। सैतान-सिंघ सकड़ती लियां गौरवै कठै ही मिलग्यो। 'साळा बाडा, म्हारै खेत सूं छांणां लावै अर मटकड़ी मांणां जद आख ही नी उघाड़ै, खेत थारै बाप रो है, हासल तो म्हे भरां अर खावकी तू खावै,' दे टिल्लो बोरियो पटक दियो अर दो टेकी ओळाध री गुद्दी मे, रोवतो बापड़ो घरे आयग्यो। आदमी भेळा हुग्या बीरै घर आगै राणोराण।"

"फेर ?"

"फेर दो-च्यार पाखरिया बीनै थाणै लेयग्या, रपोट मडा'र पाछा आयग्या। लिखायां पछै थाणो तो आवै ही। थाणेदार रा केई कमाऊ बेटा है गाव में।"

"आगै फेर ?"

"एकर तो घणखरां में इसी हुई, मत पूछो। गुवाड़ में किता ही सैतान-सिंघ अर जोरावरसिंघ खडा हा। जीप री हरडाट सुण्यो जद, कण ही कह दियो *नसबन्दीवाळा आया है, जिकां रा गूढा जीनैं हा वै बीनैं ही भाग छूटा,* गवाड़ मे मिनख रो बचियो ही नी रैयो भळे।"

सिनाथ ही कैवू हो, म्हारै मे तो आप इसी ही बीती अबार, पण कंठां ताई ला' र गिटग्यो बात नै पाछो ही। पाणी पी' र कोटवाळ टुरग्यो।

कसिया ले'र दोनू भाई काम मे लागग्या, छोरा खोड़ मे बळध अर रोड़ती बाडा ऊभा हा। परिया लुगायां ही भुरटियो खोरै ही। मा आई, बोली, "लै भई हू तो गाव जाऊ, छोरयां एकली है।"

"आज इत्ती बेगी ही, किया है मूळकी रै ?" सिनाथ पूछ्यो।

"बा तो भई काई ठा चेतरै चढसी का नी, आंख्यां पीळी अर चैरै पर

पून रो अँकार ही नी दोसै, बारह बरसां रौ बेटो है, चुसगो सफाहो। आज मयळी नै भळै चढ्यो ताव। जाऊं संभाळू तो सरी। तूं ?"

"हूं ही आऊ हूं काल तांई, निनाणियो पूरो कर' र।"

"रामदुवारैआळो मैंत बेमार हो रे, दरसण करण नै लोग-बाग आवै-जावै हा ?"

"घणो बेमार है ?"

"सुणी तो है, पछै को ठा नी।"

"तो जद काल नहीं आज ही आऊं, मिलणों जरूरी है बो सू।"

सिनाथ रै मन में एकर हळकी-सी एक चिन्ता उठी, पण पाणी रै बुल-बुलै-सी पाछी ही बैठगी छिण भर में। "आगै री आगै सोचस्या, पैला कजियो मथो।" सोच' र पाछो ही बो आपरै बोपार मे जुटग्यो।

2

दिन भर रो थक्योड़ो अर गूंगी दुनियां रै दादर्थ सूं नाराज हुयोड़ो सूरज, होळै-होळै बादलां रै बिछावणा में वड़' र दीखणों बन्द हुग्यो; जांवतो-जांवतो आपरी नाराजगी जाणूं आपूंणै आभै पर छोडग्यो हुवै, ईं खातर ही वो (आभो) अबार एक लाल झील में डूब्योड़ो-सो लागै हो। हवा बन्द ही अर ऊमस जादा। गाव री रोही में दूर-दूर तांई ऊभा खेत बिरखा री उडीक मे मौन अर उदास हा। आखी रोही पर उतरतो अंधेरो फुरती पर हो। आपरै आळां कांनी उडतो चिड़कल्या री उंतावळ भरी चीं'चाट अर कागलां री कांव-कांव सागै रळ' र हो, गुण-धरम सू न्यारा-न्यारा ही हा। गांव कांनी घिरतै एजड अर बळध-गाडा री कोई-कोई सुरीली टोकरी कानां रै रस्तै चेतना मे उतरती राग री सिस्टी माडै ही, पण, सिनाथ अर सुगनो डांगरां रा कियोडा दो-एक गळता ठीक करण मे लाग्योड़ा हा। वातावरण रै सून नै तोड़तो सुगनो अचाणचको बोल्यो, "भाई

ये गांव जाऊ हा नी, काम नी छोडो अबै ?"

"अरे हा जाणों है नी।"

"बादळवाई रात है, अंधेरो वधै, टुरो अबै जळदी-सी, अैरू-काटै री ख्यांत राख्या।"

"ख्यात तो लाडेसर दीख्यां राखीजै, बिना दीख्या कियां राखीजै अर आपरी ख्यांत सू ही जे कोई जियै तो वैगो-सो मरै कुण ? कोस भर भू है, अवार जा बड़स्यूं। तू मंचली पर नी मो' र डूचै पर ही सोए भलो, छांटा आवै तो तिरपाळ नांख लिए, झूपडी में आडो मत हुए, पान रो डर है— अमूंचौ है नी।"

"ठीक है।"

सिनाथ टुरग्यो। बादळां रै कारण, अंधेरो काजळ-सो गैरीजै हो। भादवा सुदी चौथ ही, चांद तो अकास में हो, पण वीरै थान-मुकाम री सीध अवार नी वंधे ही, पण रस्तो वीरै पगां लाग्योड़ो हो, ईं खातर पग आपरी सैंज आदत में बध्या, मत्तै ही लैणसर चालै हा। पांवडा सौ-सवासैक वो चाल्यो हुसी, भाग-रो एक वळध-गाडियो मिलग्यो टोकरी बाजतो। "कुण हुसी ?" सिनाथ पूछ्यो।

"ओ तो हूं पीथियो नायक, कुण सिनाथ राम ?"

"हां एक तो सागी हूं।"

"आवो, बैठो गाडै पर।"

दोनूं साईना-सा ही हा, सिनाथ बोल्यो, "नही रे, ईं सू तो उपाळो हूं वैगो पूगस्यूं, पाको वळध है, क्यों वापड़ै गळतरै नै मारूं ?"

"अन्धेरो है ओ, ईं खातर कैणो है, करसी तो पाबू राठौड़, वीरी आंख्यां चानणों है पण अघबै ईं पर की निधड़क रैस्यो। आवो बैठो, आपणै किसी उंतावळ है, घड़ी-दो घड़ी मोड़ा ही तो पूगस्यां, इत्ती ही तो बात है।"

वैठग्यो वो। गाडै पर लीलो हो मण, सवा-मण, सिनाथ पूछ्यो, "लीलो घरे ही ले जावै है का वेचै है कीनै ही ?"

"न वेचू अर न घरे ही ले जाऊं।"

"आ किया, हूं नी समझ्यो ?"

"धनजी कनै मूं रिपिया लियोडा है— खेती पेटै पांचसैक, वो तो ब्याज

नी नेवै अर हूं ई रा पइसा।"

"चिट्ठी लिखायोड़ी है ?"

"नी अड़ाणं सटै, लुगावड़ती री टूम मेल राखी है।"

"ब्याज काई मेवै ?"

"च्यार तो समझो ही।"

"च्यार नही पाच समझलै, तो ही पचीस हुया, तू मण-खड तो रोज लावै ही है, जे दो रिपिया वेचै तो ही महीनै रा साठ तो हुवै ही है।"

"की अदार जाऊ जद लगावण-पतावरण घालदै, सर्म-पायक चाय री चिवटी, का, गुड री कांकरी खातर ही नीं नटै। इया'स थे स्याणा हो, साग बैठ' र कोई कोवा थोड़ा ही गिणीजै, मेवै रा रूख है वापड़ा, कदेई काम ही आसी।"

मिनाथ चौड़ै तो खैर की कँयोनी पण मन मे सोचै हो, "आछो मेवै रो रूंख पकड़चो डफोळ, भेड नै कोई समझावै तो ही किया, महीनै मे च्यार रिपिया रो गुड अर दो रिपिया री चाय दे देवतो है लो, पण आ नी समझै कै वढ्यी खरबूजो ही", फेरसोच्यो, "सीदो है ओ तो, लाचारी अरकमजोरी रो फायदो दुनिया उठावती आई है, पण इत्तै सू किसो सरै, धान-चून, घास-पालो, ऐ भी तो ई मेवै रै रूंख नै ही वेचसी, औरा नाव सू अधवै दो पइसा सस्तो ही, ई नै काई ठा कठै जावतो लक लागसी।" बो बोल्यो, "है रे, ई सू तो आछो ही, टूमडी बेच नाखतो।"

"जे सुनार का बाणियै कनै जावतो तो आधं-पूणं मे लेवतो, बो घाटो, दूजै वणाणी म्हारै सू कद लावै आवै, अर जे आवै, तो भळे टाट मे, पाच पइसा चरका ही लागै मनै, अर भळे लुगाई सोरै सास वेचण ही कद दै, सिनाथ-राम, इत्त तरिया कुण करै आपणै ?"

"गरीब उरणियै नै च्यारा कानी मार ही है रे, उडीक लगाए ही राखै छुरी-कतरणीआळा।"

"आ ही बात है, जूण पूरी करण नै आयोड़ा हा, जियां हुसी बियां ही आछी।"

"खेतड़ो किया है ?"

"किया बताऊ, बिरखा हुया तो बारै महीना री घाट बापर ज्यासी,

नही हुयां बोरो पान (चारो) ही नी हुवें।"

इया दुख-सुख री करता, बा गाव रो गोरवो नैंडो ले लियो। छीदी-माडी रोसनी जगें ही गाव मे। सिनाथ बोल्यो, "भाईडा, मनें पछै खासो भूं'र जाणो पड़सी, अठकर की सीध पड़सी," कह'र बो उतरग्यो।

घरे गयो मा पूछ्यो, "मोडो आयोनी रे ?"

"नरसीजीआळो एक गाडियो मिलग्यो हो ए, मोड़ो तो की हुय ही ग्यो।"

सिनाथ कड्डी अर खीचडो जीम, अर बारें निकळग्यो।

मोडो खासो हुग्यो, दस नैंडी हुगी हुयैली, चाद बीसूज्यें नें ताळ हुगी। बादळ वियां ही जाडा-पतळा हुवें हा। ईसान मे रह-रह बीजळी चमकें ही। दस-बारें कोम सू अळगी नहीं हुणी चाईजें। कदे-कदास धीरो-धीरो घररीट कानां मे पड़े हो, अर बीरें सागें-मोरा री पीहू, गाव रें आभें मे गूजें ही। सोच्यो, "बिरखा घर छोड'र टुर तो पडी है, आपणें ही पूगेली आठ-च्यार पौर मे। लैं जोवड़ा, चाला मैंतजी सू तो मिल ही ला, बेमार है जठै बोलारो जरूरी लाधसी, नी लाधसी तो सागी पगा, पाछा ही सही, अधघडी रा टिप्पा ही तो पडसी, पड़ो, आपा सोचस्यां पग मोकळा ही किया", टुरग्यो बो नाक री सीध मे।

गाव रें अगूणें पासें बामण, बाणिया रा घर है, उतराधें पासें जाटो बास न्यारो ही है। आथूणा एक किनारें हरिजना रा घर है साठ-सित्तर नैंडा, घणखरा नायक अर मेघवाळ ही समझो। खासा उरियां बा सू, पाँच-सात कोटडी भोगतां री अर दस बारें गवाड़ी चाकरा री है। आसैं-पासैं बिचाळैं-बिचाळैं नाई, सुथार अर दूजी जाता रूध राखी है। दिखणादी एक कूंट मे कुमार अर दूसरी मे तेली, ढोली अर एक घर कलाळां रो है। साढी-तीनसैं नैंडा घर बसता हुसी ई जीवणसर मे। पक्का घर तो छीदा-माडा साठ-सित्तर ही समझो, इत्ता-सा ही कच्चा-पक्का रळक्टाउ, बाकी सै कच्चा। दो साल हुग्या बीजळी आई नैं—बीस-तीस सरतरियां ले राखी है, पाच-सात जाग्या ठाया-ठाया मोड़ा पर बीजळी रा लोटिया ही चसैं। टको है। पटवारी, देसी दवाखानों, पंचायतघर, मिडिल स्कूल अर डाक री सुविधा है, एक गट्टूडो एक टैम आवें गाव माकर। रिपियें मे साढी-बवधाना लोग

खेती करै अर ओ ही वारै गुजराण रो धन्धो है।

सिनाथ सोच्यो, "थोडी-सी अवळाई पड़ै तो पड़ो, बाणियां रै बास में सूं चालू, मोड पर एक-दो जाग्यां चानणों है।" आधी'क दूर गयो हुसी, गयो कुमार क्यो मिळैनी धंमै रै चानणै---धनजी रै घर सूं कोई पांच-सात पावडा उरिया।

"कुण सिनाथ भाई।" वण निजर मिलतां ही पूछयो।

"हां बोही।"

"अबै ?"

"पटता पूरा करण नै, ठिकाणैसर ही जाऊं कठै ही, तूं कीनै सूं आयो, आ वता ?"

"कांई बताऊं ?"

"मैं तो सुणी, थारै की देवा-लेवी हुसी, थाणो आयो बतावै।"

वण सगळी गाथा गा'र कैयो, "धनजी रै अठै गयो हो, थारै सूं अबै काईं छिपाऊं, भाभी अर लुगावड़ी री टूमा अडाणै मेल'र रिपिया लायो हूं आठसै---बापा नै देवण नै, अर रिपिया सो नैडा म्हारै जीवत-खरच रा समझलै, बांनै गिटा'र काढया है आज।"

"समान ?"

"मेठ री हाट सूं तुलवा'र दियो।"

"जीवत-खरच में म्हांनै तो खैर नहीं सही, घरआळै टीगरां नै तो चखां-बतो की, भाईडा, रस्तो गळत पकड़ लियो, मघालैट कर'र इया ही छोड देसी अर किचरीजसी इसो कोझो, कै दो सारा ही सूखो नी हुवै, कुण सीख दी तनै आ ?"

"सिरैपंच अर गुमान सिंघ।"

"एक खाऊपीर अर दूसरो पियक्कड।"

"काल जाणों है थाणै गवाई हुसी।"

"गवाईआळा तनै किसो मूको छोड़सी, जानी वण'र जासी थारै मार्ग।"

"तो काईं करतो, इयां अै वसण ही नी दै गोला।"

"पछै थारै वारकर किसो पीरो सुरू करदेसी थाणैआळा, छेकड बै

राजीपो ही तो करवासी। बो काम आपां ही कर लेंवता, आपणै कँयै री अघबै की मामळ ही पड़ती अगलै नै।"

सिनाथ बीरै चैरै सामों देख्यो, गैईज्योडो अर एक दुविधा वीं पर हावी हुयोडी ही। "खैर, जा अवार तो, फेर मिलस्यां", कह'र सिनाथ आगीनै टुरग्यो। सोचे हो, "कोई लडो चावै राजीपो करो, धन्नै री चादी है और नी तो जीमण रो समान तो ईंरी हाट सू ही उठै। कीरै ही मरै चावै ब्याव हुवै, काळ पड़ै, जमानो हुवै, चावै बाढ आवै, ई रै पाछणै नीचै तो आणो ही पडै।" *फेर सोच्यो, "मोडै मे मोडो, नी सरचो पाछा हो चाला, दिनूगै वात", भळै* विचार आयो, "वठै किसी बीनण्या बैठी है जिको कावळ मानसी आपांनै देख'र; मोडा हुवंता दो-च्यार का कोई पाळयोडो टुकडैल बैठो मरतो है लो।" इंयां करतो-करतो पूगग्यो रामद्वारै रै बारणै सामो। रामद्वारै री बारली बत्ती जगै ही निमधी-निमधी। बारणै सू कोई तीनेक पावडा उरिया *धोळी धोती पैरधा एक लुगाई, साथै बीरै एक छोरो, पन्दरै-सोळै रै आसै-*पासै, लुगाई रै हाथ में एक गाठड़ी, छोरै कनै एक पेटी—बीरै कनकर अधर-मैं निकळग्या। लुगाई रो मू ढक्योडो हो। बण जा'र बारणै नै धक्को दियो होळै-सी।

"कुण हुई (हुसी), बी बारणै आओ", बीनै सुणीज्यो। ध्यान आयो बी नै, "*अरे मूळ बारणों तो बीनै है, आ बारी तो साधा री सुविधा खातर* है", बो च्यार पावंडा और आगीनै गयो। बरस सित्तरेक रै एक साध बारणो खोल्यो। न बीनै घणों सूझै-भाळै अर न अवार बो दो बरसां सू घणो बारै टुरै फिरै ही, अधमाणस-सो आपरो खोटवों काढै इसो आदमीड़ो। होळै-सी पूछ्यो सिनाथ, "मैंतजी म्हाराज रै किया है, दरसण करतो।"

"बेचेत पड़िया है रामजी रे, आंख ही नी खोलै, घड़ी-आधघडी सू कदेई बोलै, दरहण करण नै आही वेळा मळी थानै, घरे जावो न नींद भेळा हुवोनै।" अर बारणो बन्द हुग्यो।

सिनाथ, घणै उळझाड मे पडनो ठीक नी समझ्यो, सागी पगां ही टुरग्यो पाछो।

पांवडा दो-एक आगीनै जा'र, कांई जची बीरै बो पाछो ही अर आ'र बारणै कनै होळै-सै ऊभग्यो। चौकन्नै हुयै बण सुण्यो, "

हो ?"

"काई ठा हेठा, ओ तो नी पूछियो ।"

"पूछणो चाईजै हो, खैर, एकलपो ही हो काई ?"

"हुणो तो एकळपो ही चाईजै, बीजो लागियो नी कोई ।"

फेर बोलागो बन्द । मिट दो एक ओर ठैर'र वो भळै दुरग्यो पाछो ही । सोपो सागीडो पड्ग्यो हो । गाव रै मांनखै री चेतना-धरती पर सूती गगा बगैही बधीड दैवती । आधा हुयोडा कुत्ता खान्नी लडता सुणीजै हा ।

बीरै आगैकर एक भीत सू कूद'र, एक कुत्ती लारै छव-सात कुतिया मदान्ध; दो-तीन खोडावै, केई घोरका करता बाड रै एक गळतै माकर एक बाखळ मे चड्ग्या, लडता-लड़ता तो आया ही हा, आगै जा'र भळै महाभारत खड़ो कर लियो । की एक नै नीचै नाख'र फफेडता लाग्या । घर-धणी कोई बोलतो सुणीज्यो, "ठैरो थे, रोयन्‌ू थानै, अधघडी ही बाप मत मीचण देया थे", रीसा बळतै एक रै तो लट्ठ री टेकदी दीसै ही, बास रै ऊपरकर बोकै हो बो । एक अध-बूढो अर लाचार कुत्तो, भीत नी चढ सक्यो, घड़ी-घडी कोसीस करै अर पाछो पडै हो । सिनाथ सोचै हो, "काई नांव काढसी बापगो, पण कठ तोडाणा ईनै तो, अबळाई खा'र ही बीनणी रो भूखो आगी बापा करै ही । आ कुरदसिया रै बरस मे दो महीना ही पातो आवै, मिनखाआळै दाई जे पूरो साल मिलै आनै तो अै आखी बसती नै अधर करलै अर आ आप में म्‌ मावतो कोई सुगन लिया ही नी लाधै ।"

वो घरे आ'र चौकी पर पडचै माचै पर उखराडो ही आडो हुग्यो, पण आहरा स वट कठै ? सोचै हो, "लुगाई आ, धनजी री बै'न हुणी चाईजै चादा, बाळ विधवा हुयोडी है, सासरै सू लाई बो अळोतळो भाया करै ही है, हुवैली पैताळीसेक रै अडैगडै, छोरो ई रो ही कोई भतीजो-धतीजो हुणो चाईजै, इसी गूगी थोडी ही है जिको इसै मौकै दूजै नै साथै लावै ही । भोळो, 'ऊमर पच्चो बैल की नाई; भेळो कियो अर रूपाळी राखी सापआळै दाई---स्कूल खातर मागण गया तो ही नी दी, काणी-कोडी ही, 'साध हा म्हे नो', आ कँवर तारो छुडालियो । आपरै रसतै आगै भाठा ही भाठा मेल्या बण तो, अळैवण लै'र आ लम्बी हुई लागो मनै तो । केई दफै देखी है मैं चादा नै रामद्वारे मे । सफेद-झक धोतो, गोहुवो रग, हाथ मे तुळछी

री माळा, साधां री मेवा अर कथा-बारता मे आगै, ठीक बा ही हुणी चाईजै, मूढो ढक्यो हो, भलां ही हुवो, चाल-ढाल थोडी ही छिपै ।" सोउ हो, पण पण मन चंचळ हुग्यो, मैंत कांनी उठग्यो, 'दवाइ देवै अर डोरा-डांडा ही करै, बरस साठेक रो है । आ बरसा मे खासो भारी पडग्यो, डावो हाथ थोडो धूज्या करै । विश्वास आपरै आप रो ही नी करै, चाल्या रो झूमको का तो आप कनै का बाई चादा रै हाथ मे । काछ रो साचो ईं जुग में हुवण री रीत ही किसी, तुळछी री कथ्योडी, 'बहु दाम सवारहि धाम जती' कूडी थोड़ी ही है । रामद्वारै री मायली भींता पर दोहा पर चौपाया मोटै अर मौवणै आखरा मे लिखवा राख्या है, 'सभी रसायन हम करी, नही नाम सम कोय ।''''''राम नाम की लूट है'''''', सुनहु उमा ते लोग अभागी, हरि तजि होइ विष अनुरागी'''। रामद्वारै में ही ऊपर एक कमरो है, पखो बीमे, गछ पर गलीचो, बी पर ढोलियो, काच अर साज सजावट इमी, कै काठ में ही काम बापरै । एक, दो-एक साधु सत ही आवता देखा क्दे-कदेई, एकर एक चेलो राख्यो केई दिन—मारवाड कानी स् आयोडो हो, अट्ठारै-बीस बरस रो हुवैलो, महीनो, सवा-महीनो राख'र विदा कर दियो, और आयो हो एक, बो ही नी सुवायो, इकलखोरियो मरै । काम अर दाम रै लोभी नै दूजो अवखाई कद सुवावै ? मैंतजी री घणखरी रोटी सेठा रै अठै सू ही आवै, साधुडो कोई आयोडो हुवै तो गांव घणो ही वडो है । इमा रामद्वारै मे मरणै, परणै हांती-पोळी वापरती ही रैवै । आपरै मतै, ओ कीनै ही नी चखावै, हांती पड़ी-पडी बूसीजो, का बूफण आवो बी पर, चादा ही भलां ही सलटावो बीनै, वन्दो तो मजाल है हाथ ऊपर करदे, देख्यो है केई दफै । "है जिसो ठीक है", मन कैयो, "आपरा किया आप भोगसी, आपा क्यों कीरो ही मैल निचोवां, छोडो", अर पसवाडो फोर लियो बण, कदास की आंख लागै तो ।

मन किसो मानै, दिस बदळनी चावै हो पण बो फँवग्रोडी टीटण-सो पाछो ही सागण ठोड़ कानी आंवतो सागी तातण ही ढूंढै हो । 'काईंठा हेठा', "ओ हेठां (सेठां), कुण हुणो चाईजै ? जरूर धन्नो का लालचन्द ही हुणो चाईजै, कागद-पत्र का कोई कीमिया चीज भेळी करतो हुसी, चेतो है बीनै की, तो समझतो हुसी बीनै पूछ'र । म्हारो रुक्को हो, पवकायत बो कनै

ही पूगसी। पूगो, आपणी नीयत मे किसी बेईमानी बसै, रिपिया दोय सौ आपानै देणा है, मुश्कल तो आ है कै अबार वै पार कियां पड़सी, दिनूगै आपानै वण दस आदम्यां मे जे कैयो, अबै हूं तो एक दिन ही नी राखूं थारो रुक्को लेजा, अर आपा कैवां, सा, अबार तो नी बणै तो बात फूठरी नी लागै, आपणी, पोजीसन जावै। रोड वेचणी पड़सी, वेच देस्यां ? पण ईण-डोकरी कद-मानसी, मूळ रो खुरखोज ही वै नी जाणै, ठा सार्‌यां रोळो ही है।

पसवाडो भळै फोरयो, विचार और बीनै ही चालू हुयो। समझण री, असली बात आ है कै, "अबार री टैम मे, आप कनै हुवै तो कोरी मदद करदेणी, नहीं हुवै तो उछाळभाठो करम मे नी लेणो, काई अणसरधो जावतो हो आपणै, चिट्ठी मडार रिपिया दूसरै नै दिरावण खातर ?" ईं तर्क नै काट'र मन री एक दूजी धारा सबळ हुगी, "काँई जुल्म कर दियो तैं, गरीब बामण हो, टीबी हुगी, थारो बाळगोटियो हो, छोरी ही परणावण सावै, सास निकळघा सू पाच मिंट पैला बुलालियो तनै, आख्या भरली, होळै-होळै बोल्यो, "घर में तनै ठा ही है। खाफण रो पूर ही मसा पार पड़सी, दो महीना नै छोरी धोरियै चढै तो की सा···" फेर आख्या भरीजगी, बोली बन्द, आसू पडता रैया, देखतो रैयो थारै कानी। एकर हाथ उठा'र छोरी सामो कियो, छोरी खडी ही, बीरी ही आंख्या भरी, बमबसीजै, आसू पडै, इया ही लुगाई। तनै बी वेळा कैणो चाईजै, बो कह दियो तैं, जुबो थोडी ही खेल्यो है। जाट है, धरती रो बेटो है— हळ री आस राख, धरती राजी हुगी तो सै बातां हुसी—इती कायरी क्यो लावै ?"

दूघड चिन्ता मे रात निकळगी, माथो की भारी हो। आख घड़ी, डोढ-घडी ही मुश्कल सू लागी हुसी। कोई-कोई-सो बुझतो तारो रह-रह आभै में टिमटिमावै हो। आख्या खोली तो बीनै आसै-पासै रात रा निरास अर घायल कुत्ता कूकता सुणीज्या। भोर मे राजा कर्ण री वेळा, बारी किरळी बीनै बडो कोझी अर कुसुभ लागी—पांच-सात गिडक तो बीरै फळसै आगै ही लाग्या बीनै। मावे पर सूतै-सूतै ही बा नै एकर दिरकारघा पण वै कद मानै ? छेकड, एक लडकती ले'र उटघो। बो काई दूर तांई काढ'र आयो बानै, दो-एक लुगाया रै मूढै सुणीज्यो बीनै, "मैतजी महाराज तो धाम पधार-ग्या आज, बैंकुटी कढसी।" सिनाथ सोच्यो, "हुई जिकी ईश्वर री मरजी,

बिचलै दिन रा सेठ कनै चालस्यां, भळे वो कदेई तेडो भेज'र बुलावै ईं सूं कांई फायदो, पूछण में किसी दोसा पड़ै ही।

3

मैंतजी रात नै कांई ठा किसी वेळा मरघा अर किया मरघा, आ, का तो भगवान जाणै अर का बी बेळा बा कनै मोजूद हा वे, पण, मैंतजी धाम पधारग्या। 'वैकुंटी देखण चालो,' आ बात सूरज ऊग्यै सू पांच मिट पैलां हीं, गाव री समझदार चेतना मे सगळै फैलगी, नाई सागै बिना कठै ही तेडो करवायां।

सिनाथ न्हा-धो'र, आपरी वेमार काकी सू घर री ही कोई गुरबत करै हो। काको मरचां पछै, वीरै तोळोमासो-तोळोमासो चिणपिण रैवै ही है। सवाढ में एकर, की गड़बड हुई ही वीरै। मोभरो एक छोरो हुयो, अबार वो, सिनाथ साईनो हुतो। महीना ढाई-तीनेक रो हु'र, वो चालतो रैयो। डाकण लेलियो बतावै बीनै। गाव मे एक कुम्भारी हुया करतो, वरस साठेक री ही बी वेळा। ठोडी अर होठां पर वीरै, छीदी अर लम्बी रूवाटी हुया करती। होळी-दियाळी तिवारी लेवण आवती। बीनै आवती देख'र घरां मे लुगाया साल-छव महीना रै टाबरां नै ले'र साळ अर झूपडा मे वडज्यावती। काकी ही बतायो एक दिन कै, "हूं तो, पाणी नै गयोड़ी ही कुवै, थारी मा गावड़ी-टोपड़ियै रो की करै ही लारै। आखाबीज ही, तिवारी नै मरी बळी ही, पालणियै में सूतै छोरै नै देख'र पाछी ही उठगी, छोरै तो बा रात ही नी काढी—टूटयोड़ै फूल-सो, मुरझाईजग्यो दिनूगै नै।"

सिनाथ रै आ बात, बी बेळा की कम ही समझ में आई, कै इयां लुगाई कदेई डाकण हुया करै, टाबर नै देख्यां ही वो चल वसै, इयां तो वा कीनै ही, जीवण ही नी दै, वा तो रोज ही कीनै न कीनै तो देखती ही हुवैली, गाव पछै खालो तो नो हुयो ? वेमारों सू अजाण आदमी इसी ही अणघड़ बातां

करै। काकी नै वण घणो ही खोद'र पूछ्यो, पण वा बीनै समझा नी सकी। वा कुम्भारी जे जीवती हुती तो बीरै जी मे ही कै बीनै पूछतो वो सावळ, पण वा भाग री आगीनै उठगी ससार सू, लारलै बरसां—रोग अर रोटी दोना सू ही दुखी ही बा। पछला डोड-दो वरस आंधापण मे बीत्या बीरा, आपरो खोटवो ही सावळ नी पढतो बी सू। इत्तो ठा सिनाथ नै जरूर लाग्यो कै बीरै पाच-सात, जिता टाबर हुया, बै मै झडग्या एक-एक कर'र। अबार बा गचाडी थे:* हुयोडी पडी है। बात रो निंतार कियां काढू ईरो बीज बीरी चेतना धरती मे दब'र ऊंडो उठग्यो, सुवाव री विरखा नै उडीकै हो बो।

बीरो मामो हा, अबै तो सरीर सान्त हुग्यो बांरो। बीतराग अर एकल विचरणआळा सन्त हा वै। बा नै एक दिन पूछ्यो सिनाथ, डाकण रै बारैमे ! बा कैयो, "डाकण स्यारी की नीं बेटा, डाकण आदमी री निजर ही हुवै, टाबर-टीगर री कमी री एक गैरी भूख जद की लुगाई री आत्मा में उतर'र दोवडीजै, बा ही डाकण वण'र मिनख रै ऊगतै बूटै रो नुवसाण करै—काळै बौपारआळै दाई काळी निजर वजै बा, ई खातर बेटा, न आपरी आस्थां साकडी राखणी कदेई, अर बस पडता न आपरी मुट्ठी ही। ई रो परणाम खोटो हुवै—साधु हुवो चावै घरबारी—सगळा नै।" मन अर हाथ री उदारता रो ओ बीज, जाणू बी दिन सू ही, सिनाथ री चेतना मे ऊग'र ऊंचो आणो सुरू हुग्यो हो।

बोवा रो दूध नाड़ां मे भरै तो बो सरीर नै दूबळो कर'र बाई ठा किसो रोग पैदा करदे, ई खातर काकी रा बोवा सिनाथ चूंघतो, अर आपरी मा रा हीं। साल मैंडा, चूंध्या हुसी। बो काकी पर मा रो सो हक समझै अर काकी बीनै आपरो मोभी बेटो ही थरप राख्यो है। अबार दो-तीन दिन सू ताव आवै है काकी नै मलेरिया। बो बोल्यो, "निनाण तो कर लियो काकी, अबै तो जच'र विरखा हुजावै तो पोबारा पच्चीस है।"

"लादेसर, कोठी मे ला'र घालदां जद जाणीजै, खाली विरखा सू ही कांई हुवै, झोला नही बाजै, पून मे सुवाव हुवै, घणी बाता चाईजै—नाथजी

---

* झड़हुर

केंवता, "खड़ी खेती देख कर, मत गरभै किरसाण, (ओजू) किताक झोला वाजसी, घर आवै तव जाण।"

इत्तै नै बीरै काना मे अवाज पडी सख री, वा झट ऊभी हुगी।

"क्यो काईं हुयो ?"

"बैकुंटी आवै दीसै, संख नी सुणीज्यो तनै, दरसण तो कर लू।"

"लै हाथ झाल लू, पड़ैली कठै ही ?"

"नही रे, पेवटी सू एक खोपरै री डोडी काढ'र लाए देखा", कह'र बा होळै-होळै फळसै आगै जा'र ऊभगी। सिनाथ ही आयग्यो, काकी नै खोपरो झला दियो। हरिकीर्तन, ढोलक, जीझ, झालर अर सख री भेळी अवाजा सूं, रामदास जी म्हाराज री जै'सू गाव रो आभो रह-रह गूजै हो। जुलूस सुरु हुग्यो, भीड़ तर-तर वधै ही। बो ही गळी रै एक नुक्कड़ पर जा'र ऊभग्यो।

वैकुंटी वडी जोरदार सजायोड़ी। च्यार आदम्यां ऊचा राखी ही। मुकटो मे मैंतजी वैठा हा। नुवा कपडा, बढिया मलमल रो भगवों साफो, मलमल रो चोळो, आपरो सागी चश्मो लगायोडो, लिलाड मे केसर रो गोळ टीको, ऊनी आसण पर बिराजमान, हाथ मे नव मिणिया रो तुळछी रो एक मोरखो, लारै सीताराम जी रो एक किलैण्डर। आगै एक गीताप्रेस री गुटका रामायण टिगटी पर जचायोडी अर धूपदानी मे अगरवत्त्या चेतन हुयोड़ी; वातावरण नै सुगन्धित करै ही। लकड़ी रो एक लम्बो हत्यो-सो ठोडी नीचे दियोड़ो, डिगै नही म्हाराज ईं जावतै सारू। लारै लुगाया, छोरा-छीपरा अर आगै पचासू आदमी, पाच-पाच, सात-सात मिंट वाद कूद'र काधो वदळै लोग—बो बीसू आगै अर वो बीसू।

बूढी अर घर मे मारै-वारैआळी, घरा मू वारै आ-आ दरसण करै, केई डागळा पर खडी, केई वीनण्या वाडा पर काणै गूवटा मे ऊभी अर गांव री वेट्या भीड में रळ कीर्तन करै। घणां ही लोग, नारेळ, खोपरा अर पतासा चढावै हा। धनजी कदे-कदेई रेजगी उछाळै हा मुट्ठी भर'र। नायक-मेघवाळ, सैंसी अर अणसमझ टाबर चुगै हा। लुगायां वात करती सुणीजै ही, "वाई अै तो जीवतां सू ही आछा लागै, इसा तो जीवता ही नी औै हा।"

सिनाथ री दिस्टी मैंतजी कानी गई, जी भर'र दो मिट देख्यो बण मैंतजी री लास नै, फेर लुगायां कांनी। एक लुगाई लीडर हुयोड़ी आगै को बोलै अर फेर पाच मिट ठैर'र 'रामदासजी म्हाराज री ?' 'जैं' सगळी भीड़ बोलती। देखता ही बण झट ओळखली, हा, रातआळी ही आ लुगाई है चांदा वाई। जुलूस बधै हो आगीनै—निकळग्यो अळगो, सिनाथ बठै ही खड़ो रैयो काई ताळ, मन मथीजणो सुरू हुयो माथो भरीजग्यो विचारा सूं।

किसोक सजायो है ई नै, जीवतै सू दो चन्दा बेसी, पण साव झूठो। लास रै चश्मो लगायो है, काईं देखू है अबै ओ, देखणआळै दिनां मे ही नी देख्यो अण, जवानी मे पग राखता ही चश्मो अण डाभर-रगो लगा लियो हो, मोटै-मोटै आखरा मे च्यारागळ छैडै सामो लिख्योड़ो, आपरै कमरै री भीता पर 'रामनाम की लूट है'''अण सायत ही कदेई बाच्यो हुवै, सेवा री सुख अर नाम री राति लूटण नै आमीडो, काम अर दाम रै डोका सू कूटीज लूटीजग्यो, बो ही भले रामद्वारै मे। ढाल अर तरवार कमर मे लटकती ही रही, लपोड़ मे कसर है—बीरी आ लास, गूगी दुनिया ढोया फिरै सजा'र।

मैं रक्को कियो ईं नै दोयसै रिपिया रो, भलै आदमी नैं कैयो, "मैंतजी बी गरीबणी कनै टंक रा दाणा ही निठ बापरै, पइसा हू भरस्यू आपनै, ब्याज री की मैर करो।" बोल्यो, "सिनाथ औरां कनै सू च्यार अर पाच तांई लेऊ, थारै सू दो रिपिया सईकडो।" हूं काई बोलै हो, सोचै हो, "कांई ईंरै लारै नान्हड़िया रोवै, मद्यो है इत्तो ही नी समझै और मदद कुवै मे पड़ो, च्यार रिपिया ब्याज रा ही नी छोड़ सकै। रोस तो एकर इसो आई, औळाथ री दो देपूं। बो कुमाणस री लास कानी झाकण नैं ही जी नी करै।" फेर सोच्यो, "लास तो मान अपमान सू ऊंची अर रागातीत है, ईं सू इसको ही किसो ?"

फेर बीनै नथली दरोगी याद आई—बीस साल तांई रामद्वारै नैं झाड-कायो, ऐठा बासण माज्या, कपड़ा धोया, ऊबरयोडो कोई टुकडो कदेई भला ही खालियो हुवै—दिन भर राम-राम करती, हस'र बोलती, मैत री असली चेतना तो बीमे ही। ओरियो हो कच्चो-सो, पड़ग्यो की बिरखा मे, बोली, "गुरू म्हाराज आटो ही कठै रा ब्रू, कुत्ता-बिल्ला नी छोड़ै, की मैर करो।" गुरू म्हाराज फरमायो, "खींपा नाख'र च्यार लोया लापसी दे नांख, ऊपर थोडो तळाई री मुरड छोदो-छोदो बुरका'र पांच साल दर्फ छिड़कलै, चिपज्यासी

खीपां रैं, केई वरस नी ऊतरैं, पक्को करा'र तनैं कित्ता वरस रैणो है"; हां, वीनैं तो किता वरस रैंणो है, आपरो तो पट्टो लिखायोड़ी हैं, हजार वरस रो। वण वापडो चांदा वाई नैं अरज करी, पण काळी भळी न कोडाळी, वा चेली तो ईंरी ही। दरोगण मरगी, हुती तो देखती कै पक्कै अर पत्थर लगायैं रामद्वारैं रो मैंत गयो—ढोलियो अर बीजळी छोड'र कित्तै ही गधा रो भार ले'र सिर पर, पण हयाळी साव खाली। दरोगण तो पाच-सात साल आपरैं ओरियैं में काढदिया हंसती-मुळकती, अर एक दिन मिंटां मे गई घोड़ियो कुदा'र, अधघड़ी ही दोरो कुण हुवै वीरैं।

एक नायण आई डोढ-दो महीना रही ईं कनैं, फिर-फिर जीमती घरां मे। पुराणैं दिना सू आवजाव वताईजैं हो वीरो। एकर खासो अळोतळो ले'र बिदा हुई। एक सोनारी रो ही ससकार हो, तीन साल पैला ही तो मरी है वा।

कोढियैं रो दाणों ठाकुरद्वारैं वाळन नैं चढै, दो साल पैलां अगरू वाणियों वीस भरी रा मटरिया ले'र गयो—पाच हजार रिपिया लिया तीन रिपिया सइकडै मे। ब्याज चढग्यो तीन महीना रो, वीनैं वुलायो, गयो बो, साथैं दो आपरा भाएला-पापेला ले'र, हू बठै ही तो हो बी बेळा। वाणियैं कैयो, "आपरा रिपिया लेवो-सा, सैं-ब्याज, मनैं म्हारी चीज सभळावो।" मैंतजी मटरिया ला'र धर दिया, एक कोथळियैं मे बन्ध्योडा। बाणियैं निजर गडो'र सावळ देख्या वानैं, वोल्यो, "हूं कांई करूं आंरो, मनैं तो म्हारा चाईजैं।" मोडै रो मू धोळो हुग्यो, वोल्यो "क्यो ?"

"क्यों रो मनैं कांई ठा, थारैं सैंस आवैं, काई ठा कोरा है ? पराई जिनस म्हारैं कांई काम री ?"

"नही भई थारा ही है अैं, हू कूड़ थोड़ो ही वोलू ?"

"थे नही वोलो, तो म्हाराज कूड़ बोलण री मनैं ही सौगन है, है तो थारैं अठै ही, देखो, दे'र भूलग्या हो तो चेतैं करो", कह'र बो खडो हुग्यो, उठतो-उठतो, आ और कही, 'वैं है म्हारी बाई रा, वा जासी काल सासरैं, मोघण री ताकीदी किया।' मैंतजी रो काळजो ऊचो चढग्यो। सुनार नैं वुला'र दिखाया वैं, वण कैयो, "अैं तो आठ दस रिपिया रा है—पालिस कियोड़ो पीतळ है।" मैंतजी रो साम तो नी निकळचो, वाकी को नी रैंयो।

आज री घड़ी काल रो दिन मोडो कूक'र रैयग्यो माय रो मांय।

दवाई देवण जावतो कठै ही, फीस पैलां। मुरू-मुरू मे रिपियो पछै दो कर दिया। घर में पग देवता ही बेमार मरग्यो तो ही फीस नीं छोडतो। पण, धन फीसा सू भेळो नी हुयो, वो हुयो डोरा-डांडां सू। कूख बन्द करण रा नुसखा हा पेटेंट, विधवावां पूगती लुकी-छिपी—नायण, सुथारी अर सुनारी और केई वेस्या ही दलालण। वा कनै सू आवता पइसा माय रा माय। इयां ही कोरी ही कूख खोलण नै देवतो डोरो, धूड़ मे लट्ठ लाग्या खुलगी की री ही तो चादी, सालो-साल सेवा अर चढापो। नहीं खुली तो पइसै रै डोरै रा पच्चीस तो सामा ही दीखै हा। केई गरीबां रा खेत बिकवा दिया, आधै पइसा मे, केया रो धन (गाय, भैंस, एवड़, औठारू)।

सिनाथ नै रह-रह अचूम्भो आवै हो, देखो अण चौपाया लिख राखी है ईं ढग री—'सुनहु उमा ते लोग अभागी, हरि तजि होहिं विषय अनुरागी', अर ईं-सो अभागो धरती पर भळे कुण हुसी, पगां लाग्योड़ी नी देखी, डूगर कानी आख्या फाड़ै। ईं कुमाणस री लास रै लारै सीताराम जी रो किलैंडर ईं रै सिर कानी अबै हाथ कियोड़ो, जीवता माळा अघघडी ही कदेई निठ फेरी हुवैली, अबार मरयोड़ै रै हाथ मे मोरखो, अर आगै रामायण। ठगोरां री लीला रचना देख'र, बीनै एक चढै अर एक उतरै ही। बूकिया रै चनण, छाती अर सूडी कनै चनण री गैरी आंगळयां, जरूर वी भागण री आगळया मडी हुसी बठै—तुळसीदास इयां बणता हुसी अर भगवान राम रो अभै हाथ इयां ही धरीजतो हुसी ईं बणायोड़ै मुरदै रामदास जी पर, इत्तै सू कांई हुयो है बाळतां घी, चनण अर खोपरा काई ठा किता बाईजसी, फेर समाधि रो चौकियो अर बी पर पगलिया, जल्म, मरण-तिथि अर बडाई रा उघड़ता ऊजळा आव—ईं नै एक इतियास रो सन्त बणा'र छोडसी—कादै रा कीड़ा।

भडारो हुसी, भेंटा चडसी आयोडै मैंता रै, चादर ओढसी कोई, अण ही ओढी हुसी कदेई, किसीक फूटरी साभ'र राखी है ? ईं री ही गिद्दी पर बैठ्योड़ो, ईं रो बाप ही नीसरसी कोई— ठाकुरजी ओढा'र भेजी बो चादर नै घुड़धाणी राय छाणी कर'र छोडसी। काम अर दाम री मैलबाई सू सूगली कियोड़ी चादर लें'र बाप कनै जावणजोगो ही नी हुवै, लास पर

लट्टू हुयोड़ी दुनियां नैं कुण समझावै, लास ढोवण सूं ही राजी है वा। छोड़ो, ई गई गाथा नैं, कांई छेड़ो है ई री। झुझला'र वो उठ खडो हुयो, दोपारै-सी चालणो है आपांनै धन्नै सेठ रे।"

दस साढी दस हुई हुसी, जीम'र जियां ही छेटै हुयो, टीकू सुनार क्यों आवैनी। वोली रो मीठो अर सभाव रो की मजाकियो है। लोग वींनै गांव रो नारद कैया करै। गवाड़ गळी री खवरां रै मोटै काकरा सू लगा'र घरां मायली महीन सू महीन खवरा रा रावडिया वीरो जाणकारी री चालणी सू रोज निकळै। ओ सुख है वीरो, वेचै भावोभाव है—मुनाफो नी चावै। ई रो साईड-बिजनैस है ओ, मन नैं खुराक देवण, पेट नै तो रोटी कमा'र ही घालै। वरस तीमेक रो है।

"आव टीकू", सिनाथ वोल्यो।

"आयोनी, दिनूगै सुणी कै रात आया थे।"

"सुणा, गाव री कोई वात।"

"वात ही है म्हारै कनै तो, और हूं किसी भागवत वाच जाणू? आज तो एक इसी सुणी है कै, सुण'र म्हारा तो कान पूस'र हाथ मे आयग्या।"

"इसी कोई है, की सीघ तो मनै ही कर।"

"नव वजीआळी वस मे आया दीसै, दो साधुडा है जवान-सा, एक लुगाई है अधेड़सी, छोरो है वरस वारै-तेरैक रो वो सागै। आं सागै राम-द्वारै हूं हो जा लियो। लुगाई मनै था नायण लागी, जिकी अठै आयोड़ी है आगै एक-दो दफै। म्हारै सू नी रहीज्यो पूछै विना, "थे तो वाईसा, रामजी रै आसरै अठै आयोड़ा हो नी पैलां कदेई ?" वा वोली, "हा।"

"राम आसरै देखो, भाग री वात, थोड़ी-सी कसर रेई, मैंतजी सू मुलाकात नी हुई।"

"ठा की मोडो ही लाग्यो, जोग री वात है ओ!"

"राम आसरै कागद नी पूग्यो हुसी ?"

"कागद कुण देवतो, मनै तो गांव रै ही एक जणै वैवतै सीध करी, कागद क्यों नी दियो, ई री ही मनै ठा है, पाटवी चेली जे चीजां तो ई नैं बीनै करदी है, तो हूं देखलेस्यू वीनै, तीव-तीव रो मनै ठा है, म्हारो ही नाव पैमा है, घणा पापड पोया है मैं, नास्यां मे सू नही कढाय लू तो म्हारो नांव

फोर देया।"

"राम आसरै बाईसा, अठै घणी देख-रेख तो चादा बाई री समझो।"

"हा, हां म्हारै सू किसी छानी है चांदा बाई थारी, मोड़ी बणी गंगा री गोदावरी, छानो म्हारै सू सेठ ही नी है।"

हूं दो मिट ताई बीरै चैरै कानी देखतो रैयो, आंख्या अर होठां पर जाणै लिख्योडो हुवै, 'पैलै लम्बर री गाथ अर रमार।' मैं टोरी बात नैं भळे, "तो राम आसरै बाईसा, गादी तो थारो कोई चेतो वैटसी, मालमत्ता री छाण-बीण तो बो ही करसी।"

थोडी जोस मे आ'र बोली, "गादी बैठसी, देख्या भगतजी ओ", बी छोरै पर हाथ राख'र कैयो।

"राम आसरै ओ किया बाईसा ?"

"थारो ही है ओ, अर हू थारै घर सू हू।"

"राम आसरै बैं तो सन्त हा नी बाईसा ?"

"घरबारी किसा सन्त नी हुवै, बैद हा वै तो, कमावता अर भजन करता, कमाणों खोटो काम थोडो ही है ?"

"राम आसरै बाईसा, थां आप ही तो अठै आ'र चादर ओढी ही, राम सरूप जी री—पैंतीस चाळीस बरस पैलां।

"वैं आरा काका लागता।"

"तो राम आसरै ओ एक ही डावडको हुयो आंरै ?"

"छोरी एक और हैं, वा परणायोडी है—नागोर, मूडवै, छोरी अर जवाई दो-च्यार दिना में ढूकणआळा है।"

"राम आसरै और टावर बांरै नी हुया ?"

"दस-इग्यारै साल हुया वा आपरी विरति बदळली ही, जगत सू वैराग हुग्यो हो बानै।"

"तो राम आसरै बाईसा, ओ डावडको ही चादर ओढ'र आगै जावतो घर बसा लेसी तो ?"

"ई रो तो ओ जाणै, पैला ही काई ठा, जोग नही पळसी अगलै सू तो ओई की न की करसी ही। घर वसाणो पाप थोड़ो ही है ?"

"राम आसरै जे ई नैं चादर नही ओढाईजी तो बाईसा ?"

"तो हूं अठै भूख हडताल कर'र देह त्याग देस्यू पण नी ओढावै, कीरी मा इसी सूंठ खाई है ?"

"राम आसरै बाईसा, लखदाद है आपरै मात-पिता नै अर मालक मैत-जी नै, आपरो दिढ नैंचो देख'र आप पर म्हारी बडी सरधा हुगो, आपरै पगां री रज हू सिर पर राखणी चाऊं—म्हारो बस पडता हू आपरी मदद पूरी करस्यूं।" बा बड़ी राजी हुई, एक हळकी मुस्कान बीरै होठा पर खेल'र, अधमिंट मे पाछी ही विलाईजगी।

"तै तो टीकू, थाणैदार नै ही मात करदिया ब्यान लेवण मे, वै दो साधु नी हा बठै", सिनाथ पूछ्यो।

"हा क्योंनी, सुणै हा म्हारी बाता ध्यान सू अर रह-रह देखै हा—म्हारै मूंढै सामा। सोचता हुवैला कै गांव में सायत सगळा सूं मातबर आदमी ओ ही हुवैलो। हूं खडो हुग्यो एक जणो म्हारै लार रो लार बारै आयो, बोल्यो, "भगतां चादर रा असली अधिकारी माय बैठा बै सन्त है, हूं तो साथै आयो हू, आ रांड है ठगोरी, पैला हीं अठै सू कदेई दो च्यार हजार रो डेरो लें'र लम्बी हुई, जिकै री आज पाछी पधारी है, इया कर-करा'र आ भळै की झाडो देउ है। आज ताई धणखरी धार अण रामदासजी जिसै काछ रै रोग्या नै ही दी हैं।" मैं कैयो, "राम आसरै आप ठीक फरमायो सन्ता", अर हूं टुरग्यो घर कांनी।"

"तो टीकू ईं रो मुतळब है, ओ खाटो रेत मे रळसी दीसै।"

"सगळो नही तो, लक्खण देखतां, नारळी, दो नारळी तो जरूर ही।"

"रळन दै, ईं रामद्वारै रो पाड्यो, इसै ही पुळ मे लाग्योडो है।"

टीकू बोल्यो, "थे पाड्यै री बात करी जद एक बात याद आयगी मनै।"

"काई, कह नाख बा क्यों चूकै ?"

"म्हारो दादो कैया करता, ईं रामदास रो दादा-गुरु बडो टोटकैवाज अर इन्द्रजाळी हो। पैलापैल वो ही आयो हो अठै। जवान-सी एक चौधरण आया करती कदे-कदेई रामद्वारै। रूप-रंग री भलेरी, सरळ अर सतोमत-वाळी लुगाई ही। एक दिन मोडै रो मन सागो नी रैयो, दरसण कर'र पाछी जावै ही, बावै बीनै एक पतासो दियो, बोल्यो, "रामजी आसरै परसाद है

लेलिए घरे जा'र, आधै रो तन्दूरो रामदेजी बजावै पतासो भाग रो थळी पर पड़'र फूटग्यो। चौधरण सोच्यो, पतासो तो घणो ही परसाद रो है, पण पगा मे आयोड़ो किया खाऊ, इण सैं भोरा भेळा कर'र भैंस रे चाटै मे नांख दिया। भैंस सिझ्या जिया ही चाटो खायो अर रिड़कणी सुरु हुगी। चौधरी आयो वण देखी भैंस नैं रिड़कती समझ मे नी आई बात। सुवावडी भैंस है, पाळै मे आवण रो तो सवाल ही कठै ? की दियो लियो भैंस नैं तो ही बा तो बिया ही करै। वण खोलदी वीनैं खूटै सू एकर, कदास थमै तो, पण, खोलता ही बा तो दौड़ी अर जा'र रामद्वारै री साळ आगै ऊभगी। किया ही पाछी लायो वो वीनैं, लारीनैं घाल'र किवाड़ी ओढाळदी पाछी ही, पण बा तो भळै बिया ही करै, ताफड़ा तोडै। जाट स्याणो हो, समझ-ग्यो की न की दाळ मे काळो जरूर है। घर मे पूछ्यो, "भैंस नैं काई दियो आज तैं ?"

लुगाई बोली, "दियो काई हो, चाटो दियो हो।"

"सागै और की तो को दियो हो नी ?"

"नही तो", चौधरण बोली। "अरे की दियो हुसी, सावळ चेतै कर", जाट जोर दे'र कैयो। वा बोली, "एक फूटयोड़ै पतासै रा भोरा तो दिया ही हा।" "पतासो कठै सू आयो", जाट भळै पूछ्यो। वा बोली, "माळआळै बावै दियो मनैं कै खालिए तू, बो म्हारै हाथ सू पड़'र फूटग्यो, मैं उठा'र बाटै मे नाख दियो।" चौधरी समझग्यो, वण भळै खोलदी भैंस नैं, अर भैंस भळै सीधी ही साळ आगै जा ऊभी। चौधरी बावै नैं हेलो कियो, "सन्ता बारै पधारो।" मोडो माय सूतो ही बोल्यो, "कुण हुसी ?" चौधरी कैयो 'वीन-पीसा ऊभा है बारै, माय आवण नैं सिर फोडै, आ'र वैगी वधारो ई नैं।" बावो बारै आयो, चौधरी बूकियो झाल'र की मचकायो अर की चिमटायो। बोल्यो, "इया पतासा बांटता किताक दिन हुग्या ?" मोडो पगा पड़ग्यो, बो बोल्यो, "गौरी गाय हूं, मैं भैंस रै की नी कियो, पण ला झाडो घाल दू।" भैंस सावळ हुगी जद बो ले'र घरे आयग्यो। बावै छोड दियो, बी दिन सू पतासो देणो अर चौधरण छोड दियो रामद्वारै जाणो।"

सिनाथ सुणै हो, टीकू री बात, कोई टाबर, नानी री बात सुणतो हुवै ज्य। बोल्यो, "भाईडा आ तो साव गोडां पर घडघोड़ी-सी लागै।"

"हुवेली, मैं तो दादै कनै सू सुणी, अर वै कूड क्यों बोलै हा, मैं तो भावोभाव वेची है, खाद रो मुनाफो ही नी कमायो ।"

"बात खैर किसी ही हुवो, वासना रो दास, धाप'र माडो हुवै है अर जिकै में भळे साधु रो बानो, पण टीकू, पाणी मे पग (खोज) परखणियां सू सोनो अर रोल्ड-गोल्ड छाना नी रह सकै।"

"ठीक है थारो कैणो, पण मनै अबै हुवै देर, पेट नै भाड़ो देणो है—कूकरिया लडै है।"

"तो जा", टीकू टुरग्यो अर सिनाथ दो [illegible] आडो हुग्यो ।

"सिनाथ ?" मा बोली ।

"बोल ।"

"हजारीमल सू अजवाण मंगाई ही रे, रिपिये री, खुणचे'क मसा हुवैली । है जिको चोखो, पण, हुवै वा की ढगसर तो हुवैनी, देख तो सरी कोरी खात है पळटा'र ला, का आपणो रिपियो पाछो लिया ।"

"मावळ मिलै तो धनजी रै अठै सू लायदू ?"

"न्याल करसो, कांकरी कर'र देऊ बीनणी नै थोडी ।"

सिनाथ अजवाण नै हाथ मे ले'र देखी, सूघी की अर पुड़ीकै रा पाछा ही घड़ बन्द कर दिया हा जियां ही ।

"ई नै तो मा कोई धरम री ही नी लै", कैवतो वो टुरग्यो ।

की आगै जा'र राजू मेघवाळ अर बीरी छोरी बरस चवधै-पन्द्रैक री साथै हुग्या । सिनाथ पूछ्यो, "कोटवाळ कीनै दौरो कर लियो ?"

"माईता हजारीमलजी रै जाऊ ।"

"क्यों ?"

"छोरी दो खारिया ठूंठिया लेजा'र नांख्या, म॰॰ सू च्यार ठूंठिया बेसी

ही हुणा चाईजै, अच्छेरेक ओ गुड दियो है काळियो अर आख्यां में घालै जिती आ चाय री पुड़ी—एक आदमी री ही नी बणै सावळ, कूड़ बोलूं, तो देखो थे", कह'र वण चाय अर गुड दोनू ही सिनाथ सामां कर दिया। सिनाथ बोल्यो, "हू ही अठै ही चालू, आपां बात करां सेठ सूं, भई ईयां कंठ-बन्दी किया तो जीणो ही नी हुवै।"

ई गळी में च्यार घर है, च्यारू ही ओसवाळ है। गळी कादै सूं भरी है, किचाण आवै। कादै में हरै, मूंगै पोतड़िया री पाणी, खखारा, कागदा रा टूकड़ा अर कठै-कठै ही कुत्तां रो मळ-मूत—निकळतै आदमी री आंख्या उघाड़न नै हीं जी नी करै।

"राजू सावळ आए, पग भरीजैलो, का, कादै में पड़ैलो कठै ही उथळी-ज'र।"

बो बोल्यो, "घरां में माईतो, नळ कांई लागग्या, कादो ही कादो हुग्यो केई जाग्या तो।"

सिनाथ बोल्यो, "आ लोगा धर्म रो जाबतो तो इसो कर राख्यो है कै मूं री बाफ सूं ही जी नी मरण दै, अर ई कादै में अणगिण माछर अर लट्टा किलबिलै, इत्तो कादो नही करै तो काई बिगड़ै आंरो, पण जागतां नै किया जगाईजै ? दो माथा हुवै बो मोरचाबन्दी करे आं सागै।"

"रात बिरात तो माईतां, अठकर चालणो ही पाप है, पण मोटै मिनखा नै कैवता ही तो सका अर नही कैवां तो निभाव मुश्कल, पग जावै-परो गारै में तो कोई लोटो पाणी ही नी नांखै, भला ही गळो फाड़ धापो।"

"गळो क्यो फाड़ै, रेत मसळतो पगां रै।"

"पण माईता ई गळी में तो सूकी रेत ही हाथ आणी ओखी है।"

"आ ही साची कैई तै," अर बातां-बातां मे हाट आयगी। सेठ बरा-मदै रै एक खूणै में बैठा है। ऊनी आसण अर कनै छोटो-सो एक ओघो-पड्यो है, आगै एक रेत-घड़ी मेल राखी है। मूंढै पर मूमती अर डील अघ-उघाड़ो। बरामदै री बिचली ही उतराधै पासै एक कळचक्की है। छोटी जात घणखरी, गांव री हुवो चावै बारली, दाणा अठै सूं ही लेवै अर कनै रा कनै, अठै ही पीसणा नाखदै, चौमासै में तो रिपियै में साढी पन्द्राना

गाव अठै ही डूकै। घरां री चाक्यां च्यार महीनां उबास्यां ही लेवै अर लुगायां घणखरी, एकर की सास सोरो। किरकिर तो खैर कदेई खाणी पड़ै, खाटी अर बासी री परवा ही अबार कोनै है, केसर-सी पीळी दियोडी बाजरी रो रोटी सांवळी हुवै तो हुवो, देसी दड़ासी सरबती अठै आवतां ही कल्याण बणै तो बणो, सोरो सास लेवण मे अै वातां तो हुसी। वरामदै रै डावै पासै एक आदमी मावै जिती दरजी री दूकान है। अै दोनू ही सेठां री घरू है। चक्की पर आपरो पोतो बैठै अर दरजी री दूकान रो भाडो आवै—सागै घर रै पूरां रो खोटवो मुफ्त मे।

सिनाथ अर राजू दूकान में बडग्या। सेठ रो बेटो नथमल अर एक पोतो वरस पन्द्रैक रो तोला-जोखै मे लाग्योडा हा। दूकान रो एक बारणो खुलै लारै आंवण-जांवण नै। पिछोकडो खासो लम्बो-चोडो है। खिड़क है लोह री—ट्रक आवै जित्ती। अबार बारणो खुलो ही है। सिनाथ बीनै गौर सू देखै है। लकड्यां अर ठूठिया रो एक लूठो ढिग लाग्योड़ो हो—बी क्नै हीं दूजो और सुरू हुवै हो। एक पसवाड़ै एक तुळ लाग्योड़ी दीसै ही। पालणै मे केई बाट अर केई भाठा धर राख्या हा। आठ-दस लुगाया बैठी ही—खाली खारिया लिया, ठूठिया तोल्या है अबार ही बां—पइसां नै उडीकै है—फेर कोई सोदो ले'सी दूकान सू।

नथमल बोल्यो, "आवो सिनाथराम, आणों कियां कांई हुयो ?"

"आयग्यो इंयां ही, खास बात की नी, पैलां लुगाया नै सल्टावो थे, आपा पछै करता रैस्यां।"

लुगायां नायक अर मेघवाळां रै धर री ही। दो-एक बां पेट-सूई दीसी। पैलां दो-च्यार मिंट ऊभी रही, फेर एक पसवाड़ै बैठगी। ठूठिया दो, पूणी-दो रिपियां मण तोल्या है—आं अठै। घर रो वडो छोटो कोई, खोद'र भेळा करदै रोही मे एक जाग्यां, अै फेर आप आपरै बूथै सारू खारिया पर बड़ी चतराई सूं चिण'र—डोढ-दो कोस भू अठै आवै। माय-माय केई लुगायां तो तीस-तीस कीलो सू वेसी ऊच'र लावै। एक-एक घर मे दो-दो, तीन-तीन लावणआळी हुवै तो आटै रा पइसा रसोरा अर सावळ हुवै। कोटवाळा री, परणीपाती एक छोरी बोली, "सेठां, हेमै भाई री वहू उंतावळ करै, छोरो नान्हो है, एकलो ही छोड'र आई है, जा'र चुघाणो

है।

नथमल बोल्यो, "सबूरी राखो, इया कठै ही भाग'र थोड़ा ही जावा।"

दूसरी एक बोली, "थोडो-सो मिरावणो कर'र घर छोड्यो हो सूरज ऊग्या सू पैला, सीधो (रसोई) तो आ'र अबै करस्यू, बाजरी लेणी ही मनै तो, पण, अबै नेग्योडी कद तो पीसीजी अर कद वा पोईजी, आटो लेस्यू कळचक्की सू।"

छोरी बोली, "आटै मे केई दफै कोरी किरकिर आवै, चाब'र लिए भाभी, घरे दो लप दाळ हुवै तो खीचड़ो ही ऊर लिए, नेग्योड़ै आटै नै पाछो कुण लेवैलो।"

छोरी री बात स् ठा लागै हो कै आ कडवी चोट वी सागै कदेई घट-चोडी है।

एक और बोली, "नथमलजी, रात रो कुड़छी दो-एक दळियो नांख्यो पेट मे, वा पाण तो रोही पूगी जिते उतरगी, अबै तो काया पड़ै है मरती री।"

"ओज् तो मै ही की को लियोनी, चाय छोड'र, बापूजी रै तो तेलो है, कठै तो थानै ही देख।"

सिनाथ पूछ्यो, "तीन दिन को जीमैनी के ?"

"खाली पाको पाणी पी'सी।"

"थारलो काम तकडबन्द है।"

कोटवाळ बोल्यो, "रोटी तो नथमलजी, काम मागै, वा पेट मे नही हुवै तो काम ही नी हुवै, अर काम नही हुवै जद अरोगा कांई ?"

जवान-सी एक लुगाई बोली, "बेलो-तेलो म्है ही घणा ही करता पण छोरा नै चुघावा कार्दै, आतां मे को हुवै जद ही तो धार बापरै—ठूठ मे थोडी निवळै बा।"

एक और बोली—"मरता सू कितांक दिन ठूठिया खुदै, खोद'र बताथो देखा।"

नथमल बोल्यो, "तो धर्म इंया सौरै सास थोड़ो ही पळै ?"

सिनाथ आंरी बात ध्यान सू सुणै हो। बीरी नास्या सू, कादै री वास

ओजूं, सावळ नी निकळी, वो बोल्यो, "सोरै सास तो कादो हुवै, लक्कड़-फाड़ मेनत नी हुवै, धर्म किसै मे पळै अर किसै मे नही, म्हारै की समझ मे आई नी ?"

"धर्म खाडै री धार है ओ, हरेक रै वस री थोडी ही है ?" नथमल कैयो।

सिनाथ वोल्यो, "सेठा ठूठिया अै खोदै, जीव तो की न की मरता ही है ना।"

"हां, ईं मे कैणो ही काई ?"

"पण जीव अर ठूठिया सागै ही जल्मै, वानै खोद'र काढचां तो वै मरसी ही, अर खोद्यां विना, ठूठिया निकळन सू रैया, तो पापां तो लुणो ही पड़ै।"

"आ हू म्हारै मूडै सू नी भाखू।"

"खैर मत भाखो, पण आं ठूठिया री, कमाई तो खासी-भली थे ही खावो, कमाई सारू की पाप तो थारै ही पाती आवतो है लो।"

राजू बोल्यो, "सिनाथराम, आरी होड हुवै, अै वापड़ा मेवै रा रूख है, भज'र आया है, की दान-पुन करै, अधबै भूखै-तिस्सै नै ही पोखै, थाणै रै सिपाई सू ले'र पटवारी, गावसेवक अर अैलकार नै आपरी पोटी सारू चिवटी चूण नाखै है, संतावला ही रैवै आ नै वै।"

सिनाथ की हस'र वोल्यो, "तूं कोटवाळ है, अै वाता ऊंडी है, तू वात करै है सेळी कनै ऊभो।"

सिनाथ बात पूरी खतम ही नी करी, कोटवाळा री छोरी बोली, "सिनाथ-वडा, थे थारी कूडी कथ नै रैणदो, म्हे नी समझा, म्हानै चूकणदो पैलां, मरती मरा म्हे, धरे टीगर न्यारा कूकै, करता रैया थे थारी पछै, घणी ही टैम है।"

नथमल बोल्यो, "रसू लै पूणी-दो रिपिया, रूखड़ी अै दो तू, एक-एक भारकी थारै छोरा री ही आयगी है सागै।"

रसू बोली, "रूखड़ी नै दो अर मनै पूणी दो किया सेठां, म्हारो खारियो ही, लूठो है अर भार ही दो ठूठिया बेसी बीसूं हूं लाई।"

"थारां में आल की जादा हुवैली, ध्यारानी बाद देदो हुवैली, हूं तो

लिख्योडा देऊं ।''

"एक ही जाग्यां सूं ऊचाया है म्हे, इंया धिगाणै आंख्यां मिचवा'र अन्धेरो क्यों करावो ?''

"छोरै, थारा पइसा ईरै, अर ईरा थारै धस दिया है ला, औ दस पइसा और लै, तू राजी रह, ताकडी री काण, घड़ै मे काढस्या भळे कदेई ।''

"च्यार टूठिया लारै रैयग्या जद, थे कैयो, लै नाख-नाख, तोल्योड़ा ही है आनै अबै, भळे ही पन्द्रै पइसा तो कम दे दिया मनै,'' कह'र छोरी वळ-चक्की कानी गई । घणखरी वा मे आटो लेवणआळी ही लागी । केया चाय अर गुड ही लियो ।

नथमल बोल्यो, "क्यारा कमाणा है ओ, बैठो सूतो वाणियो, ईं धडै रो धान बी धडै मे घालै, ठाली बैठो कीनै आवड़ै, पूरी झिखत करणी पड़ै आ लोगा सागै, जद जा'र कठै ही च्यार, छवाना मण री मजूरी मसां बैठै, हां, अबै थे फरमावो ?''

इत्तै नै ब्राह्मणा रो एक छोरो आयो बरस पन्द्रै-सोळैक रो, बोल्यो, "सेठा, निब्बै रिपिया मगावै पटवारी जी ।'' देदिया सेठ बीनै, गयो बो ।

सिनाथ आपरी अजवाण दिखा'र कैयो, "देखो देखा ईनै, ईरी तो म्हारी समझ मे रोजीनै चौबल खुराक दिया ही की फायदो हुवैनी, घागळो है आ तो ।''

एकर देखी सेठ बीनै, फेर छोरै नै पूछ्यो, "कण दी रे आ ?''

"ठा नी ।''

"ठा नही तो कोई बारलो तोलग्यो, मिनख तो की देख्या करो । सेठ बीनै पाछी ही एक डालडा रै डबियै मे घालदी अर बीरै बरोबर ला'र, आछी तोलदी । सिनाथ बोल्यो, "ईं राजियै रो दुखदर्द ही सुण्या की, ओ ही रीरी करै दीसै ।'' सेठ सिनाथ सू की सकग्यो, मन मे तो खैर गाळ ही काढतो हुसी । राजू री बात सुण'र, सेठ बोल्यो, "भई मनै ठा नी, किया काई देई-ज्यो है सौदो तनै, चिवटी चाय और लै अर आ लै चोखोडै गुड़ री डळी ऊपर, बेटै री मा खावै जिसो है गुड ओ, म्हारो कोटवाळ है तू काई याद राखसी, म्हारै तो आधी नै आडो तू ही आवै, दो पइसा कमाई करण नै और

थोड़ा है ?"

"हूं जिसो हाजर हूं सेठां ।"

"जांवतो-जावतो लकड़ल्यां तो केई दाड़ पर नांखदै ।"

"जाऊं सा, आ बाई आ ए", कह'र बो बारणै माकर लारीनै गयो-परो। सिनाथ सोचै हो, "रोय लियो ओ तो, आ डळी अर चाय ई रै मूंघा पड़सी, आंख्या मूंगी हुज्यासी, कम सू कम घटा, डोढ-घटा सू कम नी लागै, दोना नै । मजूरी अर मुलायजो—किसोक मेळ बैठायो है सेठ, पण कांई हुवै अकल बिना ऊंठ उवाणा फिरै—काम करतै नै आपां किया बरजा ?"

सिनाथ उठ्यो । डावै हाथ कानी अलमारी रै ऊपरलै पासै नौकार री एक फोटू ही, वो देखण लागग्यो बीनै । सेठ बोल्यो "पूरो महीनो ही नी हुयो, अबार ही टागी है ई नै ।"

"हा जद ही, पैलां तो को ही नी ।"

दूकान छोड'र बो बारै आयग्यो वरामदै मे । नथमल दूकान रो मायलो कूटो दे'र पिछोकड़ै कांनी गयो। अबै सेठ हजारीमल जी नी हा समाई पर, घर मे उठग्या हुसी, खूणै मे पांवलो-सो एक कुत्तो— कादै में लथपथ हुयोड़ो सूतो हो नचीतो ।

सिनाथ वरामदै रै पगोथियां कनै ऊभग्यो दो मिंट। सोचै हो एकर पळै ई वेतरणी नै पार करो। फेर ध्यान आयो बीनै, "देखो कोटवाळा री छोरी बिना लाग-लपेट रै किसीक साची कैई, "थारी कूडी कथ नै रैणदो, म्हे नी समझा, मरती मरां, घरे टीगर कूकै", छोरी रै होठा पर खटाई आयोड़ी ही, सूक्योडो मूढो; आतां री भूख आख्या में तिरै ही, इयां ही बापड़ी दूसरी लुगाया हुसी—केई दो जीवा सेती, वांरी आंता चूटीजती हुसी माय री माय, केया रा नान्हा टाबर घरे बिलबिलावै—बोबा खातर पण बोबां में को हुसी तो ? टकी मे को हुवै तो टूटी में आवै, तो ही खालड़ी चुसासी काई ताळ। जामता ही रोगी, जामता ही भूखा, कारण कुण खोजै ? टुकडो अबै करसी, खेत में कोई डोकरो हुवैलो, अधकाचा रोटिया, आधी राख, पूरा लूण-मिरच है ही कठै, पाणी सागै गिट'र, काम करता-करता सास गळै मे लिया, दिन नैडो लेसी । अधभूखा, अधउघाड़ा आंनै कोई बेलं-तेलै री बात समझावै, अहिंसा री महीन व्याख्या आरै कंठा

मे उतारै, तो किया उतरै वा अर किया पचै वारै। बाड़, खाई, झूपड़ी अर हळ-हाल कांई-कांई करणो पड़ै कांई ठा— जद कठैई अन्न रा दरसण हुता हुसी—छोरी ठीक ही तो कैयो, रैणदो कूड़ी कथ नै—म्हे नी समझां।"

बरामदै मे सुतै कुत्तै, अचाणचक ही कान फड़फड़ाया—सिनाथ चमक्यो, तांतण सैं टूटग्या, वो झट टुरग्यो, नहीं-नहीं करता, दस-पांच छाटा काढै रा परमाद मे पाती आमहीग्या, सोच्यो, "चोळो तो घरै जा'र निचोणो ही पड़सी।" मूंढै स् निकळ्यो वीरै, "रोयलू रे कुमाणस तनै, कठै वैठो हो म्हारै भाग रो तू।" वो कळचकरी कमकर निक्ळै हो। एक छोरो जावै हो बामणा रो बरस पन्द्रै-सोळै रो। आठवीं मे पढै—वो, कांधै पर वण पांच-छव कीला आटो मावै जितो पीपो ऊंच राख्यो हो। सिनाथ वीनैं चालतै ही पूछ लियो, "छोरा आजकालै आटो घरै नी पीसो रे?"

"पटवारी जी रो है।"

"कितो है रे?"

"पाच कीलो।"

"किता पइसा दिया रे—पाच कीलो रा?"

"की नही।"

"क्यो?"

"कदेई नी देवै, ग्रामसेवक ही को देवी—दोना रो हूं ही लेजाया करू घणी दफै।"

"अर तनै?"

"मनै साबासी! मोडो वैगो जाऊ तो, मास्टरा नैं सिपारस करदै म्हारी।"

"क्यारी?"

"कै ईनै धमकाया मत।"

सिनाथ कांई जेज वीरै सागै-सागै चालतो रैयो। सोचै हो, जद अै पिसाई दे'र ख्याल नही करै तो सिरैपच अर सेकेट्री इसा दातार कठै सूं आया, वै तो वडा सू पैला तेल पीवणियां है। चोखो सेठ नैं इसो सोरो अर सस्तो शिकार कठै लाधसी, क्यांरा रा ही घणै सूं घणा पाच रिपिया हुता हुसी महीनै रा—रिपियै सवा रिपियै मे एक आदमी; इतौ सस्तै मे तो

खरगोस ही नी मरै, लखदाद मिलणो चाईजै नथमल नैं।

सिनाथ भळे पूछ्यो—"पटवारी जी कठै है रे अबार ?"

"पंचायत भवन में।"

"कांई करै है ?"

"फाटक में अबार केई डांगरा लिलाम हुया, बांरो कोई हिसाब करता हुवैला।"

"और कुण-कुण है बठै ?"

"सिरैपंच, पटवारी, ग्रामसेवक अर सेकेट्री, सगळा ही है।"

"तनैं ठा है, काईं लिलाम हुयो अबार ?"

"एक टोघडी, एक गाय ही, साढ ही बूढो-सी एक।"

"टोघड़ी कण ली, ध्यान है की ?"

"बोली तो अखियै कोटवाळ लगाई साठ रिपिया मे, पण लेईजी वा हजारीमलजी वास्तै है।"

छोरो फटग्यो एक गळी मे। सिनाथ नैं ध्यान आयो, "छोरो साचो है, अबार थोड़ी ताळ पैलां निब्वै रिपिया एक छोरो ले'र गयो हो सेठ सू। पटवारी अर सेकेट्री रै एक दारू री बोतल, बाकी मे सिरैपच, ग्रामसेवक अर दो-च्यार रिपिया कोटवाळ नैं। टोघडी निरवाळी सेठ रै घरे पूगगी। भोळो कोटवाळ राजू कैवतो हो, "अै मेवै रा रुंख है, पटवारी अर गावसेवक काईं ठा कित्ता नैं अै पोखै।" बीनैं काईं ठा दूध कोरो ही है, बिलोईजसी बो कठै ही जा'र, पसेव कोरो ही पड़सी, अर सोनो जा'र कठै ही चमकसी।

बीनैं टोघडी री ध्यान आयो, फाटक में बण देखी है बीनैं कई दफै। सिधण, तीन-सवातीन बरस री, सूधी अर फूठरो बेलो। साखीज्योडी हुणी चाईजै, पाच-सात महीनां मे ब्यायगी तो कम सू कम दो हजार री गाय हुसी —सडत देखतां दो हजार मे ही कुण देवै। पाच कीलो दूध तो पैलांण रै ही "हुणो चाईजै, धरम-करमआळो दू'सी कोई पण छोरी लाण ठीक कैवती ही, "छोडो कूडी कथ नैं, मरती मरा म्हें। पेट में नाखण नैं आटो चाइजै पैलां, डील ढकण नैं मोटो-पतळो पांच-सात हाथ पूर अर सिर घुसोवण नैं च्यार हाथ कातरो, धरम-करम री नाव पछै लेवो तो की समझ में आवै।"

घर आयग्यो हो, "अरे अजवाण तो झलाऊं मा नैं।" बीनैं ध्यान आयो अर वो मांय बडग्यो फुरती सू।

5

आ धनजी सेठ री दूकान है—पक्की अर लम्बी चौड़ी। अठै लूण तेल-तमाखू सू ले'र मोती, मूगिया अर रातदिन रै कपड़ै तांई—जरूरतआळी सैं चीजां लाधै। धणी मे तो काई लिपस्टिक अर नख-पालिस री दो-च्यार सीसी तक, मामली अलमारी मे ठाई लाधसी—लेवो वांनै भला ही नायक, सैंसी अर मेघवाळा री छोरी-छीपरचा का चारी चलती चटकती जवान बीनण्या ही। ईं सू आगै काई, आरै तो पाच पइसा मजूरी हुणी चाईजै—चीन मरो चावै बीनणी, बामण नै तो टक्कै सू मतळब है।

दूकान आगै पत्थर रै गोळ खभा पर बडो बरामदो है, अर ई रै चिपती ही लोह री मोटी खिडक—खिडक मे आगोनै घर है। आज सू बाईस-तेईस साल पैला घर री जाग्यां पर *सूनवाड ही, अंधेरी रात नै कोचरघा बोलती* तो डर लागतो अर दिन में आदमी रो जी अमूजतो। एक खांखरी सेजड़ी अर एक बूढी जाळ हा ई मे—वारै काळजा मे गोह अर कोचरचां, अर सरीर पर पखेरू अर सेत माख्या रा छत्ता हुया करता। दूकान री जाग्यां हुती कबाड़ैआळी एक कच्ची साळ। वीमे लागती सेठ री दूकान। आधी मे दूकान अर आधी मे सोवा-उठी। निमधी-निमधी एक चिमनी जग्या करती रात री दस बजी तांई, वींरै चानणै सेठ दिन भर री पोतै-बाकी माडतो, मिलावतो।

आज लिछमी री मैर है। वी सामण सूनवाड मे हंसतो-मुळकतो एक घर दीपै—गूभारिया पर उठघोड़ो। वाड़ा, खेत अर नाळी कांनी दो मुरब्बा। दो, पूणी-दो बरस हुया है एक ट्रैक्टर लेलियो, हाडी री बुवाई मे नाळी कांनी भेजदै अर असाढ-सावण मे ई नै पटोड़लै, कमाई रो कांई चाको, पइसा लिया लोग लारै-लारै फिरै। लायत रकम तो आज तांई जद ही पूरी करली, अबै मुनाफो ही मुनाफो है। साल-छव महीना मे एक ट्रक लेवण री और सोचै। धीणो-धापो सूठो, बाड़ै मे कुत्तर री मसीन, गांव रो ही नही, आसै-पासै रै केई वासा रो धणधरो कचरो अठै ही कटै। एक हाळी अर एक पांटा धापणआळो घरे काम करै, तोलै जोखै खातर दूकान मे, एक छोरो और है।

दो भाई है—वारै टाबर-टीगर, दो-तीन पढ़े बीकानेर में। वधतो परवार अर बधतो ही बौपार। भाई दोनू ही पइसा पैदा करण री मसीन है—सक्कड़ सू काढलै। रोही मे बैठा हुवै तो ही चित-पुट कर'र कमाई करलै—मिनख मिलणो चाईजै आंनै। गांव मे आयै अैलकार री आसू मिल्यां बिना, समझलो जात ही नी पळै। साख आछी अर कमाई मे झल्लां-पट्टां। ठाकुरजी रो मिन्दर करा राख्यो है गाव मे, पिंडत रामधन सेवा करै ठाकुरजी री, अर अधपूण घंटा दूकान ही आवै 'गोपाळ सहस्र नाम' वाचण नै।

अवार ग्यारै, साढी-ग्यारै बजी हुसी दिन री। धन्नो सेठ गिद्दी पर बैठो है। मैंतजी री लास नै सावळ एढै लगा'र, दूकान बस खोली ही है। वधती चाद, चिलकतो चश्मो अर चनण रो गोळ टीको—सैदे परमारथ रो पूतळो लागै। रुद्राक्ष री महीन माळा और राखै पैरण नै, कण ही साधु झला राखी है कै ई सू ब्लडप्रैसर को हुवैनी। सेठ वरस पचास तो ले ही लिया, च्यार-छव महीना ऊपर भला ही हुवो। सामी गिल्दै री पेटी मेल राखी है। गिरधारी, वामणां रो छोरो, वरस वीस-वाईसेक रो तोला-जोखो करै अर सेठ गाहका नै पूछ-पूछ हिसाव सारू पइमा लेवै-देवै। अवार कान सू कलम उतार'र बही मे लीकां खीचै—निजर गडो'र बढी सावधानी सू। जरूरत मुजब च्यार ओळी माड'र, कलम कान पर पाछी ही इया टागली जाणै कान वींरो कलम-स्टैण्ड हुवै। सामों देख्यो तो वीनै, करणो नाई आवतो दीस्यो। दूकान मे पग राखतां ही सेठ बोल्यो, "आव नेवगी, किया आणो हुयो ?"

"आयो तो पगा-पगा हूं, पण थारै कनै थे जाणो सीधै पगा कुण आसी ?"

"बोल तो सरी की ?"

"रिपिया चाईजसी हजार वारैसै।"

"सागै ही इत्ता, इत्ता रिपिया तो वक मे लाधै कठै ही, तो ही इसी काई जरूरत पडगी अवार ?"

"म्हारी बक तो थे ही हो, छोरै रो ब्याव मंडग्यो।"

"अवार चौमासै मे बिना रुत ही ?"

"सोची तो आ ही कै, अैसकै ठाकुरजी जमानो कियो तो उनाळै की ससवो हु छोरै री ठा-ठप उरळै काळजै कररयां पण सेठां, नर चीती नही होत है, हर चीती तत्काळ, विना तेवडी ही आ पड़ी खरच री खाड, ई रो काई उपाव ? छोरै रो दादी सुसरो चालतो रैयो—सगो खुदाखुद आयग्यो, ठोडी रै हाथ लगा'र बोल्यो, 'मालका, म्हांनै तो कू-कू किन्या देणी है, अर थारो मैदी रो पान ही नी खरचाणो, वाप-जांवतो जावतो-जी री कह दरसाई कै न्यात-गंगा रै भेळी ही म्हारी पोती पेमली नै हरखै-कोडे धोरियै चाढ देया, बतावो बारो कैयो अबै किया लोपां, म्हारी बिरादरी मे सेठां इसै मौके किन्यां देवण रो म्हातम की जादा है।"

"फेर तो करणो ही पडसी, पण, घोखो'क, इया अणचीती लिछमी आई आछी, सासु रा पग दाबसी अर तनै पुरससी कंवळा-कंवळा फलका, भागी है तू।"

"हा टैम तो अवार पग दावण अर फलका पुरसणआळी ही है। पुरससी वापडी था जिसां भाग्या नै कोई—भलै घरां री हुसी वा। म्हांनै तो बूढै-वारै कूटसी नी तो ही म्हे तो फलका कर ही मानस्या।"

"हां तो बोल किंयां देणा रिपिया ?"

"मोठ है आठ-दस बोरी।"

"सळिया है ?"

"एकदम, न काकरो अर न डूखळी।"

"घणां महीन अर कोरडू ही नही हुणा चाईजै।"

"काईं वात करो सेठां, तुरकणी रै कात्योड़ै में फिदडको निस्ळै, पोल पडी है दाणो-दाणो गिण लेया दडा है ज्यू है।"

"भाव बोल ?"

"दाई सू पेट छानो है ? थिया वजार भाव सवा रिपियै सुण्यो है।"

"एक रिपियै, पन्द्रै पइसां मे लेणा करलै, अवार ही तुलवाऊ", कह'र बीरै चैरै सामो एकर सावळ जोयो। सोच्यो, "टूपो लाग्यो है जद नाईडो ईंनै श्रायो है, लिछमीजी भेज्यो है फदीड़ खांवण नै, तो देणो चाईजै आपा नै आपणी ऊरमा सारू जचा'र। प्रगट मे बोल्यो, "बारै-तेरै कोस लेजासी बीरो भाड़ो, आगै आढ़त, चूगी, बिक्री अर मंडी-टैक्स अर काईं ठा किती रकम रो

जाळ, उळझँ पछँ सोरँ सास निकळनो ही ओखो, न खावण-पीवण री सुध-बुध अर न न्हांवण-निवटण रो सुख, दो दिन रो थारो खोटीपो गयो भैंस री पूछ में। समझदार तो सहर रो नांव हीं नी लै, फोडा देखग रो कोड हुवै, जद वामण नैं हीं मत पूछ, दुरज्या अबार ही, आया पछँ म्हारँ सू राम-राम कर लिए।"

सेठ री वात सुण'र खवासजी ढीला हुया। घोड़ो चाईजै वनोरँ नैं, घिरतो लेजाए, कद सहर गयो, अर कद आ'र सांभा-सूभी करीजी—वैन वेटी नैं ही लाणी है। बोल्यो, "सेठा देखलो थे ही अवै हू देखस्यू घी ढुळचो तो ही मूगा में, पण की लाड तो म्हारो ही राखो।"

"इंयां म्हांनैं किसो रामजी नैं जी नी देणो। भाव मू बेभाव थोड़ो ही चालस्यू ?"

"तो ही कानां मे तो घालो को ?"

"देख लेवण री जी में तो म्हारँ ही रिपियँ कीलो अर थारी जाग्या जे दूजो हुतो तो हूं लेंवतो ही, पण थारँ खातर पांच पइसा ऊपर है, खाली कर अर पइसा लै हाथोहाथ, समझलै सुगन-चिड़ी तू जीवणँ ले'र ही आयो है।"

"तो हूं लाऊ हू फेर" कह'र वो गयो। सेठ उठ'र वरामदँ कांनी आयो तो आगँ एक लुगाई ओढणती मे भेळी हुयोड़ी पड़ी ही, कनैं जवान-सी एक छोरी बैठी ही। चौनिजर हुंता ही, सेठ पूछचो, "क्यो वाला, किया आई है ?"

वोरी आवाज सुणतां ही, ओढणी सावळ कर'र डोकरड़ी उठी। डील रै सळ ही सळ, गाघरियँ पांच-सात जाग्यां गांठा लगायोड़ी। थोड़ी-थोड़ी धूजै। सेठ पूछचो, "बोलो माजी ?"

गूवटो की सावळ करती बोली होळै-होळै, "सेठां, छोरी सासरँ जासी, पावणो आयोड़ा बैठा है घरे, की ओढणियँ रो पूर तो सिर पर नांख'र भेजूं जद ही हुवै, म्हारँ कनैं तो काईं हो, बापडी कीना पाचेक गूद लाई ही बांवळियां रो सासरँ सूं ओलँ-छांनैं भेळो कर करा'र, किया ही। जावती पूर—पल्लो कर लेजासी, सुपात्र है बापड़ी, म्हारी ही सोभा साज दे'सी।" रुकगी एक'र, दमदोरो आंवण लागग्यो। फेर बोली, "डेण ही गांवतरँ गयोड़ा है, ये ढंगसर लगाया पइसड़ा की, आंधो अर अजाण बरोबर है, हूं तो की समझू

नी मवासणी है, थे ही माईत हो इंरा।" कह्'र डोकरी भळे आडी हुगी।

"ताव आवै है ?"

छोरी बोली, "सियोदाउ है।"

"आवै बाई आवै, आजकालै ! देखां गूद।"

छोरी गोथळी सामी करदी। गूद तो अफलातून हो। सहर रो भाव सेठ नै टा हो, दस दिन पैला ही आधो कीलो लियो हो सोळै रै भाव, आठ रो। आप रई करा'र लिया करै दिगूणै-दिगूणै। तोल लियो वीनै, पचास ग्राम कम हुयो पाव कीलो मे। बोल्यो, "लै पचास ग्राम रा किसा थागा लागै, घर री छोरी है, पैंतीस रिपिया हुया।"

डोकरडी भळे उठी हिम्मत कर'र। बोली, "एक तो ओढणियौं, कुडतौ, अर लैंगै रो बटको आसी'क नी, आंमें ?"

"बेटी री पूछ सा तणी ही है, आवो, मत आवो थारो इतो हेत है तो की मदत म्हे ही करस्या।" अर देदिया सेठ, बत्तीस रिपिया हुया सैं, कैयो, "तीन रिपिया थारा और बच्या है।"

"न्याल किया थे, भलो हुया थारो भोए-भोए, छाया पडर्या हां थारी। अबै तीन रिपियां रो सीधो और तोल दो, चावळ अर गुड।" देदिया सेठ—चुर्नेण री दो गोळी और दी डोकरडी नै, कैयो, "लेलिए चाय सागै, काल नी आवै, बुखार।" आसीस देवती गई, डोकरी—छोरी रो हाथ झालै। सेठ रिपिया ही झडका लिया अर आसीस ही—एक सू मुनाफो अर दूजै सू मन राजी। सौदो निवटा'र वो एकर घर में गयो, आगै छोटो भाई लालचन्द आयोडो बैठो हो।

"कद आयो तू ?"

आयो ही हूं बस।"

"भाव-ताव ?"

"मोठ महर मे पोक एक-साठ, घी चौईस, बाजरी एक-तीस, बाकी है ज्यू ही चलै। एक ट्रक गोहूं एक-पन्द्रै में लिया है—कल्याण है, परसू ताई आवैला अनूपगढ सू। अठै की आयो माल ?"

"थोरी बीमेक मोठ एक-पांच में, घी टीण दो-एक साढी-अट्टारै, उगणीस में, थोरी दसेक बाजरी एक-पांच में, बीसेक थोरी गवार लेणों कियो है एक

जाग्यां। जांवतँ ट्रक मे अँ सगळा भेजदिए, चाय री पाच-सात पेटी सागँ ही घलवा दिए, ईंमें अबार मजूरी ठीक है।"

"आछी आपँ ही है, साधु म्हातमा सू ले'र रंडी-वूची ताईं सँ लेवँ ई री घूट तो।"

"चोखो'क, पिया ही फायदो हैं आपणँ तो, महीनँ मे आधी पेटी मसा घेटी हुती, अबँ दो पेटी तो हाथ रँ इसारँ सागँ जावँ अर आगँ वधता ही लेखो।"

"तो मैंतजी विदा हुया काल ?"

"तीन-च्यार घटा जबान अटकी रही, प्राण दे दिया हा रात नँ बजो तीनेक, चादा अर हूं ही हा बठै।" इतँ मे ही लालचन्द रो छोरो आयग्यो कनैयालाल, बावँ रँ पगा रँ हाथ लगा'र ऊभग्यो।

"तू ही अबार ही आयो काई लालँ सागँ ही ?"

"हा।"

"अबँ पढ़ावडी किनाक दिनां री और है थारे ?"

"छव-एक महीना और समझो।"

"पछै तो पास है कानून ?"

"हां।"

"कन्नू, फेर तो लाडेसर, कोई तिकडम भिडार मजिस्टेट वणँ जद मजो आवँ। रिपिया पाच-सात हजार लागँ तो लागो, रिपिया रांड रा इया ही आवँ, अर इयां ही जावँ।"

"वावोसा, अबार जाग्यां रो तो नांव ही मत लेया, एक पोस्ट अर सो उम्मेदवार। तीस-तीस हजार रिपिया तो लोग आगूछ देवण नँ त्यार वैठा है,देवँ ही लोग लारँ पड़'र है।"

"तो पढाई फेर थारी इयां ही गई समझो। उकीलपणो तो थारँ सूं तावँ आणों ही ओखो है। खातँ री लीका तो, म्हे खैंचा ज्यू, तू इत्ता फोडा देख्या विना ही खीच लेवतो।"

"अबार तो वावोसा, हरिजना री तो फेर ही तार है, वारो छोरो कोई एल-एल बी. हुवँ, वीनँ तो चांस भळे ही कीं सोरँ सास मिल सकँ। वामें ओजू कम है नी, ऊची पढाईआळा।"

"हरिजन तो तू ही बता, बाणियै रो बेटो कियां बणै ? खैर, पढाई तो पूरी कर पैला, आगै-आगै गोरख जागै, सोचस्या की, लागी तुक्क तो लगा देस्या दस-पाच हजार बैसी, बाणियै री सिद्धि तो लिछमी लारै है, रूपली पल्लै तो रोही में ही चलै, ईंनै मूढो सगळा धोवै।"

छोरो गयो, अर सेठ रसोई में बड़ग्यो। जीम-जूठ'र निकळती बेळा, चादा होळै-सैं सैन करी ओरै में आवण री। जिया ही बो मांय बड़ग्यो, चांदा किंवाड़ ओढाळ लिया ओरै रा, बोली होळै-सै, "तीन हजार है चांदीआळा अर दस हजार नैड़ा नोट है।"

"और की ?"

"गैणो है अडाणगत रो", बण देख्यो भरी-तीसेक सोनो हुवैलो, अर चादी पाच-छव कीलो। गैणियै नैं तो लालैं सायैं भेज'र बेच-बट खतम करो, काल नैं भळे कोई झीझट खड़ो हुवै। बांस हुवै न बांसरी बाजै। रिपिया रो भाव अवार की मन्दो है—बारै-एक रो, बार तिया, छत्तीस हजार हुया, पैला एकर चवधै रा दाम हा, सावै रा दिन आया वै ही भाव भळे हुज्यासी।"

सेठ चौकन्नो हुयोड़ो-सो, ईंनै-बीनै देखतो, बारै आयग्यो। जा'र पाछो ही बैठग्यो दूकान री गिद्दी पर जच'र। गिरधारी नैं बोल्यो, "जा, रोटी खा'र, आवतो डाक देख लिए।"

सिनाथ धनजी री दूकान कानी आवै हो। स्कूल रो हैडमास्टर मिलग्यो अध बिचाळै सैं। बरस पच्चीसेक रो है—यू० पी० कांनलो।

आछी पटै सिनाथ सागै बी री।

"माट्साब, इधर कहा, आप तो धनजी के यहा रहते है", सिनाथ पूछ्यो।

"रहा था कल तक, अब नही।"

"क्यों ?"

"हाथ जोड़ दिए सेठ को, डर लगता है बडे आदमी से।"

"ऐसी क्या बात है, सीग निकल आए हैं क्या उसके ?"

"सीग भी बड़े पैने, आप जानते हैं शिवनाथ जी खोटे धन्धे अपनेसे पार नही पड़ते। मकान किराए में, पाच-सात सेडले छोरे, छोरियो की पलटन,

एक-डेढ घटे रोज माथापच्ची करो उनके साथ, रविवार को भी घेर लेते हैं, दम घुटता था, चलो किसी तरह निभ जाय। एक दिन सेठ ने कहा, "माट्साब तेल दलिया तो स्कूल मे आता होगा ?" "हा आता है सा'ब।" "तो करो पांच पैसा कमाई आप भी, आपके सहारे दो पैसा हम भी कर लेगा क्या हर्ज है इसमें ?" मैंने कहा, "सा'ब यह कैसे हो सकता है, बच्चो का है वह तो।" बोला, "बच्चा उसके बिना पहले कभी भूख नही मरता था, और अब नहीं होगा तो भूखा मर जाएगा—आप बहुत सीधे मालूम पडते है। आपका काम नहीं पड़ा अभी तक, पहले वाले माट्साब की लड़की का विवाह हुआ था, बोले सेठजी कैसे पार पडेगा ? हम उनको तरकीब बताई, तीन तोले का जिनस बनवाकर दिया, थोडा चादी का अलग, विवाह सोरा हो गया, आपके भाई, बहन और कोई बीबी-बच्चा नही है क्या ? वो माट्साब रिटार हो गया, आज भी हमको याद करता हैं, पइसा से कोई नाराज नही होता है।" मैंने कहा, "अ:प ठीक कहते हैं, पर मेरे यह वश का नही।" बोला, "पैसे का जरूरत तो आपको भी है, मगर आप जी थोडा कच्चा करते हैं, और सोच लेना आप।" मैंने सोचा बिना मतलब सेठ नाराज होगा—सागर में रहना, और मगरमच्छ से वैर ठीक नहीं, भलाई निकलने मे ही है, स्कूल भली ओर अपन, जा रहा हूं अब।

सिनाथ एकर बी कांनी सरधालु आंख्या सू देख्यो, अन्तस गद्गद् हुय्यो, सोच्यो "इसी चट्टानां पर मकान बणसी वै ही टिकसी, जुग रै बाढ तूफानां मे।" वो बोल्यो, "वेधड़क रहो माट्साब, अच्छा किया कीचड़ से निकल गए आप।"

वो दूकान रै बरामदै में बड़्यो। खूणै मे एकै पासै बोरयां री थाग लागी पड़ी ही। बरामदे री सफेदी पर सामोसाम, "तुलछी या ससार मे भांत-भांत के लोग······अर नीचै बी रै "अनुशासन देश को महान बनाता है।" "पेड लगावो, परिवार नियोजन करो," ई ढग री दो-च्यार ओळघा और लिख्योडी ही लाल अर मोटै फूठरै हरफां मे। पांच-सात महीना पैलां, इसा हरफ बरामदै री पून में ही नी हा। सिनाथ नै देखतां ही सेठ बोल्यो, "आवो सिनाथराम हूं थानै बुलाऊ ही हो, ऊमर मोटी है सा, याद करतै ही आ पूग्या।"

पडै तो एक मजो, दो पड़ै तो दो। है एक काटो—काटै नै काटो ही काढसी। मन नै की थ्यावस हुयो। उठ'र बो एकर घर कानी गयो।

6

दिनूगै री टैम ही। धन जी री बाखळ में छव-सात छोरयां—दस-दस, बारै-बारै बरसा री। केया रै मैली काछडया, सिर उघाड़ा, केस करड़ा अर उळझ्योड़ा, चैरा पर भूर, पेटा पर मैल रा रीगा अर पग उवाणां। दो एक रै मैला चीटा कोटड़ा ही, पण झीर-झीर। इत्ती ही लुगायां और आयगी। सगळा रै हाथां में पारिया, कूलडिया का काळै पीदै री, सिलोर री मुची देगच्या ही। दो-एक नै छोड'र सगळा री बगलां में का माथां पर लीलै री छोटी-छोटी भारक्या, हुवैली दो-दो, तीन-तीन कीलो री। घणखरी औ नायक अर मेघवाला रै घर री है—एक आं मे ढोलण है। सगळी छाछ नेवण नै आयोड़ी है अठै।

घर रै धुरीमोड़ै आगै एक चौकी है, बी पर एक पीढो पड्यो है। सेठाणी बैठी है बी पर, धोळी धोती अर एक गोडै पर तुळछी री माळा मेल राखी है। धनजी री मा है आ—वरस सित्तर-बवत्तर रै अन्दाज। आगै छाछ सूं भरी लोह री एक मोटी बाल्टी, कीलो पन्द्रै नैड़ी छाछ मावै जिती घर राखी है। अध कीलै'क रो एक लोटो है—लकडी रो हत्थो लाग्योड़ो, सेठाणी बी सूं छाछ घालै। ढाई-तीन कीलो जाडी छाछ, घर में पैला ही भेजदी, लारै बची बी में पांचांना-पाती पाणी रळा'र बाल्टी भरली। कोनै ही एक, लोटो को जादा हुवै तो कोनै हीं दो अर कोई नहीं लावै तो बी नै चिट्ठो उत्तर ही।

एक छोरी चौकी नीचै आ'र ऊभगी "लावो दादीसा, आवण दो।"

"थारी भारको कठै ए?"

"नाखदी नी, दादीसा, टोपडिया रै ठाण मे।"

"कूडी मरै, ला देखा मनै।"

छोरी टाण सूं, लीलो नांख्यो जिया ही ऊंचा'र बोली, "ओ देखो।"

"दो गुवाळा ही पूरा नी हुवै, इसो काईं लावै, कीं तो लाया कर।"

"काल ईं सूं दूणो लो थे।"

"लै-लै भायो मत लगा, जाणूं तनै दूणों लावणआळी नै," कह'र एक लोटो छाछ घालदो। छोरी बोली, "काचो-काचो भुरट लाई हूं; की तो और घालो दादीसा।"

"फीटाई मनै नी सुवावै", आधो'क कळसियो कर'र, 'लै और, जा परियां, ओरां नै ही पांती आवण देसी'क नी ?"

इसा ही और लुगायां पतायां नै ही छाछ घालै ही, अर वै आपरी भारक्यां टोपड़ियां रै ठाण में सेठाणी नै दिखा-दिखा नांखै ही।

एक लुगाई नै पूछ्यो, "आ कोरी बहू है ए ?"

एक जणी कण ही कैयो, "आसू मेघवाळ रै बेटै री बहू।"

"है ए गुणी है, हाय री चतर बतावै तूं, टोपड़िया रो ठाण तो सावळ करदे थोड़ो, पीळी अर पोटां रो लेव कर'र। पारियो एकर, मूंधो मारदै भींत पर, दो मिट लागसी तनै तो।"

बण बापड़ी पारियो राखदियो, ठाण ठीक करण नै गई।

इतै में पंडित रामधन आयग्यो, खड़ाऊ पैरयां, केसरिया साफो, हाथ में पंचपात्र, अर जेब में टीपणों। पाठ करण जावै हो दूकान में। बोल्यो, "लो विरणामृत।" सेठाणी हाथ माड दियो,

> "अकाल मृत्यु हरणम्, सर्व व्याधि विनाशनम्,
> विष्णोदकम् पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।"

श्लोक बोलतां-बोलतां पंडित पांच-सात टोपा निवांण कियोड़ी हथाळी में नांख दिया। सेठाणी बोली, "नाडै आगै दो लाडू पड़या है, लेजाया जांवता।"

"ठीक है।"

"गायत्री रै पाठा रो थे कैंवता हा नी कद कांईं करस्यो सुरू।"

"काल भोर में इमरत रो दूघड़ियो है, सुरू तो काल ही कर देस्यूं।"

"थरे ठाकुरजी री सेवा करण नै पछै ?"

"छोरो आ जासी।"

"अर भाणियै रा गिरै करडा है, छनीछरजी रो दान करावण खातर थे कैवता हा नी, काईं-काईं समान कढवा'र राखू ?"

"म्हारै ध्यान में है, वारै-साढीवारै दजी हू आऊ हू, विना कैया ही।"

छाछआळी पाच-सात ओजू खडी ही, पडितजी वा सामो देख'र कैयो, "मिनख जमारै री मौज लूटै सेठाणी जी, छाछ अबार री टैम मे पटी पडै है, दूध छोड, पळोवण रो पाणी तकातक वेचदै लोग, छाछ तो टीकी दॅवण नै ही नी लाधै, व्यासजी री ओ ही कैयोडो है, कै, "पर-पोषण-सो कोई पुन नी है।"

सेठाणी रै चैरै री अहं चौड़ो हु'र, आख्या मे उतरग्यो, अर मन री खुसी काना रै रस्तै हुती एकर सारी चेतना मे फैलगी। छाछ नै उडीकती एक बूटी-सा लुगाई बोली, "म्हाराज, मेवै रा रूख है बापडा, भ्ज'र आया है, धाला जद म्हे हो क्यो घालानी कीनै ही, घणों ही मन मे आवै पण घाला काई काळजो का फोडा कीनै ही ? लप आटो अर चिवटी लूण-मिर्च नाख'र कटडी सागै टुकडो कठा उतार लेस्या, आसीस देस्या आनै। बतावो थे, अबार म्यारो साग करा, दसै-पन्द्रै दिना मे तो काईठा टाकुरजी किया तो, फळी, फूबी की वापर सकै," . ...

डोकरी आपरी बात पूरी कर'र पूरणविराम ही नी लगायो थी मू पैलां ही ढोलण बोली, "धिरियाणी, चौगुणै भाग, किरोड़ा पर कलम चलावो लिछमी रो नाथ, छाछ कठै गाव मे, घणघरै घरा तो बिलोवणा वसाणा ही छोड दिया अर कैया मूधा मेल दिया, वारै नीचै मिलारी अर ऊदरा लुकमी-चणी खेलै। छाछ का तो आरै का हजारीमलजी रै दो नारली कास-बमीण नै मिलै—बाकी तो राम राम है। मेवै रा रूंख है अन्नदाताजी, जल्म सुधारै, पोखण नै ही आयोडा है—धरती पर। धिरियाणी मनै ही घालो थोड़ी, टुकडा भिजोऊ जा'र, लोड़ै री दिया ही नी किचरीजै, खाऊ ही किया बानै, पीरू रा लायोड़ा है।"

"तू की नी लाई ?"

"लाऊ तो धिरियाणीजी वडा भाग, म्हारा किसा हाथ घमीजै, गोडा मुळै, अठै ताईं ही निठ आई हूं, टसकती-टसकती। काल टीगर नै कैस्यू

पदड़का मारँ टोंगरा सागै, लोटे पाणी रो ही सुख नी है भळै ?" घालदी पूणो-एक लोटो बीनै ही । एक छोरी नै नी घाली, बा बैठी रही ।

"आ छोरी कीरी है किसीक मिजळी मरै, जाग्या झाल'र ही बैठगी, क्यों तनै छाछ भावै टोघड़िया नै लीलो नी भावै, काल ही नी लाई ?"

उदास मूँडै छोरी बीनै देखती रही अणबोल अर बेबस । खाली पारियै कांनी देखै जद एक काळी छाया बीरै चैरै पर तिरै अर काळजै में एक भय । बीरी मायली पीड़ नै कुण समझै, मा मरगी, नानै आयोड़ी मा रो जी ईं खातर कद पसीजै ? कैयों है धण, "छाछ ले'र नहीं आई तो राड नै घर मे नी बड़न दूली ?" बी मा नै इसो काई ठा कै टैक्स लिया बिना सेठाणी रो अस्मर छाछ रा दरसण ही नी करणदै । घरे मा गारै-गोबर मे पटोड़ी राखै, कद लावै लीलो बा । सेठाणी उठण लागी, जद छोरी बोली, "काल हूँ ही ला देस्यू लीलो ।"

"ला-देसी धूड़ धोरां री, बल आगी ।" पावेक धोवण नाखगी पारियै मे जावती-जावती सेठाणी ।

वो ही हाल हजारीमल जी रो है । बारी बहू ही बेला, तेला अर अठाई घणा ही करलिया, ओंजू करै तावै आवै जिसा, केई दफै भाईपो अर भाई-परसंगी जिमा दिया पण गरीब-गुरबै नै छाछ मिण'र घालसी । चौमासै मे लीलो, बोरिया रै दिना में टाबरा खातर लप ऊनरा बोरिया, सागरी, कैरिया, फोगलो की हुवो हाथ ऊचो कियै रो बस पड़ता की न की लेवै ही, और की नहीं तो बजार भाव सू पाव, अधसेर जादा रो मुलायजो तो अगलै नै राखणो ही पड़ै ।

हजारीमलजी री आ ही सीख है कै, "टोघड़िया खातर पइसा सट्टै लीलो लियो कद पोसायो, रोही में कचरो घणो ही ऊभो है, म्हे तो कोई आवण सू रैया । आपणो दो नारळी घालतां हाय नी घसीजै तो अगलै रा दो करळा कूटळो लावता किसा हाथ घसीजै । टोघड़िया रो हक म्हे अगतां नै घाला तो बदळै में टोघड़िया नै ही की दिरावा तो सरी ।" कनै ऊभै रामधन पंडित कह दियो, "बात नै तो सेठा बात ही कैणी पड़सी ।"

"नहीं ओ, अगलै रो ही काम निकळ्यो अर आपणो ही मुतळब सरग्यो ।

"अर गांव में सोभा अर पुन री जड हरी ।"

"खैर, पोथ्या तो पुन हुसी ही, चोखो की बापड़ै री आतां ठरैं तो।"

बिना मा री बा छोरी, बठै सू अठै आई, एक चुळू भर छाछ बण रस्तै मे ही चसोडली, मीठी लागी बीनै, जी मे आई सगळी ही चूक दे'र पेट मे नांखलू पण डरगी बा। चौकी आगै खडी हुगी जा'र। दस-पन्द्रै मिट कण ही नी गिनारी बीनै। छेकड एक छोरै देखली बीनै, बो बोल्यो, "दादीसा, मदाआळी बा छोरी ऊभी है चौकी आगै।"

"अरे फीटी बळै बा, लिया बिना किसी सिरकसी, बारणो कण खोल दियो. नारळी एक धोवण बाळ घाल आगो।"

छोरै पाव एक धोळो पाणी घालर बापडी नै काढदी, बोल्यो, "अबकै आई तो कूटलो।"

छाछ ले'र दो एक लुगाया धनजी रै घर सू निकळै ही, कान्है कोटवाळ रै बैटै री बहू सामी मिलगी। दाता रै मिस्सी अर होठ लाल किपोड़ा। पगा मे प्लास्टिक री राती चप्पला। एक जणी बोली, "डावड़ी छावड़ी तो की म्हानै ही बनाया कर, थारी चलै।"

"चलै हू किसी मालकण हू बठै री ?"

"म्हे तो सेठाणी ही समझा तनै," कह'र वै आगै निकळगी। सेठाणी, पीढे पर बैठी-बैठी चाय पियै ही, का भंगण आयगी, बोली, "सेठाणीजी-सा, महीनो हुग्यो एक रिपियो देवो अर एक कोई, कोटड़ो बगसीम करो।"

सेठाणी आपरो मूंडो की फोर'र पूठ बी कानी करली। इतै मे ही धनजी री बहू आयगी निकळ'र, कूटळ सू कम काई हुवैली। बोली, "दस दिन ही नी हुया, कोट दियो हो, पूरो महीनो-बीस दिन ही पैरघोड़ो नी हो, इंया अठै काई धैण है कपड़ां री ? रोटी एक देवा ही हां रोजीनै, रिपियो न्यारो।"

"तो हूं और कठै ही जास्यू लेवण नै, पेट तो म्हारो ही निकळनो चाईजै। आज पछै दो रिपिया लेस्यू हूं, रिपिये मे नी पोसावै।"

"इसा रिपिया आका रै लागै है काई ?"

"घर मे रामजी, पन्द्रै जणा हो, बेल बधो ठाकुरजी म्हाराज, निबटो

तो थे मगळा घर में हो, पांच-सात निवटता हा तो ही रिपियो अर पन्द्रै निवटो तो ही वोही एक छूंतको ? म्हारै पोतैनै, फाटयो-पुराणो एक जांघियो दे दियो तो म्हे तो वींनै जरी रो कर'र मानां, वी पर इत्तो किरियावर करो, पण परसूं बाबू री नुई री नुई वेट टोपड़ियो ल्यायग्यो, वींरो किरियावर की पर कियो, दियोड़ो तो अमर हुवै अर जिकै में म्हारलो पतम दूसरो कोई करलै काई ?"

"ओ तो बाप आपरो किसब है।"

इत्तै नै वीरो पोतो आयग्यो, बारै-तेरै बरसां रो, बोल्यो, "दादीसा लावो भाड़ो देवो, थे कैयो हो नी, मैं मरघोड़ा दो कबूतर उठाया हा नी बरामदै मे सूं काल।"

"माग रो सागै तूं छाती बाळन नै भळै कठै सूं आयग्यो", वा उठी, एक कटोरदान संभाळयो, दो तिलिया लाडू सकरांयत रा कियोड़ा, सात महीना पैला रा ऊवरघा पड्या हा, ला'र दिया। छोरै एक दांतां नीचै दे लियो, घणो ही जोर लगायो। बोल्यो, "अै काई लाडू दिया है दादीसा ?"

"तो थारै खातर अवार कढ़ाही चढाऊं, लाडुवा जिसा लाडू है, इसो तैं कांई होम कियो म्हारै, फोड लै कोई भाठै सूं।"

इत्तै मे घनजी आयग्यो, वोल्यो, "क्यों, कांई रोळो है नथियै री मां ?"

"अन्नदाताजी, पेट तो म्हारै ही है, भरीजै नही जद कैणों तो की पड़ै ही।"

"इत्तो बडो गांव है, अर थारो पेट ही नी भरीजै पेट है' क गोदाम है कोई ?"

"वडै नै कांई सिर पर उखणूं ? छूंतको-सी पतळी, थारै आठ-दस घरां मे रोट्यां आवै, एक टंक तो छैर होरो-सोरो काढदां पण सिड्या तो हांडी चढाणी ही पड़ै, मूंघाई थांनै ठा ही हैं, आठांना रो थे एक मिरकली तेल देवो, एक साग ही सावळ नी छमकीजै। अधवै की चाय-पाणी ही चाईजै, मिर्च-मसालो ही लागै, अन्नदाताजी एडो-मेडो ही वापरै, खाली म्हारी बैठी इत्तो स्याणप क्यों करो—लिछमी वधावो भगवान।"

डोकरी रो बेटो भळे आयग्यो, वोल्यो, "रोज री एक गधो तो थारै घर

सू ई भरीजै, रिपियै मे नी पोसावै, रिपिया तीन देणा पड़सी, ई मूं तो जाट, जमीदार दूसरा आछा, कदेई कोई मिन्नो-कुत्तो उठा लियो, अर होळी-दियाळी तिवारी लेयली, खळो वापड़ा न्यारो घालै ।"

"मा, दो अर बेटो तीन, लूटलो म्हानैं सुखदाई हुसी", सेठ कैयो ।

"ना अन्नदाताजी, लूटण-घूटण री जबान मत काढोना, फळो-फूलो मेवै रा रू ख हो थे, म्हे तो दिया लेवा, म्हारै सागै घणो नाम्हो लेखो करता थे फूठरा नी लागो ।"

"ठीक है, ठीक है, कामडो टैमोंटैम करता रैवो, एक रिपियो और देस्या ।"

वै मा-बेटो छेड़ै हुया, का पचायत री कोटवाळ आयग्यो, "सेठ सा'ब, "अबार रा अबार बुलावै आपनै, थाणैदारजी आया है ।"

सेठ चमक्यो एकर, फेर की संभळ'र पूछ्यो, "क्यों आज इसी काई बात है रे भीमा ?"

"पूरो तो ठा नहीं सा । पण गुरबराट सू की आ ही भणक पड़ी कै नसबन्दी री ही कोई रोळो हुणो चाईजै ।"

सेठ गयो, आगै देखै तो सिरपंच, थाणैदार, पटवारी, गांवसेवक, दो-एक गाव रा चलता-पुरजा आदमी और—अर सागै सेठ हजारीमल बैठा हा भेळा हुयोड़ा । जैरामजी री कर'र, धनजी ही जा'र एकै पासै बैठग्या ।

थाणैदार कैयो, "आवो सेठां, सगळा ही सुणो थे, नसबन्दी खातर बड़ी करड़ाई है, सरकारी मुलाजम नै तो आख दीठो ही नी छोड़ै राज, चावै बो कितो ही सिफारसी हुवो, कण ही थोड़ी-सी चूचप्पर करी, बीनै बी बेळा ही ससपैंड, तिणखा रोकदी अर घणी तीन-पाच करी तो बी बेळा ही कम्पलसरी रिटायरमेंट—बोलो कोई काई करै ? तैसीलदार, नाजिम बी बेळा अर बठै ही फैसला क^—गावा रा आदमी जावै वानै कैवै—एकै कानी नसबन्दी—एकै कानी फैसलो, पेसकार, पटवारी सै सागै—कैंप रै कनै ही कचेड़ी । राज सू थोड़ो ही सकीजै । समझा-बुझा'र लावो लोगा नै, नही तो जोर-जबरदस्ती करणी पड़सी ।" सगळा सुणै हा चुपचाप, अर देखै हा टुकर-टुकर थाणैदार सामो ।

थाणैदार ही देख्यो एकर चारूं सामो बी रौब सू, बी बेळा ही समझग्यो,

हां बात की असर कियो है। अवाज भळे निकळी सागी ही सुरा मे, "मनै कह राख्यो हैं अफसरा, म्हानै ठा नही किया करो, थारै हलकै सू डोढसै केस तो हर हालत में हुणा ही चाईजै, नही हुया तो ना-काबलियत तो है ही, नौकरी पर ई रो काई असर पड़े, कोई की नी कह सकै। पटवारीजी अर ग्रामसेवकजी थे जावो, आज आठ बजी अथवा दस-बारै बजी ताई दो-दो आदमी लावो — साठ रिपिया मिलसी बानै, जीप मे आपा चढा'र लेजास्या, अर चढा'र ही कालोकाल घर मे बाड देस्या। हा सेठा, दो-दो आदमी थे कर'र देवो, "ब्याज-बिस्वै रो काम करो'क नी ?" थाणेदार थोडो करड़ाई सू दोनू सेठा नै पूछ्यो।

"करा सा।"

"लाईसैंस हैं ?"

"नही सा।"

"तो सीधा ही जावोला हवालात मे।"

दोनू ही देखण लागग्या थाणेदार सामो, काळजो जाग्या छोडण लागग्यो। थाणेदार बोल्यो, "तो पूरी मदत करो राज री, आसाम्या नै पटाणो तो और ही स्सोरो है, थारो कोई केस है तो मनै बतावो।"

"सा, पूरी कोसीस करस्या।"

"पूरी-अधूरी हूं नी समझू, पाच-पचास गाठ सू देणा पड़ै तो देवो, नही तो थे खुद ही फेट मे आ सको हो।"

"म्हे अबै, म्हारी तो ऊमर ही निकळ···", हजारीमल कैयो। सेठ रो बोल पूरो ही नी हुयो बी सू पैला ही थाणेदार बीनै काट दियो, बोल्यो, "ऊमर-धूमर की नही, राज रै तो कोटो पूरो हुणो चाईजै, अर सिरैंपचा थे ही पधारो, दस-बारै आदमी तो हूं जांवतो लेजाऊ लो ही। कोई की ओडो देवै तो मनै बताया।"

उठ-उठ सै सिकार री खोज में निकळग्या।

पटवारी री केयां पर आख ही, केया सागै सिरैंपच री नाराजगी ही, रड़क कांढण रो आज जिसो मौको भळे कद आसी, जिता राजी वै हा बित्तो और कोई ही नी हो।

हजारीमल बोल्यो, 'धनजी, आवैनी, आपणं बूढै-बारै कठै ही पीड़

करदै, राज री काई आंधो है बो तो ?"

"सेठा, मुरदै सागै काधिया ही बळै कदेई, किसी ही गोरमिट हुवो, आपणो सिक्को तो सदा सू ही सिकतो आयो है। लिछमी रा बेटा हा, लोकी रा लख मारग है।"

"तो आपानै अबै किसो चवरी बैठणो है ?" हजारीमल हंस'र कैयो।

"नही ओ, अंगभग तो सुणी है, होम मे ही नी बैठ सकै, जियो वापडा, घणा ही है गाव में।"

हजारीमल रै घर कनै बरस बाईसेक रो छोरो बसै साधा रो। गूगो है—जीभ जल्म सूं ही नी उथळीजै वीरी पण काम करण मे सैंठो है। मजूरी जची तो करली दो दिन, नही तो च्यार दिन सामो ही नी जोमो। गवाड बिचाळै पीपळ रो गट्टो है, बी पर चरभर खेलली, का मिन्दर रै गुभारियै मे, पंडित रामधन रै सामों बैठ'र चौपड री कौडयां फैंकदी, समझ सगळी है। एकलो ही है। आपरै झूपड़ियै मे दो टिक्कड़ सेक'र मस्त। आटियो कदेई नीवडग्यो तो, चरूड़ी मांग लावै। अमावस-पुन्यूं हजारीमल ही पाव-डेढ पाव आटै रो सीधो घालदै। सेठ देख्यो, मूततै नै भाधोसाई, ओ फायदो तो आपा ही उठावो। एक तो बीनै अर एक आपरी आसामी—बरस चाळीसेक रै एक कोटवाळ नै त्यार कर दियो। "ब्याज-बिसवो की कवळो कर देस्यू, अडी में आटो काढ देस्यू", इत्तो कैयां पछै गरीब आसामी री नस बाढै तो ही एकर तो नी बोलै।

धनजी ईनै-बीनै आख पसारी—रामद्वारै में बरस साठेक रो एक साध है साव भोळो अर सूधो। गोरी कैया ही ढीकै अर काळी कैयां ही। आधो भगवों अर आधो धोळो। सेठ सोच्यो जै ठीक है नी, न कीरो ही घर ऊजड़ै अर न कोई बीनणी विराजी हुवै आं बिना। होळै-सै फीचा में देवां तो आपणी गिरै टळै। बोल्यो, "पधारो सन्ता, आज सिंझ्या थोड़ो जीप मे जा'र आणो है, काल भोर में थानै, डागधर दो मिंट देखसी, फेर हाथोहाथ ही थानै मोटर अठै उतार दे'सी।"

"रामजी राम, आप जाणों, देख ही तो जाणो पड़ ही, आप हूं कियो छानो है ?"

इया ही बरस पैंताळीसेक रै एक नायक नै और चकरी चढ़ादियो।

दोनू ही बरी हुया । ओड खदेड़ै नीचै कद आवै, मजो ओ कै दोना रो ही टक्को लाग्यो न पइसो, डाकण वेटा देवैक लेवै, पण ?

7

टंकी सू आयूंणों, पावंड़ा पचासेक दीपा दरोगी रो घर है—एक जूनी साळ अर एक कुच्योड़ो-सो झूपडो, घर रो मंडाण बस इत्तो ही । झूपडै मैं थूणी दे राखी है, वीनै ही आधी-पड़दी छाण राखी है उदीवळां । साळ में दियोड़ी घणी किरम्यां, जागा छोड़ राखी है, कोई-कोई पड़ हीगी । वा पर दियोड़ा पुराणा चट, खज'र खतम हुया । कदे कणास बा मा सू इक्का-दुक्का काकरा पड़ता रैवैं । मुळी कड़चां अर किरम्या रै वेजका सू छणतो आटो साळ रै आगण पर पीळै पाउडर री टीक्यां माडदै । च्यार सैतीर है, दो बिड़क्योड़ा अर दो की ललसर । पचास साल पुराणी ई साळ नै, लखदाद है दीपा नै, ओजू नी डिगण दी । पाणी रो पारियो अर गारै रो कूडो, चेतै उतरण ही नी दै पण अवै खुद ही दो पग आगै निकळगी साळ सू, न डील ही पूरो सभै अर न सोझी ही सावळ काम दै ।

आधी साळ मे लादेक कुतर-पालो राखै—झड़झाखड मे गाय नै नाखण, अर आधी में आपरो मेला-छोडो—गूदड, माचा, टैण री एक पेवटी अर एक तणी पर दो-तीन सेसला, काम्बळ अर भाखता—ओ इत्तो-सो पसकर । झूपडै मे चूल्हो-चाकी, हांडी, पारिया अर एक छनेडी पर छाणा-बळीतो, नीचै वीरै, आटो-चूटो अर दो-तीन कूलड़िया में लूण-मिर्च ।

जित्ता आसराम—बित्ता ही जीव घर में, मा, बेटो । डोकरी पैसठ रै आमै-पासै है अर छोरो बरस छाईस-सत्ताईस रो, नाव तोळू है । दो टाबर और हा पैला, एक पान लाग'र पूरो हुयो, एकनै पाणीझरै उठा लियो । तोळू अंग रो की भोळो पड़ै, पण भुळायो काम मर्ज रो करै । सरीर रो चलतो मोटियार, पाणी रा घडा लावै अर खेत-खळै रो सगळो काम करै ।

अबार कीरै ही वडसियो जावै, का मजूरी रा सात-आठ निविया ले'र घर में बडै। डोकरी रो हाथ एक थोड़ो धूजै।

सावण मे अैसकै मेह हुयो जद, साळ चोई दो जाग्या सूं अर झूंपडो झरचो घणों गळचोडो हो वठै सू। साळ मे बोरो एक कचरो भीजग्यो; पीडिया वधण लागग्या जद काढ'र बारै नाख्यो। तणी परला पूर आलागार हुग्या, वानै सुकोया, लेडा मे कीलो एक सिरमट पाई—धनजी रै अठै सूं ली रिपियै कीलो। झूपडो इया ही रैयो—आगै बात चौमासै पछै। अबै आभै पर भळे भीड है वादळा री। डोकरी बोली, "तोळू, काटक'र पड़ी बिरखा तो, बेटा, सिर ही कठै लुकोवाला, हाडो ले वैठसी गणगौर नै, डगळिया छेडै जा पडसी, आपणै सू भळै जळदी-सी खडा होनो हुवै। तू कूडा दो-एक तळाई-आळो मुरड ला, अर हूं इत्तै गारै सू बीडी दडलू, मेह अर मौत रो काई भरोसो लाडेसर, कद आ पडै।" वो बोल्यो, "मा, कोई बळध-गाडियो माग'र पाच-सात कूडा सागै ही। नांख लाऊ, लेठो मिटै केई दिना रो।"

"हा, ओ तो और ही आछो वेटा।"

वो मुरड नै टुरग्यो, आ गारो घाल'र बैठगी बीडी दडन नै। कूडै नै एक कोर पर ठैरा राख्यो हो, कापतै हाथ सूं गोबर रो लोयो काढै ही का कूडो पडचो नीचै, खळीळ बाज्यो, भली हुई आप नी पडी। खडको सुण'र पडोसण आयगी, डोकरी नै बीडी पर बैठी देख'र बोली, "वूढै-वारै कुनाव करस्यो काई, छेडा हुवो, हू दडदू, हेलो मार लेणो हो मनै।"

"न्याल करसी बीनणी, थारी वेल बधती किया ठाकुरजी, थारै ही आसरै पड़ो हूं।"

"आसरो ठाकुरजी रो है, पण अबै तो दादी, दो महीनां रो फोडो और समझो, देवठणी नै तो आई बीनणी ?"

"भूखो धायां पतीजै बीनणी, थारो मूढो घी-सक्कर सू भराऊं, बो दिन हो कदे ही देगू।"

"गैणियो तो चढा दियोनी ?"

"चादी रो एक बोरियो अर पगां में पायलड़ी है छूतका-सी, और काई गैणो हुवै बीनणी, ओ ही निठ ताबै आयो है।"

"वो रीत-भात लेवैलो सगो ?"

"हजार-आठसै तो लेसी ही बीनणी, लेवो-लिरावो, की माथै-चोटी अर की गाय-गोखी बेच, वट'र एकर नाको तो किया ही निकाळनो पडसी ।"

"सुणी हैं दादी, छोरी में की कसर है ?"

"कमर बीनणी, घर-घराणै मे तो आज तांई ही नी सुणी, सोळवों मोनो है, छोरी री एक आंख में छाह है मोठमान । घरे आया पछै जे कीरी सफा ही फूट ज्यावै तो, बो कीनै पुकार करै, बिया दोलडै हाड अर भर मांभणआळी है । हूं तो बहू, जे बा सागै थोड़ी खोडी हुवै तो ही राजी हू, आगणै धिरती नै तो देखू कठै ही, खाली आगणो घणों ही अडोळो लागै पण जोर काई ? अबै लाडेसर, न तो गारो-गोबर ही हुवै, अर न गावडी ही सावळ निचोर्दजै । धणी में काई है, टुकड़ो ही सावळ नी सिकै । ओ देख लूं पूजै कनै, तोवै पर रोटी उथळती बेळा, चरड़को चेपलियो ।"

"ओ, खासो बाळ लियो, फालो ऊपड़ग्यो, तेल री आंगळी लगाई हुती बी बेळा, को ध्यान राख्या करो ।"

"भाग रो तेल ही नी बळै हो, तो ही कूलडियै मे पडयै चीटै री चिकणास लगायो की, फेर ही ऊपड तो गयो ही । झूपडियै रो तो मतो नी हो तो ही छवायो काल कीं, चानणो दीखै हो माकर, मेहआळै दिन बेवणी ताई आयगो, पाणी, समक रात नी सोई पाणी उळीच्यो, टापरियो की ललसर करलू तो चौमासो कराम की रूसोरो निकळै, पछै तो छेकड़ कदेई कबाड़ियो उतराणो ही पड़सी, बहू, ई टैम में अबार भीतळी ही खडी नी हुवै, नुंवों आसरो करणो म्हारै तो भाखर मू भागीरथी उतारणी है ।"

पाडोसण बीडी दड़ै ही, डोकरी आगणै मे ऊभी ही, का इत्तै मे ही हीरो नायक आयो बोल्यो, "दादी कालआळा पइसा झूपड़ो छवाई रा ?"

"बेटा, एक-दो दिन ठैरै तो, माईताळी करै, पीरू तोळियो आपरी दैनको लासी, हू बिना बतळाए ही पुगाऊ घरे ।"

"पीरू कीनै, मनै आज चाईजै सिझ्या तांई, मैं पैला ही कहदियो हो तनै कै पइसा देणा पडैला काल, अर तै हा भरी ही ।"

"भरी ही भाई, किसी कूड़ बोलू हू, नही ठैरसी तो लासूं कठै सू ही, पण इसी अबार काई कुड़की आयगी थारै ?"

"कोई सगो-सम्बन्धी आयोड़ो है, सिझ्या की गुटकियो बांनै देणों

वाळनो पडसी ।"

"वाळनजोगा घी-लापसी कर'र खुवावैनी, बो मूत में कांई काढस्यो, जूतम-फाग और हुस्यो कठै ही ?"

"की हुवो दादी, जाग्यासर सै ही करणा पड़ै, आदमी और कमावै क्या खातर है ?"

"हा ओ पीवण नै ही कमावै, काढ राड दादी रो नाव, हूं तो ला'र देस्यू ही, कीनै जोर करस्यू, घडी दो-एक नै आए तू ।"

बो गयो अर गई पाडोसण ही । डोकरी झूंपडै में गई । छनैंडी नीचै गळनो बधी एक तपेली ही डोढ कीलै री । घी हो बी मे । निचो-निचो, महीनै भर मे भेळो कियो हुसी । थोडी-सी काकरी सू तोळू री रोटी रो पापड़ भाख देंवती, सिझ्या बीरै खीचडै मे की सुगन्ध कर देवती, आप बापडी नै तो घी हो ही कठै, "मफा भूत भोजन नही करणो", ईं खातर छछेड़ू री लाळ की वा ही नाख लेंवती, जीमती वेळा ।

गळनो छेड़ो कियो, पीळो केसर, लीला रो घी । सोचै ही, "आज हडमानजी रै खीरै पर ही दो टोपा नी नाख्या, छछेड़ू री लाळ नांखी ही, खीरो चड-चड करै हो, दो टोपां मे किसो मुनाफा करै ही, केस खोस्यां किसो मुडदो हळको हुवै हो, अवै सगळो वेचणो पडसी, कुण देसी पूरा पइसा मनै, पण चाय घर मे चिवटी ही नी है, बी बिना तो दिनूगै लोटो उठावण री सरधा ही को हुवैनी । सूघणआळी तमाखू ही कठै, फेर उठ'र चाडियो देख्यो गुड री दो किरची पडी ही, आनै-डोढानै भर निठ हुवैलो, मिरचां रा फोलरा लाऊ—जादा नही तो पाव-खड ही, एक कीलो खाड तो लाणी ही पडसी—तेल तो अवार धिकै कैई दिन इया ही, रावडी-कड्ढी सू काम निकळै । पण इया किता दिन धिकसी, एक-दो दिन धिक्या ही किसी पार पडी, हीरियो तो अवार आयो रै'सी दो घडी नै ।" वण एक पूर नै ईंढूणी-सी कर'र तपेली सिर पर ऊचली, झूपडो बन्द कर'र टुरगी । मास्टर रामजस मिलग्यो टकी रै आगलै पासै । पूछ्यो, "काईं ऊंचलियो तपेली मे, माजी ?"

"चोपड है, माठरजी ।"

"वेचण जावो ?"

"हा ।"

"दिखावो", डोकरी अधर-सैं तपेली उतारी, गळनो खोल्यो, मास्टर घी देख्यो, घी अंधेरै मे ही छानो नी रैवै। सुगन्ध ही कह दियो, तो ही बण थोड़ी-सी आगळी डुबो'र नाक मे दियी। बोल्यो "मनैं लेणो है माजी, भाव फरमावो ?"

"माठरजी, मनैं काईं ठा थे रात-दिन लेवो जिका जाणो।"

"तेईस रिपिया देस्यू माजी कीलै पर, पण रिपिया दस तो थे अवार लेवो, नगद, बाकी तीन दिन ठैरणो पडसी, तिणखा आई अर दिया नी।"

"माठरजी भाव री तो की नी, पइसा तो मनैं हाथोहाथ ही देणा पडसी।"

"तो जावो माजी", अर बा फेर टुर पडी, घनजी री दूकान कानी।

होळै-होळै चालती, बा सेठ रै वरामदै मे जा'र बैठगी। पांच-सात मिट बाद, घनजी आप ही आयो बरामदै कानी। डोकरी नै देख'र बोल्यो, "बोलो माजी, किया पधारणो हुयो ?"

"चोपड़ है, कीलो डोडेक।"

"ताजो है ?"

"एकदम महीनै-बीस दिना रो, घर री गाय रो।"

"सेळभेळ तो को है नी ?"

"ओजूं तो लारै किया वै ही को नीवडयानी सेठा, अबै कितीक रात कितीक झाझरको, नुवैं सिरैं सू भळै पोळाऊ, चेतो गाव गयोड़ो है।"

"नही हैं सेळभेळ तो आछी बात है सुख पास्यो, लावो दिखावो देखा ?"

डोकरी छेड़ो कियो गळनो, सेठ दो आंगळी आछी सी भर'र झट बाकै मे घातली, को हाथ रै ऊपरलै पासै लगा'र थोडो मसळ'र सूघ्यो।

"ठीक ही दीसै, घी तो, दाम बोलो ?"

"दीसै री मा रो काईं लेणो-देणो है सेठां, चूरमो कर'र जीमलो, काळजो धुखै तो दुसमी मे हुवै वा म्हारै मे किया, दाम हू कांई वताऊं रात-दिन लेवो-देवो थे।"

"अट्ठारै रिपिया है।"

"की तो सावळ फुरमावो, घरे आयै रो ही दोम है काईं ? सहर मे तो तेईस-चौईस रा भाव बतावै।"

"तो माजी सहर ही लेजावो, अठै रा फोडा ही क्यों देख्या ?"

"हू ही तो सहर जावती तो अठै कीडयां मारती क्यों आवती, थारी दूकान ही काई ठा किया नैडी ली है, म्हारो ही जी जाणै ।"

"सहर मे माजी केई चुगी, केई टैक्स, आवण-जावण रा भाड़ा-तोडा, किता रगडा है, म्हारै तो ई मे रिपियो आठाना मजूरी हुवै तो हुवै, नही तो सुवा-पूरा ही सही, धन्धो है, की गाहका लारै ही चालणो पड़ै ।"

"देखलो, दाम तो कम है सेठा ।"

"खैर देख लेम्या, गिरधारी ?"

"हा सा ?"

"लै ओ ठाव लेजा माजी रो, खाली कर'र झला अगला नै ।"

थोडी ताळ नै वण आ'र कैयो, "डोढ कीलो, दस ग्राम है ।"

"दो माल हुग्या तोलो-जोखो करतै नै तनै, दस ग्राम रो कोई हिसाब हुवै घी मे, काई पीपळामोळ है ओ ? बीस-तीस ग्राम तो ई मे छाछ ही हुवैली, ध्यान राखणों चाईजै, बौवार, बौवार रै तरीकै सूं करणो ।"

"नही सेठा, छाछ जे मामो ही हुवै तो चोरा मे करो वा म्हारै में करो ।" डोकरी बोली ।

"अरे माजी हुवो चावै मत हुवो, हाड सू मास कोई न्यारो थोड़ो ही हुवै, किती ही सावधानी राखो कुतर मे दो लप गुद्दी तो निवळै ही, घी निकाळो तो छा मे सू ही हो, पइसै डोड-पइसै भर रा कोई दाम देदैजै है काई, आधो पइसां अवार उडतो तो म्हे किसा पांच ओछा देवता थांनै ।"

गिरधारी बोल्यो, "दाम ?"

"दाम साढी अट्ठारै सू फळा'र दे माजी नै, आठाना रो लाड ही सही डोकरी रो । और कांई चीजवस्त तो बयानै लेणी है माजी ?"

"लेणी है सेठा", डोकरी बोली ।

"तो जावो दूकान मे लेवो ?"

डोकरी पन्द्रै रिपिया रो समान लियो, अर बारै रिपिया पिचतर पइसा नगदी, ओढणी रै पल्लै बाध'र टुरगी । होळै-होळै चालै ही अर मन-मन मे हिसाब फळावै ही । "तेईस रै भाव देवती तो साढी च्यार तो एक कीलै मे गया अर सवा दो आधै कीलै मे, च्यार अर दो छव, आठाना अर च्याराना,

बाराना, लै, छव रिपिया बाराना रो लढीड़, बी बेळा तो बात नैं सफा ही नी गिनारी मैं, आठाना रै लाड रो ठसो भळे उपर, डोकरी नैं समूची नै गिट लेणी ही आगडी, पिंडो छूटतो, टीको काढ राख्यो हो, इसा ही हुंता हुमी भगत। छव रिपिया बाराना कांई, सात ही समझो पूरा, दो आगळया लूंठी भर'र चाटग्यो, इया कांई कड्ढी ही, मैं तो कदैय धूपियै माथै ही दो टोपा नी नाख्या। कित्तो दोरो निचोयो हो, पाछी जाऊं, सेठा ओ कांई कियो ?"

एकर बण मूढो दूकान सामो करलियो, एक ही पग आगीनैं दियो, का भळे विचार आयो, "अब कुण तो थारी गुणसी, दो आदमी बैठा हूसी बठै तो, कैसी अधगूगी रंडार है, माथो खराब है, कोझो लागस्यू, इत्ती वडी हु'र ही की सागै दो जवान नी हूई तो अवै बाळन नैं, पाणी पी'र वयारी जात पूछणी हैं", डोकरी पाछी ही मुडगी घर कानी।

रस्तै मे रामजस मिलग्यो, पूछ्यो "दादी बेच दियो घी ?"

"की वेच्यो न बटचो माठरजी, कुपाळी ऊधी हुगी बी वेळा, घालतै रो घी लूखो है।"

"कांई भाव दियो ?"

"साढी अट्ठारै, बी मे आठाना रो लाड भळे और है, डोकरी पर।"

"सहर मे बढिया घी पच्चीस है अर बो ही थारै जिसो कठै पड्यो है ?"

"घणां कह'र म्हारी काया मत सिजोवो माठरजो, मगत मागै हो धन्नो बाणियो, चूकली आपरी।"

डोकरी घरे आई, चीजा घाली-मेली, थोडो साम था'र, खीचडो चढायो। गारै-गोवर सू हाड दूखै हा, मिरियै एक दूध री चाय करी जद जा'र की समवी हुई। हीग्यियो आयो, बीनै पइसा दे दिया। गाय दूही, कुलडती मे थोडी छाछ घोळल्, खीचडियो की मोरो मिटीज-सी। रात पडगी। सोचै ही, "अंधेरी रात है, बादळ न्यारा, तोळू ओजू को आयोनी", लारै गई, "मुरड तो नाखग्यो दीखै, गाडो पाछो देवण गयो हूसी। घडी, दो घडी, च्यार घडी--रात गई परी, तो ही को आयोनी ओजू। खीचडियो नाखलू की, नहीं...नही...बी आया बिना कांई जीमू।"

अधघडी और उडीकी। फेर उट'र पाडोसण नैं हेलो कियो, "हैं ए

बीनणी, पूछ, ए कीनैं ही, तोळियो नी आयो सोजू, इत्ती ताळ तो कदेई को लगाया करै है नी ?"

"दादी की ठा नी रात तो खासी गई।"

डोकरी पाछी ही आयगी, मचली कनैं। दस-पांच मिंट हुयगया। फवारिया ओसरग्या। "अरे, खीचड़ियो भीजसी", मोच'र उठी अर हारै पर कूंडो दे दियो। मचली ने'र झूपड़े मे गई। बिरखा जोर मूं शुरू हुगी। गाय बारै है खोलदू, झूपड़ै रै ओटै खड़ी रैसी, अर टोघड़ियो ? रासो ही है जी नैं, पूरो दीखे माळै नी, पडस्यू चीखलवाडै में कठैं ही तिसळ'र।

उठी, गाय नैं खोलदी, अर टोघड़ियै नैं झूपडै मे ला'र आपरी मचली रै अटका दियो। "छंगास अर पोठा करसी तो करो भई, उठास्यूं।" भीजगी, ओढणी उतार'र खेसलो ओढ लियो अर आडी हुगी, पण नींद नी आई, तोळू री चिन्ता अर डील दुखै हो—मरती न्यारी ही। "तोळू नी आयो, कांई हुयो, कोई अैरू-काटो तो नी लडग्यो है, हे हिराम (हरीराम) बाबा, गोगापीर भली किया, थानैं मिनख ही चाईजै तो मनैं उठा लेया, छोरै रै काटो ही मत लाग्यानो। सेत उठग्यो हुसी, पण कह'र तो जाणो चाईजै। चिन्ता ही लिख्योड़ी है जी नैं, लुक-लुक काई ठा किता काळा चाख्या, छेडो ही नी आवै ?"

पसवाडो फोरयो, "कोई सुलखणी बीनणी आगणै पग मांडदै तो? अबै बोल-बतळ ही की सागै करू— दो महीनां घटै, गिण-गिण दिन काढू।" मेह बरसै हो, आधी'क रात हुई हुसी, धम्मीड सुणीज्यो, आ लै, माळ पडगी दीसै। "उठू ? पण उठ'र करस्यू कांई, हाथ नैं हाथ को दीपैनी, दिनूगैं ही बात।" न आख में ही बट पड्यो अर न तोळू ही आयो।

दिनूगै उठी। साळ देखी। सैंतीर टूटग्या अर मुरड री येह हुगी। अध-टूटी भीता बाकी तेडचा खुलै आभैं कानी देखै ही। कुतर अर पालो पाणी रा पीडिया हुग्या। गाभा अर मचली-माचो सैं मुरड़ नीचे आयग्या। कोरी ही देस टूटगी अर कोरी ही उपळो। पाड़ोस रा दो छोरा अर दो-तीनेक लुगाया, सै कानी-कानीं लाग्या। एक छोरो बोल्यो, "दादी, अबै भाभी नैं सावण री फुरती कर, बाजो थारै सू पार पडतो नी लागै।"

एक लुगाई बोली, "हा अवार थकी ही ला, सासरै रो गढ तो देखनैं।"

डोकरी बोली, "काईं ठा कियां आसी रे भाभी थारी, राम नै ठा भाई, दादी आं डगळिया में पूरी हुसी कदेई, पछै आवती रैया भाभी, हूं तो अठै देखूं नी।"

गाव में कच्चा घर केई पडग्या, अर खाडा-खोरा तो खासा ही हुग्या। बारै बजगी, डोकरी ओजूं भूखी है। साळ रै डगळिया पर बैठी-ईंनै बीनै आख्यां फाड़ै ही। फेर पूरा नै काढ'र सुकोया, सोच्यो बरतण-भाडो कोई है तो मुरड छेड़ै कियां लाधसी।

गाव में जाऊ ही, पण घर नै ईंया उघाडै बारणै छोड'र किया जावै। पूर-पूल्लो अर ठीकर-ठोबर हाथ आया वै तो कढाया। अबै जाऊ ही, का एक छोरो आ'र बोल्यो, "दादी तोळू काको आवै।"

"कठै गयो हो रे?" डोकरी पूछ्यो।

"राजआळा आया रात जीप ले'र, आठ-दस जणा नै लेयग्या नसबन्दी खातर।"

तोळू होळै-होळै चालतो, आ'र ऊभग्यो मा कनै, साठ रिपिया हा जेब मे, मा रै खोळा मे नाख दिया। जा'र मचली पर आडो हुग्यो झूपडै मे उदास अर मू लटकायोडो। सुणता ही डोकरी उठ'र चाली पण तिरवाळो आ'र पड़गी। बीरी पायल रो ससार आभै रो फूल बण'र सपनलोक मे रमग्यो।

8

नसबन्दी रै रोळै नै ले'र, आसै-पासै रै और गावां दांईं, ई गांव री हवा में ही डर कम नी हो। जीप रै हरडाट सू लोग ईंया ही चमकता, अबै'स पूछणो ही कांई? गांव भर मे एक ही चर्चा है। गवाड़ मे दस-बीस आदमी भेळा हुग्या, छतै री माख्यां-सा दस आवै अर आठ जावै, भीड़ को न को बधतां ही लेखो। एक जणै कैयो, "ओ कांई राज आयो आठ गिणै न साठ,

धक्कैबाजँ बीरै ही दे लारको, तोळियै दरोगै नै बाढ दियो, डोकरड़ी बापड़ी डूबगी काळी-धार।"

दूसरो बोल्यो, "रामद्वारेआळै भोळियै बाबै नै ही नाख लियो जीपड़ी मे अर साधाआळै गूगियै नै ही नी छोड्यो। बारै किसा तो घरां मे टाबर नी मावै हा अर कुण बा बापड़ा नै बीनण्या देवै—काई फायदो हुयो ईं सू— कोई पूछणियो ही तो हुवै।"

परिया सू पदमा जाटणी आवै ही— बळध अर गाया नै पाणी पावण। बरस पिचत्तर नैडी है। डील सू लूठी, सोझी सावळ, बेटा-पोटा, धीणो धापो, राम राजी, धाकड लुगाई है। बोलण मे खरी पण अकरी है, मौको आया पुरसदै तातो- तातो, अगलै नै दाय आवो भला ही मत आवो। बळ ही है बी कनै अर थळ ही मोकळो। कायदो बी रो सगळा ही राखै। भीड़ कनै आ'र ऊभगी बा, बोली, "क्यारी पचायती करो हो रे ?"

एक जणो बोल्यो, "बडी ! नसबन्दी री बात करा, गाव मे कोई बोलण-आळा ही नी दीसै, इंया ही तो सैं रोळा करसी अर जीपड़ी आवै जद सैं हाथ जोड'र देवळी आगै ऊभै ज्यू अफसर रै बाकै सामो देखण लाग ज्यावै।"

"जीभ तो थारै ही बळे है नी, बा तनै काई कीरा ही तळवा चाटण नै मिल्योडी है, डेडरियो सो टर-टर करतो ही रैवै आखो दिन।"

"हू एकलो काई करू बडी ?"

"अरहू पूछू हू कै थे सगळा काई करो, मीगणा ? पागड बाध राख्या है, अर मूछा रै वट दे लिया, लारै की रैयोनी, गाधरिया पै'र-पै'र घरां में टूकडा सेकता तो ही जाणां की—स्सारो तो है। चुणाव री टैम आवै, टुक-डेला ने की दीयणो चाईजै आंगळी टिकाव, बोतल अर वडळ पेटी मे बिक'र अळगा हुवै। काई बोलो थे, की जोगा हुवो तो ? 'एकलो काई करू'', कह दियो लारै की रैयोनी, की पाणी हुवै चैरै पर, बो तो एकलो ही की छउ री पवदरा करै, थारै सू ताबै नही आवै तो पचायती नै थारो मू क्यो बळै, म्हां लुगाया नै जांवणदो, म्हे ही देखा तो सरी, थारै तोपधारी अफसरा नै। काल मिली ही तोळियै री मा, दम दोरो आवै हो, पूछ्यो मैं, 'है ए गुणी है, छोरै रा हाथ बैगा ही पीळा करू है, छोरी रुप तो ली नी ?' बोली, बडायण नै

काई ही, एक बोरियँ री डोडी, अर छूतका-सी एक पायल री जोडी।"—तो जद पक्की है, घूड़ खा'र आपँ ही देसी फेरा, अबै वा बोरियँ री डोडी थर पायल का तो थाणेदार नै पैराबो का धिंगाणे भेजणियँ री मा-राड नै और तो कुण पैरँ वानै ?"

पदमा री कथा सुण'र सूरदास ही आयग्यो। भगवो तैमलियो अर बिसो ही एक चोळो गोडां ताईं रो। गाव रँ बारँ जसनाथजी री मढी मे करँ उठा-बैठो। बोल्यो, "आख्या गया आधा कम हुवै बाई, थका आख्या आधा घणा हुवै। बस्ती रा टुकडा खाऊ जद मनँ ही की दोरी लागँ, चालो मनँ खडो करो कठै ही फासी रँ तख्ते पर, इया घर ऊजडँ अर आदमी होठ ही नी खोल सकँ, जोर री बात है, बोलता ही माकर निकळै तो निकळो, भय नीचँ ऊम'र आदमी कदेई नी पनपँ, जेल ही तो हुसी, टुकड़ा अठँ नही बठँ ही सही।"

एक जणँ कँयो, "बाबा, बठै रँ टुकडा भरोसँ राजी मत हुए, बठै तो साता री लापसी अर घुत्ता रो घी है।"

"राड सू बेसी तो गाळ नी हुवँ मारसी ही मारो, अठै हू बिसो सिंहासण भोगू हूं, पराधीन जीवण सू, स्वाधीन मरणो आछो।"

एक बोल्यो, "सिरँपंच नै चाईजँ हो, लोगा नै भेळा करतो, नसबन्दी हुवण लायक कोई आदमी निगँ करावतो।"

दूजो बोल्यो "माताजी मढ मे बैठी ही मटका करँ, बिल्ली रँ गळँ घटी बाधँ जद पसीनो पैला ही सुरू हुवँ।"

पदमा बोली, "सिरपच तो थारो इसो है कँ बीनँ गधा री गोर मे ही कोई नी बैठण दे, अर आपा बीनँ गाव भुळा राख्यो है, गाव रो उदँ ही समझो, बो है कठै ? एकर म्हारै सामो लावो बीनँ, थुथकारो तो नाखू।"

"बीनै थुथकारो ! बी पर तो खंखारो नांखणो चाईजै दादी तनै", वह'र एक छोरो भाजग्यो।

एक कण ही कँयो, "सिरँपंच, पटवारी अर गावसेवक, अबार सँ जमीदोट हुयोडा है, च्यार दिन आडा घाल'र, आ मरसी कुवै मे ही नी जावै, इतै बात टंडी-मीठी पड'र एढै लागसी।"

सिनाथ आयग्यो, बोल्यो, "दादी, इया लुक-लुक किताक दिन काढस्या

डाकू थोडा ही हा, छेकड कोई रस्तो तो काढ़चा पार पड़सी । हूं देखू म्हे दो-च्यार जणा, आपणै एम एल ए. सू मिला, बात कर'र तो देखां, की विध बैठे तो ।"

"कोई चालै तो कीनै हीं पूछलै, पण मनै एकर जरूर ले चाल बठै, बा जूंडेआळी ही है नी थोजूं ?"

"है तो बा ही ।"

"च्यार बरस सूं ऊपर हुग्या हुसी, बीरो तो चैरो ही नी देख्यो गाव में, थोडा मे अठै आ'र कांई लै ही वापडी, तनै ठा है, हू बी सागै लुगाया मे कित्ती फिरी, आपणै तीनूं वासा मे आखी रात, न आख्या मे नींद अर न बाकै मे टुकडो । बण कैयो, "माजी थे म्हारी मदद करी है, म्हारै लायक कोई काम हुवै तो कैवा कदेई, काम आपा नै किसा बी सूं मोठ उपडाणा हैं, लै थो काम है, काढ की, जाणा करै ली ही तो की !"

"देखो, भूखो तो पेट मे गया ही पतीजै, पण मनै तो बा तिल्ला में तेल माडो ही लाग्यो दादी ।"

"माडो ही लाग्यो तो टक्कै री हाडी गई, कुत्तै री जात लाधी, चाल-स्या जरूर ।"

इत्ती ताळ तो वाता रा बघार घणा ही लगावै हा, चालण रो नांव लेंवता ही मूंढा हा बी नै ही सिरकग्या, अबै दो-च्यार इसा ही खडा हा, जिका नै कोई भुवा कह'र ही नी बतळावै, दीन-दुनियां सूं सफा अजाण, रोटी रा ठाव खाली । वा आ सुण राखी है कै अबार नसबन्दी रो कोई विरोध करै तो एमरजेंसी मे बिना पूछ्या ही सीधो छव महीना री हुवै, कूटै ही दोरा, रोवण और नी दै ।

धनजी अर हजारीमल जावै हा, एक जणो गयो, दोनां नै पूछ्यो कै, "कालआळै ईं रोळै खातर सहर वाला एम एल ए. कनै, आप पधारो तो असर की सावळ पड़ै ।"

"ना भई राज सू सकोजै कोई, दिल्ली, कळकत्ते जिसै सहरा में ही जठै, कोडी नगरै सो मानखो बसै, दो मिट मूं खोलण रा हजारूं रिपिया लेवै इसा फन्नेखा वकील, गोरमिट भून दिया केयां नै गोळी सू, थारा म्हारा बठै किसा पता लागै, 'राजा जोगी अगन जळ, आरी उल्टी रीत', कीनै बैठतां

कीनै बैठे, चला'र मौत रै मगरा में आगळी करणी म्हारै नी जचै, राज मा-बाप है, जाणो ही हुवै तो सिरेपंच सूं बात करो", धनजी आ कह'र हाथ पसार दिया।

दण आदमी आ'र ही जिमी बात, पाछी ही भावोभाव अगला रै पल्लै घालदी। पदमा बोली, "राजा जोगी, कह'र इया अै सिरकै तो सिरको, आपमुतळबियां किसै दिन ढाल घुमाई ? पण, तोळियै अर गूंगियै-मूंगियै री राज नै किसी बास पड़ै ही, मरी तो की गावआळै नै ही खाई है।"

सिनाथ बोल्यो, "दादी रामद्वारैआळै मोडियै नै तो थन्नै अर बी गूंगियै नै अक्कल काढ'र हजारीमल टोरचा, आंधो अर अजाण बराबर हुवै, होम लागै न फिटकडी रंग आपै ही आछो आयग्यो, थाणेदार पर अैसान, अर थापरो संकट टळ्यो।"

"वाणियो खावै सैंधै नै अर कुत्तो खावै अणसैंधै नै, कैवा कूडी थोडी ही है ?"

"अबार रै ई राज अर आ मे काई फरक है, दादी, राज ही बाढै अर अै ही बाढै, एक अस्पताळ में लेजा'र अर दूजो दूकान मे, पण दूजो राज सूं ही ऊंचो पड़े, बीरो जचा'र बाढ्योडो, जियै जितै ही सूंबो नी हुवै।"

"कोई मत जावो रे, आपांनै तो बानगी देखणी ही है एकर, होम करतां हाथ बळसी तो बळो।"

दूसरै दिन, भोराभोर, पदमा अर सिनाथ दोनूं पूगग्या; कुसमा कटारिया रै बगलै। दस मिट ही मसा हुया हुसी, सूरदास ही आ पूग्यो डफ्फा खावतो, कीनै ही सागै ले'र।

"थे क्यो आया बाबा", सिनाथ पूछ्यो।

"हूं गांव में नी बसूं ?"

"ले तो म्हे ही आवता, म्हे देख्यो, थांनै तो फोडा पडसी ही, डांगडी खेचे-खेंचे म्हे फिरस्या तो की फोड़ा म्हारै ही पाती आसी।"

"फोड़ा तो आंधो हुयो बी दिन सूं ही सुरू हुग्या हा, किसो अन्त है बीरो, अर इयां सूरदासां री किसी दिस, मूढो करै बीनै ही टुर पडै, पण म्हारै कारण थे बेसी फोड़ां सूं टळग्या तो ही चोखो।"

सिनाथ की झेंपग्यो पण सूरदास नै किसो दीसै हो, बोल्यो, "आछो,

आछो, आयग्या तो, दो सू तीन हुयोड़ा चोखा ही हा, बैंठो।"

एक हाजरियें सागै, सिनाथ कैवा दियो कै ई ढग सू दो-तीन आदमी आप सू मिलण आया है। अध घंटा हुगी, अनै एक वैंच पर बारै बैठा नै। उडीकता-उडीकता आखता हुग्या। सिनाथ उठ'र बरामदै मे गयो। आमां-सामां दो चिक लाग्योडा कमरा, विचाळै एक दरवाजो घर मे जांवण खातर खुलो हो अबार। "इंया अचाणचकी ही माय किया जाऊ", अण खंखारो कियो। खखारै रै सागै ही एक कुत्तो भुस्यो। अण सोच्यो, 'आवैंनी गंडक कठै ही चट्टी करै।" माय घंटी वाजी, दो मिट बाद एक आदमी चिक छेडी कर'र बारै आयो, बोल्यो, "क्यो-सा, कठै सू आया, काई चावो ?"

पदमा बोली, "तू इती ही कह दिए बीरा, कै पदमा जाटणी आई है दरसण करण नै।"

आदमी गयो अर आधी मिट मे ही भळै आयो, बोल्यो, "एकर बैठो थे बारली बैंच पर।"

दस मिट और बैठा रैया अै, फेर बो ही आदमी आ'र बोल्यो, "चालो, मिललो अवै।"

अै तीनू ही वरामदै मे आयग्या, बा बैंत री बाजूदार एक कुरसी पर बैंठी ही चिक आगै। तीन स्टूल पड़्या हा कनै ही। रामा-सामा कर'र अै हो वैठग्या बा पर, बोली, "कियां आया ?"

दादी बोली, "पैला तो आ बतावो, मनै ओळखी का नही ?"

"हां ओळखली माजी, पण इसी वाता मे टैम मत लगावो, आणो कियां हुयो, वा सुणावो।"

सिनाथ बोल्यो, "नसबन्दीआळै रोळै सू बडो भो है गांव मे। परसू ही दस-बारै आदमी गाव सू पकड'र लेयग्या थाणैआळा, बां मे एक तो कवारो ही है, दो महीना छेडै फेरा हुता, एक रै एक छोरो अर छोरी है, छोरो आज मरु काल मरू इसो है, एक बरस साढेक रो है, एक गूगो है अर…।"

"हां हू समझगी थारी बात, पण नसबन्दी रै ई सवाल नै ले'र तो कठै ही मूंडै बाफ ही मत काढ्या। अफसरां नै हो नही, एम. एल. ए अर एम. पी. सगळा नै ही हिदायत है कै जादा सू जादा ई अभियान नै चलावो, मूका सागै बळन नै कोई आलो ही बळ सकै पण बीरां तो रोळां-रप्पो हुणों ही नही

चाईजे, बी सू आदमी मरै थोड़ो ही है, एमरजेंन्सी है अबार, पोलिसी ही इसी है, थोड़ो ही वैम हुयो तो तुरताफुरत मांय, जमानत ही नी हुवै, च्यारूमेर सी. आई. डी. फिरै, कुरसी सू ही कंवर सा'ब रो काम करड़ो है। और कोई काम है तो बोलो।"

दादी बोली, "म्हारी हजारूं जीभा री तागत थारी एक जीभ में है, म्हे तो ई खालड़ै रै टुकड़ै नै ताळवै रै इया ही चेप्यां फिरा, दळियो तो ई सूं उगाळा ही हां, बाकी न तो म्हारी चलै अर न म्हांनै बोलणो ही आवै, पण म्हांनै नही आवै तो काई, म्हारी जीभ तो थे हो, थे आगै अरज तो करो दियोडी म्हारी जीभ सू।"

"अरज करू क्यो घर म्हारो पाणी मे है?"

"बताणों थारो फरज है, टाळ'र लिया है हजारूं आदम्यां थानै, अर सावळ कैवता ही, इयां किसा थानै तोप रै मूढै चाढै?"

"मैं थानै कह दियोनी कै और कोई काम है तो बतावो, म्हारै हुवै देरी।"

"और काम ओ है कै म्हांनै सेर-अच्छेर सखियै री मैर करावो।"

"काई करो'ला सखियै रो?"

"थोडो-थोडो लिया पछै, न म्हांनै कूकणो पडै कीरै ही आगै अर न बापड़ै राजआळां नै तापडनो पडै म्हारै लारै। थे नही कैणै सको तो इत्ती तो करो कै एकर मनै सागण जाग्या लेजा'र खड़ी कर दो, बा सत्पुरसा रा दरसण कर'र एकर रळी तो पूरी कर लू।"

"माजी थे हुया हो गूगा, बानै मिनिस्टरा री सुणण नै ही फुरसत नी मिलै, थे अर हूं किसी चकारी में हां।"

सूरदास बोल्यो, "एम. एल. ए. सा'ब गाव मे तो पटवारी, सिरंपच, गावसेवक, अर बारै अफसर अर सिपाई सै आधा हुया फिरै, घर गिणै न गवाड, जिकै मिनख रै गपफी घलगी, बोनै ही लेटुरै, बां आंधा सू तो की पिंड छुडावो म्हारो।"

"बाबा तूं ही तो आंधो ही है, पैला जावतो थारो ही हुणो चाईजै।"

"हा, हू तो आंधो ही, एम. एल. ए. सा, पण दिन मे दो-तीन रोटी सू बेसी उजाड नी करू, बै ही म्हारी कमा'र, पण बै आंधा मिनखां रो उजाड़

करे, खुलती गवाड़ी ढकै, इत्तो ही फरक है वां मे अर म्हारै में, म्हारै जिसा ही आधा, थे जे बानै ही करवा नाखो तो बड़ी मैर हुवै थारी।"

बा चिडगी, बोली, "ठीक है, हू समझगी थारो रोग, म्हारै कनै ई रो कोई इलाज नी है, जावो थे लोग, तीन बजी मनै दो बस ले'र जैपुर टुरणो हैं, काल प्रोग्राम है बारो, लाखू आदमी पूगसी बठै। "हा, थारो नांव तो सिनाथ है नी ?" बा लारै जांवती सिनाथ कांनी देख'र बोली।

"हा सा।"

"लारली दफै म्हारो विरोध करण मे सगळा मू आगडिया मे आप राम ही हा नी ?"

"दारू री बोतला नै ले'र हो सा।"

"पछै तो बन्द हुग्यो देस मे दारू ?"

"मैं तो कैयो सा, गाधी री दुहाई सागै दारू रो काई सम्बन्ध ?"

"म्हारै मे जद आम्था ही नही तो अठै आवण रो फोड़ो ही क्यों देखो ?"

"पण जीत्या पछै तो विरोधी अर वेविरोधी सै आपरा ही हैं, सै एक लाडू मे वधग्या, बीरी किसी कोर तो खारी अर किसी मीठी, धिगाणै भींत क्यों खीचो विचाळै ?"

"ज्ञान मोड़ो आयो, बी वेळा तो आख्यां अकास मे ही।"

"अर अबार आपरी है सा।"

"हा है, निकळो अठै सू, कण न्यूतो दियो थानै कै अठै पधारो।"

सिनाथ देख्यो बाजो कठै ही विगड नही जावै, भाग री कमरै सू आवाज आई टणणण, टणणण—फोन आयो दीखै हो कठै सू ही। बा कमरै कानी टुरी, अर अै तीनू, आया जठीनै ही। पगोथिया सू उतरतो-उतरतो सूरदास बोल्यो, "सिनाथ तो विरोधी हो, पण पदमा तो फूस बुहारती चालै ही आगै-आगै, बीनै तो की ख्याल करती।"

डोकरी बोली, "विरोधी हो तो, बो किसी आपरी सिकायत सुणावै हो आ तो *आखै गाव री सिकायत हो।"*

विकः पडी थारी कनकर निवळतै सिनाथ नै सुणीज्यो, "हा, मैं तीन बजे रवाना हो रही हू—कार सं, वसो को आध घटे पहले रवाना कर रही

हू, मैं सीधी कोठी ही पहुंचूगी, वे खुद कहां है, यही है, तो फिर एक मिट बात कराओ ।"

डोकरी अर सिनाथ रै कांधै पर हाथ दियां सूरदास, भूखा, तिस्सा अर उदास बस रै अडै कानी वगै हा। काळजै असन्तोष अर होठा पर खटाई लियां अै अडै पर आ'र बैठग्या । बस हकण में ओजू एक घटा बाकी हो ।

डोकरी थेलियो खोल'र एक न्यारणै मे वध्योडा दो पोडिया काढ्या, तीनां दो गुटका पाणी भावै जिसो की आधार कर लियो । सामनै पौ ही, एक बूटीवाज डोकरो पाणी पावै हो । नीचलै होठ नीचै खासो-सारो जरदो दे राख्यो हो । कोई दो-पाच पइसा देवै बीनै ठडो पाणी कोरी मटकी सू पावै अर पावै ही ढग सू, नही जिका नै एक मोटी बाळटी भरी बो मा सूं; पाणी ही की गिदळघोडो, गरम अर बेस्वादो । सूरदास वूक माडी, डोकरै अरड दे'सी लोटो ऊधा दियो, एक गुटको लेईज्जो हुसी, बाकी पाणी वूक ऊपर कर नीचै, सगळा पूर भीजग्या । सूरदास रै कठै खटाव, "हू तो आंधो हू, म्हारै दाई तू है काई ?"

"क्या बोलियो मूढै मू पोणी पीणों है तो पी, नही तो ओ पडियो रस्तो नाप इठै सू, रग जमावै है क्या म्होरै माथै ?"

सिनाथ बोल्यो, "ओ तो ठीक ही बोल्यो है, तू अठै पाणी पावण बैठो है का नसो उगावण नै ? झेरी लै अर ल्याळा पड़ै, दिन भर मे आधी बाळटी तो लाळा पावै लोगा नै, अर करड़ावण में पाती ही नी दै ?"

"म्है इयै मे क्या कैयो, इत्तो गरम हूण री क्या जरूत है ?"

"तैं तो पूर भिजो दिया, नास्यां में पाणी चढग्यो, अळमूंट सू आख्या अगलै री बारै आवै अर कंठ ओजू सूका ही पड्या है, और तू काईं डांग मारू हो ?"

डोकरी खडी ही कनै ही, बोली, "तू अठै तैसीलदार लाग्योड़ो है का पाणी पावण नै ? लर-लर करतो घणो ही, है तो इगो ई सेळी मे डुबो-डुबो'र काढू दो-तीन दफै भेड नै काढै ज्यू, हणै थारी भांग जावै कठै ही, धाडो वैरूपियै रो सो, गळती नै तो नी देखै, धोरका और करै ।"

कण ही कैयो "जावण दो जावण दो माजी, म्हाराज भोळो है।"
"आगैसारू ध्यान राख्या करो व्यासजी ।"

"भोळो है तो खेळी में तो नी पियै, पाच पइसा कोई देवै तो, "हां बावूमा, अबार लायो ठंडोटीप जळ", फट लोटो हाथ मे देंवतो ही हुवै। अबार लौरी मे बैठी एक सेठाणी नै करवो ले'र पा'र आयो है, म्हाराज रो मूंडो लियो आगीनै सू, म्हाराजा रो डोळ हुंतो तो देस नै देखण देवता नी आवता ?"

ई थोडो गरमागरमी रो फळ ओ हुयो कै डोकरो अर सिनाथ नै पाणी ठंडो ही नही, हाथ मे लोटो और दे दियो—पाणी स्सोरो पीवण नै। सामनै री एक भीत पर सिनाथ एक ओळी बाचै हो, 'अनुशासन ही देश को महान बनाता है', फेर आगै 'यहां कोई पेशाव न करे' पण लोगां मूत-मूत बी भीत रो सत्यानास कर राख्यो हो अर बीरै स्सारै-स्सारै बेसुमार टट्टी न्यारी। भीत सू पाच-सात पावडा परिया पैसाबघर हो, किवाडियो कोई लेयग्यो दीसै हो, परिया मू ही बीरी दुरगन्ध आवै ही—माथो ऊचो चढै जिसी। सिनाथ सोचै हो, "इया भीता, पाखाना अर पैसाबघरां पर लिख्या अनुशासन रैया करै—लोगा अनुशासन रै आखरा ताईं धार दे राखी है। फेर बीनै घ्यान आयो हजारीमल री दूकान मे टग्योडा नौकार, धनजी रै बरामदै मे लिख्योडा दोहा, चौपाई, अर च्यार सूत्र ? सगळा जीवण सू कोसां दूर, दिखाऊ अर जड भीता रो फुठरापो—कूडो प्रचार; ईं पर सरकार अर समाज जीवता हुसी ? इया जे सरकार जियै तो बीनै मरण ही कुण दै, पण तो ही दौडै बीनै ही है।" विचारां मे खोयोडो, बो थोड़ो और आगै निकळग्यो।

वण देख्यो, गाडैआळो एक जवान छोरो, गांव रै कोई बूढै गाहक सागै बोलै हो। गाहक कंयो, "आ अठानी खोटी है बावू सा'व, दोना कानी एक-सो, आंक ही नी दीसै, अबार थोड़ी-सी ताळ पैला हूं भुजिया ले'र गयो आप सू, बदळदो वावू।"

गाडैआळो बोल्यो, "बावा कान मे घाललै ईं नै, सेह को पडै नी कान मे।"

"अरे बीरा पो तांई ही तो जा'र आयो हूं, संभाळो ले'र देखलै, म्हारै मनै दूजी कोई हुवै तो आठानी।"

"कह दियो माथो मत खा," हाथ सूं सेंवतो-सो धक्को दे'र डोकरै नै

वण आगो कर दियो, "चाल आगीनैं, धिगाणं कठै ही नावैं मंडीजसी।"

डोकरो बोल्यो, "बावू, इन्याव है ओ तो, ओजू तो भुजिया म्हारैं हाथ मे ही पड्या है।"

"वताऊं काई, आयो घणों ही साहूकार ?"

गाडै रैं एक फाटकै पर लिख्योड़ो हो, 'युवक काग्रेस जिन्दावाद', 'युवा नेता है हृदय सम्राट', इंया ही केई नारा अर केई नाव और। गाडैआळैं री छीलरी चेतना पर जरूर कोई गळतफैमी तिरैं ही अर चैरैं पर एक कूडो अह। आसैं-पासैं खड़ैं और गाडैआळा सू ओ अपणैं आपनैं की न्यारो-सो समझतो लाग्यो सिनाथ नैं। गरीब डोकरो भळे ईं कनैं नी आयो, टुरग्यो, एकर-दो दफै ईं कानी मुड-मुड देख्यो जरूर। थोड़ो परियां, एक महरी जवान चालतो ही टुणकळो नाखग्यो, "आ नैं अबार मत छेडो, आरा दिया ही दिन है अबार तो, आंरी तो पूजा करो, युवा सम्मेलन मे ओ अबार ही गोहाटी जा'र आयो है ?"

अण सुण लियो दीसैं हो, बोल्यो, "हां आयो हू, कर लेया कोई की ?"

थोडी दूर परिया एक सिपाई खडो, काईताळ सू ईं नैं देखैं हो, बोल्यो, "अरे मिनिस्टरा री हिम्मत ही नी हुवैं, गैलोतजी नैं बतळाबण री, क्यो आफत नैं तेड़ो देवो आं नैं छेड़'र ?" बस, गाडैआळैं रो रोब और चौडो हुग्यो चैरैं पर। सिनाथ सोचैं हो, 'देखो देस रा भाग जाग्या है, अर मिनखा रो तोडो आयो है। गूघला रैं फण निकळग्या, अनीता नेता हुग्या अर नेता बापडा दीखणा ही बन्द, ओ गाडो चालसी कियां ? कोई सरकार, कोई नेता आछा है तो, काम करो आछा। गाडा, ट्राम अर ट्रक काळा करणैं सू काई फायदो ?" फेर सोच्यो "ठीक ही तो है, जिती ऊमर रोगन रैं आ आखरां री है वित्ती ही ऊमर अबार रैं नुवैं नेतावा री।" विचारा री ईं धुन में वो दादी कनैं आ'र बैठग्यो। ओजू अध घण्टा नैड़ी ही बस टुरण मे।

दादी बोली, "देखो, वा ही टैम ही, मनैं आ टुकडो ही नी खावण देवती, 'चालो मा-सा, फुरती करो देखा' अर हू गूगी, ओपरी छाया रैं कब्जै में हुयोड़ी-सी ईं रैं लारैं आघी देखी न पाछली, जावती जठै ही ईं नैं दूध, चाय अर फलका ला'र देवती, थोडो तो और, नही-नही कीं तो और लेणो ही पड़सी, भैंस रो दही, ऊपर आंगळ-आगळ जाडी मळाई आयोड़ी, म्हौरा

करते-करते जीभ ही दूखण लागती, आणू ई रो खायोडो भगवान नै मिलतो हुमी, अर अण चूखली पाणी रो ही नी पूछ्यो। उल्टो कैयो, 'जावो अठै सूं, ओ लाड कियो, तू ही आए अबकै कदेई, जीवतो रैई तो पूछस्यू, मरगी तो थे हो—याद राख्या, आदमी सू आदमी तो मिलसी ही, कुवै सू कुवो नी मिलै।"

सूरदास बोल्यो, "दादी डाकणा रै ब्याव में न्यौतारा रा काळजा, उपासरै में तू कागसिया सोधै हो ?"

सिनाथ बोल्यो, "इयां ही है दादी, अणकमाई सुविधा कांनी आंख फाडतो घणखरो देस ही टुकडेल हुग्यो, हुग्यो काई कर दियो बीनै। मैं गाव में ई रो विरोध कियो—खाली ई बात नै ले'र कै चुणाव सू दो रात पैला दारू री बोतला बटी—नायक, मेघवाळ, दरोगा अर रजपूता कांनी—बोतला मे वोट विकग्या समझलै", मैं कैयो, "आगै-लारै नाव गाधी रो राखै अर काम करै अै, गाधी रा अै गुटकिया बौपारी, आपानै काई ठारसी ? आरै देखापै रा दात और हैं, मायला और, क्यो मे काई गळत कैई ई मे ?"

दादी बोली, "मनै तो बीरा ठा ही मोडी पड़ी, खोसीज्या पछै दौडनै स् काई बणतो ?"

सूरदास बोल्यो, "दादी, लाड-कोड अर सेवा रा खडा कियोड़ा डूगर धारा तो आ सफा भूलगी पण सिनाथ रो राई-सो विरोध, पाच-साल सू ऊपर हुग्या, ई रै काळजै ओजू अगद रै पग-सो रुप्यो पड्यो है। घंटी रो टणटणाट नहीं हुतो तो आ आपांनै काढती कुत्तो लगा'र, चोखो सजगी आपणी।"

दादी बोली, "आ सायत सोचती हुवै कै अबै न कोई चुणाव हुवै अर न मनै को कनै ही जाणो पडै।"

सूरदास बोल्यो, "बारै-माम सावण हो थोडो ही रैया करै, पोह रो पाळो अर जेठ री आंधी ही तो आसी कदेई, ओ ठा अबार ई नै थोड़ो ही है ?"

सिनाथ बोल्यो, "अठै, जैपुर अर दिल्ली सगळै ई रो एक-एक बंगलो है, आप अर छोरी दो जीव है, माड़ो आवै, बता किसो ई रै दूकाना चालै ? ठेठ पूगै, बठै आ पूछ हिलावै, ई आगै अर ई रै हाजरिया आगै अफसर हिलावै

पूछ—आपरी जाग्यां थिर राखण खातर, अफसरा आगै बारै निचला । इया दादी, कुत्तां री एक लम्बी कतार देस मे बधती ही जावै है।"

"चोखो वीरा, म्हारो तो अण बापड़ी उपगार ही कियो, म्हारै ही पूछ ऊगगी ही, ई रै सत्सग सू, आज वा खिर'र नीचै पडगी, पिंडो छूटचो, अण तो दो नाव रट राख्या है, बाकी दीन दुनिया पड़ो दरड मे।"

सूरदास बोल्यो, "आ न गुर री अर न पीर री, ईनै न धिरियाणी सू मुतळब, अर न कोई कंवर सा'ब सू, अण तो मूढो कर राख्यो है सिहासण कांनी, वी पर गधो बैठे चावै घोडो, आ तो गीत वीरा ही गासी।"

सिनाथ बोल्यो, "दादी हू आयो अठै एकर, बै भाईजी आया बी दिन। ओ हो ! मत पूछ तू, एकसौ-एक दरवाजा सहर मे, खुली कार मे कवर सा'व, भाडे रा आदमी अर लुगाया जाग्या-जाग्या ऊभा फूलमाळा लिया, मिनिस्टर अर कांई अफसर, डरतो डूम करै सुभराज, सैं हवाईजाज वण्योडा हा, जीप, कार, वस अर ट्रक मावै ही नी हा, सहर मे। दोयसै-दोयसै, ढाईसै-ढाईसै कोस सू बसा आई फ्री, भाडो-तोडो की नही, चढो अर चालो। एम. एल. ए. अर एम. पी. सगळा री ड्यूटी जादा सू जादा आदमी ले'र पूगो। जाग्यां-जाग्या पडदा अर भीता पर काकै री बिडदावण, सवारी निकळी जठै सू ले'र पूगी जठै ताई सा-वस्ती गुलावी। गोगो वडो'क गुसाई ? परडा मू वैर कुण वाधै, कराणी पड़ै, फुटपाथा पर मानखो बेसुमार, सी. आई डी. ठेठ डागळा ताई पूगगी। लोग बात करै हा, एक किरोड़ रिपिया लागसी ई सुवागत मे, केई कैवता हा अस्सी-पिच्यासी लाख मे तो बोलणो ही काई है ? मुखमत्री अर बहरूपिया नेतावां री छोड, बै तो वेमाता जाणू जिन्दावाद वोलण नै ही घडघा हुवै, कव्या री जीभा सू सरस्वती छेड़ै जा बैठी, बा पर भांड वैठग्या आ-आ'र।"

"छेकड़ वण की कैयो तो है तो ?"

"कैयो, कैवणो आवै तो ?"

"बस !"

"और नही तो।"

"तो ई मे लाखू रिपिया खर्च हुया वै फिजूल खर्च नी हुया, किसा जनता रै हित मे लाग्या का गरीबा ऊमरा किया वा सूं ?"

"दादी, रांड रंडापो काढँ पण कोई काढण दै जद नी, कंवर सा'ब कांई ठा इत्तो पोचो नही हुवै पण वडै आदमी रै बेटै नै तो हाजरिया बिगाडै, बीरी ओट मे सिट्टी आपरो सेकै। वेईमान पाखरिया गुड दे'र अगलै रो गळो करवा देवै।"

होंनै सुणीज्यो, "अरे लौरडी हुकण मे पाच-सात मिट ही बाकी है, उठ दादी, आवो सूरदासजी, आपणो जाग्यां रुधा", अर सीधा जा'र वैठग्या लोरी मे। सिनाथ पढै हो लोरी मे, लिख्योडो, "यहा धुम्र-पान करना सखत मना है" अर बस मे बीडी अर सिगरेट रै धुवै रा कुरळिया उठै हा, वमटुरी जद सास सोरो आवण लाग्यो।

9

गाव मे विरखा खासी जोर री हुई। बळता अर बुझता छेत पाछा बा-वडग्या। वाहेतरै सारू धान सगळा रै आछो वणसी, पण, सागै-सागै बोदा अर कच्चा ढूढा ही पणखरा, पाधरा हुग्या। हरिजना रै कैई घरा में तो वारो आटो अर लूण-मिर्च ही डगळिया नीचै दब'र रेत मे रळग्या। हाडी, चाडिया, मटकी अर कूलडिया—बा मे ही तो चूण-चुगो, यां में ही तेल, तमाखू अर गुड री काकरी, सैं ठीगळा अर ठीकरी हुग्या। तवा अर चीपिया मुरड देढै कर-कर काढ लिया, का थोडा-घणा पूर-पल्ला अर माचा-मचली। टूम-छल्ला केया रा तो, धनजी अर हजारीमल रै पैलां मू ही पूग्योडा है, रैया-सैया अवै पग कर लेसी। कैई जणां तो, दो-दो टंक, चौगान मे गूधरी उकाळ-उकाळ काढ्या है। अवै खेती सारै का डगळिया। घर में वी पळो-थण अर मिनखां रो जोर है, वां तो पाच-पाच, सात-सात दिना में, एकर काम चलाउ 'टा-टप' कर लियो। घाटैआळा अर एकलपा हा, वै घरां रो ढका-टूमो कर, ढाणी उठग्या। तीन-च्यार महीनां टापली सेवन करसी। मेला-छोडो टापली नीचै, सोवा-उठो, आखरी मे का निरवाळी वेवळू पर।

ठठार घणों पड़सी जद, फूस बाळ-बाळओग मे दियँ सिट्टां रो मोरण चाबता रैमी, रात इया ही काढ दे'सी दोरी-सोरी। घणो फोडो तो पन्द्रै-बीस दिना रो ही समझो, फेर तो फळी-फूबी अर रीटिया चाल पडसी, गरभडो गिटता, टीगर कीरै ही सारैंनी।

लोग लुगाई खेत में पचसी आखो दिन। डेरै टीगर एकला, आंरै सागै ह्वाई करण नै मैर हुसी तो मलेरिया समझो। अळगा खेत है, का पाणी लावण सजत नहीं है वै, तळाई रो खोला-न्हायोडो अर टीगरां री पांव गिचोळचोडो कालरिया पाणी पी-पी वगसीस मे 'वाळा'* लेसी, वांरी रूखाळो करता वापड़ा खेत कियां रूखाळसी ? माथो खेत मे, अर चोटी खैंचीजसी और कठै ही, कुण सीरी ? दाणां, घास, पालो हुयां पछै, घनजी अर हजारीमल जिसा मेवँ रा रूख या पर वुचकार-वुचकार छाया करण नै आ पूगसी। आधैं सू घणा फकीर हुयोडा नैरा कानी का भट्टा पर ईंटां थापण, दो-तीन महीना आटैआळा पइसा करण विदा हुसी। चौमासैं भळे वै ही घोडा अर वै ही मैदान, की घर रा, की उधार अर खळो निकळे पाछा फकीर, आ चरड़-घाणी इंया ही चालैं, आज सू नही जुगां सू।

एक दिन सिनाथ अर धीरजी आ घरा कानी जावता-जांवता भाए-जोग सागै हुया। केई घर चौड़े चौगान डगळिया पर तोवा मेल्या रोटी सेकैं हा। धीरजी वोल्या, "सिनाथ उजाड तो, गाव मे मोकळो हुयो है—आ घरा में और ही वेसी। टक टाळनो ही ओखो है केई जाग्यां तो ?"

"काकोसा, टूटचोडा लड की वेसी ही टूटैं।" बात करता वै जावै हा।

सिनाथ, धीरजी रो माण, आपरै वाप गे सो करैं। वरस पन्द्रैक पैलां सिनाथ रो वाप अर दो दरोगा—एक ऊंट रै सौदै सपटै नै ले'र हब्बो-थब्बी हुग्या हा—फेर लाठी चालगी। रोही ही अर चौधरी हो एकलो। पड़ै ही खासो पोचो हो आं विचाळै। धीरजी वीनै सू निकळै हा—ऊंठ पर चढयोडा—खेत सूं आंवतां। दिन चिलकारो-सो हो। पड़चै पर लाठी झोकतां देख'र, आ सोच्यो, आवैंनी अकाज नही करदै मिनख रो अै, है ज्यू ही ऊंठ सू कूदग्या, अचाणचकी ही, लारै सूं लाठी झाल'र, जचा'र मुक्की री दी गुद्दी

---

* नैहरुवा

मे, वीरै तो नकसीर छूटगी अर आड्या आडो तिरवाळो घूमण लागग्यो। दूसरै आ पर एक वार कियो लाठी रो, आरै फँटो हो, की ठबकी-सो लाग्यो पण जाणै जिसो ठा की लाग्योनी आंनै। 'ठैर साळा,' जोर री दाकळ देवतां हो पग कच्चा हा भाग छूटयो, अै लारै दब्या, बण सोच्यो अबै मारसी, पग मोळा पड्ग्या, आ लारै सू सतोल हाथ सू दी फीच्या मे, पड़तो ही रेत चाटण लागग्यो। चौधरी रै खासी भलेरी लागगी ही कमर में, वा दोना नै तो अध-घडी पछै चेतो हुयो, जद ठाकर पूछ्यो, "धापग्या का और लाऊं, चुळू तो बाकी ही है ओजू, एकलो देख'र इयां घात करो मिनख री, हो तो इसा गांव मे थारा समचार ही जावै, धूड खावण दियो ऊंठ पैला।"

हाथ जोड'र पगा पडग्या दोनू, "आज पछै जे नाव ही लेवा तो, चोरां मे करो वा म्हारै मे।"

ठाकर बी वेळा, बरस तीस-बत्तीस रा छक-जवानी मे हा, चौड़ो ठाटो, भवर मूछा अर गाठा बधता बूकिया। धीरा अर सीवी मे कोरै जिसा दीदारू। बी दिन सू ही सिनाथ अर ईरै घर रा, ठाकरा रो पूरो कायदो राखै। सिनाथ चौमासै मे आए साल पाच-सात दर्फ निनाण करावण, मोठ उपडावण का खळै, पालै मे जावै ही, ठाकर घणों ही मना करै, पण ओ जावै हो —आपरै सैज सभाव अर सरधा रै वसीभूत।

एक फळसै आगै सुरतै नायक री बूढी मा कूकै ही कोझी तरै सू। पोपलो मूंढो अर बुझता-सा राखिया कोड्या, आंसू निकळ-निकळ गालां रा सळपार करता मूंढै म जावै हा। धीरजी पूछ्यो, "डोकरी, इत्ती बिलखी क्यों ?"

"बिलखू, घण्या म्हारै करमा नै," बसबसीजती वा बोली।

"तो ही वता तो सरी ?"

"म्हारी सायळ उघाड्या, हू ही लाज मरूं ?"

"लाज री मनकारघोड़ी, कह तो सरी की, लाज रो डर लागै तो रो बैठी। रोवतो नै लाज नी आवै ? इया किताक दिन ढकवा राखसी लाज नै ?"

"माईता, सुरत्तियै री बहू, दो कोलो आटो ले'र आई— कळचक्की सू। मनै दो-तीन दर्फ कैयो, "रडार पदखाउ बळै, बाढी पर मूतण जितो स्सारो लगावण जोगी ही नी बळै।" बण आटै री गाठड़ी फूटघोड़ी साळती रै खूणै मे धरदी, अर आप पाणी रो घडो लावण निकळगी। पाणी तो चाईजै हो

माईतां, सीधो करै जद।"

"हा-हा, तू कह तो सरी ?"

'मैं देख्यो, हजारीमलजी रै अठै सूं पाव-डोढपाव छावड़ी रो गुटको लाधै तो लाय दूं, टुकडो की स्सोरो गळै ऊतरसी। हू टीगरां नै कह'र गई ही, छोरा साळती री ख्यांत राख्या रे, 'हू थोड़ी छाछ ले'र आऊ।' टीगर डगळिया सू घर-कोलिया मांडता रमै हा। गडकड़ा गाठड़सी फाडदी। आटियो की खायो अर बाकी रो रेत भेळो कर दियो ठेठ ताई—बाळन-जोगा।"

सिनाथ बोल्यो, "तू पाछी कद आई ?"

"हूं तो आई डोढ-दो घटा सू।"

"इत्ती ताळ वठै काईं कियो, पगोपग ही आणो हो तो तनै।"

"आऊं किसो म्हारै बाप रो घर हो वठै ? ठाण साफ किया, वाखळ मे बागरी काढी, कैया पछै दो काम अगलै रा उठाणा ही पडै। आवता ही बहू बैठी ही डगळिया पर लाल-पीळी हुयोड़ी, हू छाछ ले'र बडी। मनै कैयो. 'आगीनै आ तू, भारणी उतारू थारी।' मनै काईं ठा धण्या आ बात हुई, ठुळी री एक दी नळी पर, पारियो पडग्यो वठै ही, धोवण डगळिया चूसग्या, मनै कैयो, 'घर सू निकळ अबार री अबार,' हूं बोको जोर सू, बोली, 'बोकै तो बारै जा'र बोक, अठै जलडा किया तो मिणियो मोस दूंली।' हूं रोवण लागी जद ठरड'र मनै बारै नाखदी।"

वण पीडी री नळी दिखाई, खुन आयोडो हो थोडो-सो पण लील काईं जाम्यां मे मूगीछम जम्योडी ही। वै दोनू माय गया। साळभर रसोई उघाडै-बारणै पड़्या हा। टीगर कूकै हा, छोरा-छोरी पाच-छव हा, दो-तीना नै हुसी अर दो-तीन, कूकता नै देख-देख कूकता हुसी। ठाकर कैयो, 'अरे भली कूटघा आदमण, हुणी वा तो हुगी, बीती वा कदेई पाछी बावड़्या करै ? दो कीलो आटो अर दो-तीन कीलो मोठ, बाजरी, कोटड़ी सू अबार भेजू। इयां दिया करै है कदेई, घर में ला बीनै।"

लुगाई उठ'र गई, हाथ झाल'र लावण लागी। डोकरड़ी बोली, "जाऊं किसी पोल पडी है, नो चालूं, मरणदै मनै अठै ही, अन्नपाणी अगलै जल्म मे ही खास्यूं कठै ही।"

ठाकर कैयो, "डोकरी, इसो करड़ो सत्याग्रह तो गाधीजी ही नी करता ?"

मिनाथ बोल्यो, "अगलै जल्म मे भळे इसी ही कोई बीनणी लाधगी तो. अन्नपाणी खापो ही है ? है जिकै नै लात मार'र, अगलै खातर दायतोही कोड करै, जावै नी घर मे।"

धीरजी वहू नै बोल्या, "ईं दसा मे रोम आणी तो तनै ही सैंज ही है, पण तो ही, हाथा पर की काबू राखणो चाईजै, ईं ढग सू आ जे मर ज्यावती तो, खाई ही नी छूटती।" गई डोकरी, रिणकती धीरै-धीरै।

अै दोनू ही टुरग्या। सिनाथ बोल्यो, "अबार पाच-सात दिन तो आ लांगा री, तावै आवै जिसी मदत करणी ही चाईजै।"

"अरे भई, डोळ सारू आपानै काई हरेक नै हीं करणी चाईजै। भार तो भीत झालै, समर्थ है बानै पूरी करणी चाईजै, पण बानै तो अबार कमाई रो मौको हाथ आयोडो है—पूरा करसा काढसी आरा—डोढा-दूणा। इसा मौका हरदम थोडा ही आवै, आरी गाढडी तो फाड़सी ही, कुत्ता नही तो कुमाणस ही सही, अर इया'स साव आपा सोचा जिको बात ही नी है ?"

"किया ?"

"किया कांईं, नव-गाडा भूख है आ रै तो ही सिड्या कोई-न-कोई गुटको लिया त्यार लाधसी, घडी-दो-घडी तो बादस्या ही काईं करै आंरै आगै ? म्हारला तो ठकराई मे डूबग्या अर अबै डूबी पर नव बांस है, सागै आंनै ओर ले डूब्या, गुरू तो आरा म्हारला ही है।"

निनाथ री निजर आगीनै गई, बोल्यो, "आ लो, केसरियै कोटवाळ री साळ तो जै-माताजी री हुगी दीसै है।"

"एकलो ही है ओ तो, घळ है सो की ?"

"नही ओ, साळती घडी हुणी ही ओखी है।"

इतै मे परिया मू कान्हों कोटवाळ आ लियो। आवतां ही धीरजी अर सिनाथ रै धोक गा'र पड़ग्यो, "धण्या मनै गरीब नै बचावो किया ही।"

"बच्योंड़ो ही है तू, कुण भूत खावै तनै, थारै साथ मे टाबरा तो अैस धणपरा पाधरा हुग्या रे ?" धीरजी बोल्या।

परिया एक छोरो अर छोरी घडा हा, पोतो, पोती हा ईं रा। बोल्यो,

"धण्या, रंडार तो होठां रै पोतो दियोड़ी, सेठां रै वाड़ै में वैठी है एक ओरियै मे, रोटी सेकै, की लावण-लगावण मिलज्यावै हेली सू, घर कानी मूंढो ही नी कियो, तीन दिन सू, आज दिनूगै हूं गयो, कह्यो, 'घरे चाल,' रंडार चटिया पड़गी, अकूणी दिखा'र बोल्यो, 'आ टेकी है देखो ठुळो री हू तो' आवग्यो म्हारै बडेरा नै धोवा देवतो, ढूढा पड्या है वाको फाड्या, वामे कुत्ता बड़ै अर निकळै, टीगर मरता है दो टका रा। हू तो चाऊं, खेतड़ै में जा पड़ू, पण टीगरा रो पपाळ—नी हुवै तो कुवो-खाड ही कर लू।"

ठाकर कैयो, "छोरो थारै बळू का बीरै ?"

"हू तो खैर लागू ही काई हू, पण न्याल वो बीनै ही की करैनी, गुर रो न पीर रो—फिरै है घूड खावतो रूळेटा सागै, च्यार फुलड़ी कनै ही. हू तो, दे'र भळगो हुयो, अबै म्हारा हवाल खोटा हुसो।" कह'र आसू नाखण लागग्यो।

सिनाथ बोल्यो, "दसेक सेर, बाजरी, अर की मोठिया चाल घालदू, खीचड़ियो करो पाच-सात दिन तो।"

"परमू तो बापड़ी पदमा दादी, जियो, बीरै अठै टीगर अर हूं खीचड़ो, राबड़ी जीम'र आया।"

"सिनाथ," ठाकर कैयो, "आ लोगा में कळै घणी, वोली रा कुफार अर गरीबी नै तो आ पाळ ही राखी है। आ नै लोन, तकावी अर पट्टा देवै बी सू ही जादा जरूरी आनै, सिक्षा अर संस्कार देवण री है। आछा सरकार तो आछी सरकार ही दे सकै अर वा आप ही नागी हुई वैठी है। चोटी री ऊचाई मू निकळी गंगा ही धरती री तिस्सी चेतना नै धपा सकै, रोळ-घोळ चोर अर गुडा जद कुरमी पर कब्जो करलै तो नीचलो वर्ग आपरी निजर नमा'र तिस्सा अर लाचार हुयोड़ा, चोरा कानी ही देखै, मतलब बांरी दया पर जियै अर ठोस ईमानदार वर्ग उदास हुयोड़ो अमूजै, जे वो साच री सड़क मू आगळ ही आघो-खांधो नी हुवै तो ईमानदारी रो इनाम जेळ जावतो भोगै।"

"कुर्स्यां रा भूखा, अर जाग्यां रूध्या आखा आदमी एक आदमी री पूजा में लाग्या तो आ ही हुवै।"

"पण आ आधी उपासना मंगळमई नी हुवै रे, माटी ईनै मंजूर नी करै,

सायत धीरजी की और कंवता, पण, की तो कान्हो कम समझै हो आंरी बात, अर की मरतै टीगरा री चिन्ता ही बीनै, बो बिचालै ही बोल्यो, "थोडा चालता देखा, टीगरा रै पेट मे कूकरिया लड़ै माईतां।"

"अरे, हां चाल, चाल; बीसर-ही-ग्यो हूं," सिनाथ कैयो, अर वै दोनूं एकै कानी अर ठाकर एकै कानी, टुरग्या। परिया सू हरजौ बामण आवै हो, आपै सू बारै हुयोडो, रोळा करतो।

"काई बात है दादा, की पर कुठाकरी है आज ?" सिनाथ पूछ्यो।

"काई बात है रे, पाचियै मेघवाळ अर भूरियै नायक नै खेत मे चालण खातर सात-सात रिपिया एक दिन आगूछ दिया—निनाणियै री तुरगी खोरा देया रे की, अबै बेटा अळसा-मळसा करै, आज नी काल, काल नी परसूं, दो दिन हुग्या आरै लारै फिरता। मैं कह दियो, "अै हाथ जोड़चा थांनै, मनै म्हारा पइसा दो, हू धाप्यो, चोटी ताण्यां राखै बांरै ही भाग रा हो थे।"

"काई कैवै वै ?"

"बेईमान है रे, केवै, 'पइसा नटा थोडा ही हा, देस्या पण हुया-हुया।' हुवण रो काई, छव महीना मैं हुवै, अर कदेई नी हुवै। अै हिल्योडा है, भट्टा-कानी सू ला-ला'र, बो बापडो आरै लारै-लारै फिरै का आपरो धन्धो करै ? कर्जा आरा माफ कर दिया गोरमिट, सायता आनै घणी, तो ही भूख किसी मिटै आरी, लियां पछै दद्दो आखर तो अै जाणै ही नी, नीयत नींव हुवै है आदमी री। गोरमिट काईं, जे कुवेर बरसै आ पर तो ही अै धाप'र खावै तो मनै कह दिए।"

सिनाथ, गरीब अर मूपै डोकरै कानी देख-देख सोचै हो, चाकेई ओ दुखी है, अर पेट बळतो इया करै। केई तो है ही इसा के थाप दिखावे बी आगै तो बै निर्मे, हाथ जोड़ै बीनै जू जितो ही नी समझै। पण बांरो काईं दोग है, आ आदत बामे कण हीं तो घाली ही है। बोल्यो, "थे दादा ऊंधा बीनै फसग्या, अै तो दोनू ही जुवारी अर दारूखोरा है, भोमियां पूरा बिगाड़ राख्या है आनै।"

"फस्यो न धस्यो, मनै कीई दा आ हुसी, दो दिन हुग्या रोटी तो रोटी छूटगी, नीद न्यारी नीं आवै, डोकरडी अर छोरा, बटका सू न्यारा खावै, कोड़ी नैं जजमान मूत रो रेळो ही भारी।"

"मिलण दो थे, तावै आया तो कढास्यू कियां हो।"

"ग्याल करै भाईड़ा, गगा न्हायोडो-सो करदेसी जजमान, भळे तो नैड़-कर ही नी निकळ् कुमाणसां रै।"

सिनाथ घरे आयो। मा अर आपरी बहू गारो घाल राख्यो हो। बहू पेट मूई ही तो ही गारै रा कूडा ऊंचा-ऊचा डोकरी नै झलावै ही। छोरा धन ले'र रोही गयोडा हा। छोरी परिया हारो सावळ करै ही। साळ बिरखा सू जाग्या-जाग्या छागीजगी ही अर दो अधखळ भीता खासी जाग्या सू झडगी ही। सिनाथ लोथा लगावती डोकरी नै कैयो, "मा पाच-सात सेर दाणियां देंवती कान्है कोटवाळ नैं।"

गारै रो हाथ फेरती-फेरती रुकगी बा, बोली, "सिनाथ तू स्याणो है का गूगो?"

"क्यो मा?"

"बेटी रा बाप की तो सोच, मोरियो नाचै ही नाचै पण पगां कानी देख'र रोवै, तू थारो आपो नी सभाळै? डैण अर सुगनो बाकफाटै ही खेत गया, सुगनै री बहू अवार टुरी है भातो ले'र, पौर रात रही जद उठी ही, सेर पाच तो गाळो काढ्यो, फेर पोयो, भारा-झाड़ो न्यारो अर अबै बापड़ी आधो मू अर आधो पेट, न्हासती-भागती खेत नैं टुरगी, आगै बठै किसी मा बैठी है जिकी बुचकार लेसी जावता ही—धन्धो करसी दिनभर। काकीथारी मादी पडी है, सूठ री किरची खातर ही सो मता करू अर खिडाऊ, देखां पेट री उधारकर लेणी, हाट री नही, घर मे नही-नही करतां दोयसै रिपिया हुवै जद ओ धी मिनखांचारै हुवै। टोगरथां आई बैठी है, देखा किया ही, मूछआळो चावळ ठाकुरजी नही पडन दै तो ठीक है, पण तू नी रैणदे, तनै पाच-सात मण दाणां कुबेर रो खजानो दीसै, पड़्या नी सुवावै? खळो थोज् अळगो है, इत्तै आव्यां मूगी हुज्यासी। मगता रो कोई छेडो है गाव में, लिलडी काढ-काढ अकल काढता फिरै लोगां री, काम खातर तू कदेई यतळा'र देखलै, जे थाढी पर हो मूतदै तो मनै फोट कह दिए, घालदै तू, हूं क्यों पालू, थारै इन्द्र दूर्सं तो", कह'र बा आपरै काम मे लागगी।

सिनाथ मुणै हो, एक-एक लीक थोरै काळजै मडै ही कै आवां करा तो गळती ही हा। मर मही देखै बीमे अन्तपन्त फोड़ा ही पडै, पर थारो क्सो

एकलै रो ही है, सगळा ही तो काम करै, सगळा ही तो पचै, बांरी भी तो आप आपरी इच्छा है। बो सकतो-सो बोल्यो, "तूं हीं घालदै मा, सेर-अच्छेर।"

"एक दिन आगै ही मैं ईंनै घाल्यो सेर-सवा सेर धान; एकर-दो दफै जिमायो हो ईंनै, हूं तनै पूछ् हू कै बाडीआळो सूरदास तो कीरो ही मांचो-मचली बण'र रोटी खावै, अर रिपिया-दो रिपिया थोडी बेळा खातर बचावै ही है, कीरी मदत ही करै, अर अै हालता-चालता सेर-सेर धान बिगाड़ता, जाग्या-जाग्या होणी भाखता फिरै, नाता करण नै आंनै पइसा जुडै, नातै लायोडी नै सुणा हा तेल-साबणा चाईजै, बेटो दारू पी'र नाचै। रिपियै-डोढ रिपियो रो लीलो ला'र बेचै तो ही दो रोटी आपरी खा सकै, रोही बरसै हैं अबार तो रोटी, माखी ही नी उडै बीरो बेलीपो तो भाई माताजी ही नी करै।" सिनाथ नी बोल्यो सुणतो रैयो, पण सोच्यो, मा ठीक ही नहीं सोळै आना ठीक है।

डोकरी उठ'र बीनै हाथ रो उत्तर दे'र विदा कियो, पण बीरी आत्मा उदास हो ग्या देणै सू। बोली, "सिनाथ, चौमासै में आज, आठ-दस बरसां रो छोरो रोटी-सट्टै नी मिलै—रिपिया लियां लोग लारै-लारै फिरै अर अै थारी आसामी पाणी-सट्टै ही मूघा। को पड़तल तो है, अर की तै जिसां कर दिया बानै। 'हैं सा', कैया हो, अगलो आपरी रोटी रो जुगाड़ करलै तो मजूरी करण रो फोडी क्यों देखे—पसीनो आवै है नी मैनत मे तो। न आंनै उधार रो डर, अर न मागतां लाज, फोटापण री धरती बतावण नै समास्त त्यार, फेर आनै चाईजै ही कांई ? गयै दळदर नै घेर'र पाछा लावणियां हैं अै। तू समझतो हुसी इया दिया पुन हुवै—अध-घड़ी खड़ो रैयो, पण आ नी ऊकली ईंनै कै लाओ, दो कूडा गारो तो हू ही झलाऊं।" कैवती गई अर सागै-सागै गारै रो हाथ ही चालतो रैयो। सिनाथ को खा-पी'र खेत टुरग्यो, पण मा रो कैयोडो, बीरी चेतना में ओजूं गूंजै हो।

"तो इमां नै दे'र आपां दरसल मे ठीक नी करा ?" बीरी चेतना ईंरो सैंज समर्थन कर दियो—आपां इमा मे पड़तल सभाव री सिरटी करण में मदत करां, अै फेर आपरी बो आदत नै जीवनी रायण मेत, घळा, घर अर टूम-छल्ला अडाणै रारदै, कमती-बेसी फेर चूमीजता ही सेणो, आनै तो

काम मिलणो चाईजै, पांगळा थोड़ा ही है अे। मा इत्ती बूढी हु'र दिन भर पचै है नी—सूरदास आंधो हु'र ही को करै है नी ?"

वो अक्खै नाई रै फळसै आगैकर निकळै हो आपरी धुन मे। अचाणचको ही वीरो तांतण टूट्ग्यो जद बण सुण्यो, "थोड़ा मायं आया तो ?" सिनाथ फळसै मे गयो। अक्खो अर बीरी बहू दोनूं उळझै हा। अक्खो बोल्यो- "जजमान, पैलां तो एक लेखो करो पछै कोई दूजी बात करस्यूं।"

"बोलो !"

डैण बोल्यो, "हजारीमलजी री बैन मक्खू कनै सू आ रिपिया लाई पच्चीस, छोरी रा आवळा अडाणै राख'र—ढाई महीना हुग्या हुसी, ब्याज रोज, रिपियो पइसो। पैलां तो बतावो, ब्याज रा किता रिपिया हुया ?" हिसाव फळा'र बण कैयो, "पूणा-उगणीस रिपिया।" डैण बोल्यो, "पण मक्खू ई कनै सू पच्चीस मूळ अर पच्चीस ब्याज, पचास रिपिया लिया है अर आ ओर कैई कै नायणजी रिपियो-आठाना तो मैं लाड ही राख्यो है थारो, म्हारै आ समझ मे नी आई।"

सिनाथ काई ताळ सोच'र बोल्यो, "ठीक है, बण ब्याज पर ब्याज लगायो है।"

"तो ई ढग तो म्हे' च्यार-छव महीना और गौर नी करता तो म्हारा सवला तर हुज्यांवता।"

"नर काई थे कूकता घडै में मूढो घाल'र, आवळा वेटी नै फेर पैराया ही हा। क्या खातर लिया हा रिपिया ?"

"छोरै रो झड़लो उतारचो हो, कड़ाही करी ही माताजी री, आज जवाई आयग्यो छोरी नै लेंवण नै, अवै जे अडोळी भेजा छोरी नै तो मरघा, पराई चीज ईनै अडाणै राखण री जरूत ही काई, आधी बोरी नैडा मोठ बेच'र टूम ला'र छोरी नै दी जद सास मे सास आयो है। हू बोल्यो 'घर में नहीं अखत रा बीज, बेटो खेलै आखातीज', नहीं करतो अबार कडाही, तो काई माताजी बारणो रोक'र खडी हुवै ही. देखो, अण भैरूजो हजारीमल किसीक करी, पच्चीस रा सागै ही पच्चास ढाई महीना मे, अर भळै लाड ओर, तो कांई म्हानै खाउ हो, जवाई बापड़ो लेंवण नही आंवतो तो म्हानै चांनणो ही नी हुतो।"

नायण बोली, "हाड-पग निरोग चाईजै, और दे'सी ठाकुरजी, कड़ाही तो करणी ही पड़ै।"

"हा करणी तो पड़ै ही, वारंट आयोड़ो हो माताजी रो ई पर, लप-लप करती घणी ही।"

सिनाथ देख्यो, आवैनी डैणियो ईरै डांगड़की री नी मेलदै, वो बोल्यो, "हुई बा हुई, बीनै मत काढो पाछी, पण आईन्दै चेतो राख्या",—आ डाक चुका'र बण आपरै खेत रो रस्तो लियो।

वो सोचै हो, मवखू बाळ-विधवा है, घणखरी ऊमर भाई कनै गाळदी। चाल-चलण में ऊंची। आपरी उपासना अर घर रै खोरसै मे जुती था मतीरा, काकड़िया, काचर टीडसी अर आम, अंगूर लीलोती नांव री कोई चीज मू मे ही नी घालै, अठै तांई कै काचै नांव मे तो पाणी ही नी पियै। स्वाद री रळी अर मन री वृत्ति पर इया कब्जो, जरूर तप ही है ओ, पण ई कानी जित्ती करडाई अर्थ कांनी बीरी चौगुणी ढीलाई—अर आ ढीलाई कीरो ही मोसण ही तो है—ठेठ आता ताई रो। हु सकै वो वापडी री कोई परिस्थिति इसी ही हुवै—फेर सोच्यो, "अवखै री वहू जिसा इसा भी तो अणगिण है, छोरी री टूम अडाणै राख'र ही कड़ालिया चढावै, निश्चै ही देवी-देवता री आंधी आस्था सागै वांरी गाठ उळझी है, मवखूआळै दांई आं लोगां नै ही स्वाद खातर तप करणो चाईजै, और नही तो सोवड़ सारू पग तो जरूर ही पसारण चाईजे।" ई अधेड़वुण मे वो खेत पूगग्यो।

10

दिनूगै री आठ, पूणी-आठ हुई हुसी। पून धीमी अर बेळा सुवावणी। लुगायां माता लेले, खेतां कानी जावै ही। केया-केया रै खारिया में भातां सागै नान्हां टावर और हा, पण, पगा मे घघावळ अर मनां उंतावळ सगळां रै एक-सी ही। घन नै ढोकी घाल्यां, छोरा रोही कांनी एक दूजै सूं आगै

निकळै हा । बा गळना मे बाध्या दोपारा गेडिया रै लटका राख्या हा । भैंत अर गाडा रा धणी पाणी रा घडा लिया टिचकारी देंवता खेता कानी ढाण-बगै हा । घड़ा पर पीळै तूबा रा ढक्कण पन्द्रै पांवडा परियां सू ही दीखै हा । इक्का-दुक्का गाव मे लारै रैयोडा केई मुरड-माटी मे लाग्योडा आपरा कारी-कुटका ठीक करै हा । अठै तांई कै गाव रै हारां रो धुवो ही ठाली अर निकमो नी हो, बीनै ही खथावळ ही ऊजळै आभै मे ऊचो उठण री । खाली पन्द्रै-बीस आदमी ही इसा है जिका पंचायत री चोकी पर दो-ढाई-घडी सू बेकार बैठा है । पटवारी, गावसेवक अर सिरैपंच तो खैर बा भेळा ही हैं । अबार सेरां* रा रिपिया बटसी । 'सहकारी समिति' रा दो-तीन अैलकार आउ है । बीडी, सिगरेट अर चिलमा चालै ही अर आपस मे गप्पा उडै ही धाउ-धपाउ री ।

गांवसेवक बैठै ही ठेळो मार दियो कै, "राज नै पूरा रिपिया चुकावै ही कुण है, किता ही तो मैं देख लिया—डेरीफार्म रै नाव सू ले-ले'र जीमग्या अर बाराण ही नी दिया । केया हाथ-करघां अर खाल रै धधा खातर ले-ले, घर बणा लिया, एढा कर लिया, का दारू-मारू मे दो दिन नफै री खैंच ली ।"

एकजणो बिचाळै ही बोल्यो, 'अर सागै केई भाएला ही तफरी लूंट ली ।" बी रो इसारो कीनै हो, वठै बैठ्या सगळा समझग्या ।

"ईं'रो कांई कैणो हैं आतो आंधै नै ही दीसै है, मैं देख्या है केई तो गांव छोड़-छोड़ कीनै ही जा बस्या; आज ताईं ठा ही नी लाग्यो, बारो, नाव ठांव सै ही बदळ लिया, राज की-कीरै लारै फिरै ? घणै सू घणो अठलो कोई साळ-झूपडो कुड़क करलो—काईं आणी-जाणी है बी मे, बांमें लाधै गिलारी का ऊन्दरां रा बिल, रिपियै री प्यारानी ही मसा बटै । आज रो अफसर काल बदळग्यो । नुवों मियो नुंईं बाग जोर सू, आंवतो ही दो दिन एकर नाचलै, बूरघोड़ा मुर्दा एकर काढै, काढ'र दो पावडा टोरै जितै मैं बीरी बदळी अर कागदां रा मुर्दा पाछा ही टोकरी री कबर मे ।" इत्तै नै ही मोडो मेघवाळ बयोनो आवै ।

---

* Share, शेयर

गावसेवक बोल्यो, "लो सा, हाथ कंगण नै आरसी कांई, ओ बैठो मोडो, साठ-सित्तर हजार नै इळी देराखी है लो, ओजू तो राज नै कोडी ही नी परताई अर वस पड़ता हू जाणू काढ'र ओ कीं देवाळ नी ?"

मोडो बोल्यो, "सा, म्हारो कांई माजनो है कै हूं राज सामों मकूं, आ तो था मोटै माईता री किरपा सू ही पेस पड़ै। वै ही निकाळै अर अर वै ही फमावै।"

एकजणो बोल्यो, "ओ तो कांई नी देवै, ईंरो छाया देवै, पण कटारियाजी री पूरी किरपा है ई पर।"

पटवारी बोल्यो, "डाइरेक्टर कुण है बी बैंक रा—कटारियाजी ही तो है। आज पत्थर तिरै बारा, अर बै है मुखमंत्री री नाक रो बाळ ? वांरी थोड़ी-सी सैन हुवै तो, कींरो घर पाणी मे है जिको बतलावै लोन लेवणियै नै ?"

मोडो बोल्यो, "हां-सा आ तो हुया ही करै, वेल ऊंची चढै तो रसारो तो कोई चाईजै ही।"

सिरैपच बोल्यो, "लारलै साल हरिजना नै पट्टा अर बां में पक्की साळ अर रसोई वणावण, च्यार-च्यार हजार री बात ही, चुकाणा बीस साल मे दोयसौ-दोयसौ रिपिया सालीणा, रिपिया हजार-हजार कर'र च्यार दफै मे मिलसी, पैली मेप रा हजार-हजार तो लेलिया लोगां, अबै आयग्यो चौमासो, काम एकर ठप्प हुग्यो, नीवां गोडै-गोडै सूंई उठा'र छोड राखी है, ओजू तीन पडाव और है साळ पूरी हुवण मे, फेर बीस साल में होळै-होळै चूकीजसी, कद रिपिया भरीज्या, कींरी घोडी कुण घास नीरै, इत्तै केई सरकार बदळसी। नुंई सरकार अर नुंई ही रीत-भात, कितै ही लेवणिया रा तो इत्तै फूल ही नी लाधै ?"

एकजणो बोल्यो, 'हे बो आवै रामू राम, डिकार ही नी ली, जीमग्यो गुवां रा गुंवा, बीस-बाईस हजार ! सम्मन आवै जद, दो रिपिया अगलै नै पकड़ा'र लिखवा दियो, "हाजर नही है", "घरपर नही मिल्या", ई सू नही मरै तो, पंचायत री मोहर लगवाई अर काम पक्को—फेर दो-च्यार महीना री टुक्गो।"

हरखो जाट बोल्यो, "हू तो एक ही बात जाणूं हू कै, राज मे तो कागदां

रो पेटो पूरो हुणो चाईजै, बाकी की हुवो चावै, कठै ही टैलो, कोई नीं पूछै।
केई इसा देख्या है मैं जिका एकर रा पइसा भरदिया अर बाबू, कर्जायत नै
कह दियो 'ठीक है, आयग्या, घरे पधारो, पक्की रसीद राज आपै ही पूगती
कर दे'सी', रसीद आज आवै है, रिपिया अगलै नै दूसर और भरणा
पड्या—धूड़खा'र। पच्चीसैं आपणै गांव मे दो-दो च्यार-च्यार महीनां रा
दाणियां अर की घास-फूस हुया हा का नहीं ?"

"हा हुया," एकै सागै ही कैया कैयो।

"पण पटवारी अर सिरंपच मिल'र गांव मे कैरसालो लिखवाई,
रिपिया पाचसै-सातसै गाव सू भेळा कर'र पटवारी नै दिया, वण आधा दई-
देवता अर आधा खेतरपाळ, काई कियो वो ही जाणै। गाव नै उल्टा पन्द्रै-
बीस हजार तळाव-तळाई खातर और मिल्या, माटी खोद'र थे म्हैं किसा
न्याल किया, की न की वूरो भला ही बानै, घरे बैठा दैनकी चूकी ही का
नहीं ?"

"हां," अवाज भळे वियां ही आई !

पटवारी बोल्यो, "चौधरीजी, माल-मलीदा खांवण नै माधिया अर
कूटीजण नै गोपाळो नाई, मुनाफो तो थे झाडो अर बदनाम पटवारी नै
करो।"

"थारो नांव मैं कद लियो सा, मैं तो एक अरथाउ वात कही, एक गाव
मे नही बीसां गावां मे हुई है। राज रो खजानो घणो ही लम्बो-चोड़ो है।
सगळां रो ही सीर है बी मे, पण इन्याव एक दिन जरूर ऊघडै, ई गाव री
किसी राखो ? कपड़ा में सैं नागा है पटवारीजी।"

सगळा ही बोल्या, "हा भई, वात नै तो वात ही कैणी पड़सी।"

कनकर जीसुख नाई जावै हो। पटवारी बोल्यो, "जीसुख, रिपिया लेणा
का नही ?"

"ना माईतां, बैठी सूती डूमणी घर में घालै घोड़ो, हू कनकर ही नी
निकळूं, इसै सोदै रै ?"

"लै'ले मुर्दा, अगूठो चेप्या ही मिलै है अवार तो ?"

"अर पछै कूट-कूट उगरावै जद ? राज रो काई अंधेर-खातो है ? थोड़ो
संवळो लागै, कागद आगै आया पछै, अंवळो ही घणों ही बैगो हुवै, पीढ़्यां

रो खायो कढा'र छोडै, बी बेळा कुण आडो आवै म्हारै, बी बेळा भैंस-भैंस री सग्गी, थे ही राज री ही भीड बोलस्यो ।"

"अच्छा, नही लै तो जाणदै, बैठ तो सरी, ई मे तो की नी लागै ?"

"थारै कनै बैठ'र काई केळा घोटस्यू, रामद्वारै जा'र बूदियां भेळो हुस्यूनी, मिन्दर रै आगकर अर अफसर रै लारकर ही चोखो ।"

पटवारी अर गावसेवक बोल्या, "अरे चालणो तो आपा नै ही है, पर-साद है नी आज तो बठै ?"

बारै बजगी उडीकता, लोग आखता हुग्या । रिपिया रा भूखा, केई तो साव निरणै काळजै ही हा । सूरज सिर पर आवै हो, बारै बैठा री गुद्दी बळन लागगी, तो चौकी छोड'र सै पचायत भवन मे बडग्या । बीडयाँ ही जितै तो मनवारा कर-कर घणी ही घूकाई, बुझण ही नी दी, अवै नचीता हा सै, एक दूसरै कानी तकै हा, छेकड पटवारी कोतवाळ नै दो रिपिया दे'र पाँच बण्डल मगाया । दो-च्यार पेछू बोल्या, "चिलम नै तो चिलम री मा ही जाई है, बी सो स्वाद बीडी रै धोचै मे कठै ?'

सिरेंपच हिम्मत कर'र पान रो गट्टो मगवायो । बीडी री चूचाडी सागै-सागै, चिलम रो सोख, ईसकै सो चौड़ो हु'र चेतन हुग्यो । चिलम सोऽहं-सी एक, स्वाद एक, धुवो एक, पण, जात-जात री साफ्यां न्यारी-न्यारी—आ माया ।

छेकड डोड बजी जावतां 'समितिआळा' आया । साढ़ी-तीन-च्यार बजी ताईं, लोग, पइसा ले'र निरवाळा हुया ।

पटवारी, गावसेवक अर सिरेंपच रामद्वारै पूग्या जितै जीमा-जूठो घणखरो हुग्यो हो, खाली अै ही पाच-सात आदमी रैया । धनजी अर लाल-चन्द दोनू भाई एक पाटै पर वैठा हा । आनै देखता ही बोल्या, "वडा आदम्या, उडीकता-उडीकता म्हारा तो डोळा ही दूखण लागग्या, था विना म्हे ही परसाद किया लेवां, बिराजो वैगा-सा अबै तो ।"

सिरेंपच बोल्यो, "म्हे तो खैर म्हारी करणी रै कांठै, काळा चाब्योडा है म्हारा तो, पण, थे तो लेंवता परसाद, क्यो रोसी काया नै इत्ती ताळ ?"

धनजी कैयो, "वाह सा ! आ किया हुवै, थे रुखाळा हो गांव रा, अर पटवारीजी है रोही रा, थानै छोड्या म्हे कीनला ही नो रैया, घर रा म

घाट रा ।"

क्ठो-एक बामण खडा हा, वानै धनजी कैयो, "म्हाराज, वेगीसी थाळी लगावो देखां।"

"हुकम सेठा रो, अबार लो थे।"

परियां केई लुगायां ही जीमै ही, बानै पुरसगारो चांदा बाई करै ही। नी-नी करता दोयसै-ढाईसै आदमी जीम लिया हुसी, ठावा-ठावा टोपला बाकी 'रा लगोट, बाकी नै अधपाव री एक-एक कटोरी बूंदी ।

जीमणवार हुयां पछै चादर ओढाईजी एक चैलै नै, नी-नी करता तीस-चाळीस साधु अर मैंता री मंडली जुडगी वठै। गिद्दी-घरां नै इक्कीस-इक्कीस रिपिया अर एक-एक चादर रामद्वारै री तरफ सू बाकी सगळा नै सूका इग्यारै-इग्यारै। धनजी अर चांदा बाई आपरै घर सू चढापो न्यारो कियो— इग्यारै अर पाच रै हिसाब सू अर दूसरै दिन खातर सगळै सन्तां नै आपरै घरे खीर अर पूडी रै परसाद रो नूतो न्यारो। सगळा ही कैयो, 'वाह-वाह जबरो काम कियो, लखदाद थारी कमाई नै।" एक बूढो जाट बोल्यो, "हा, खायो सो ही ऊवरघो, दियो सो ही साथ, आगै खातर पुळ त्यार करै है बापडा।"

इयां सगळां नै सेठ री वड़ाई करता देख'र, अेक बूढै बामण सू ही चुप नी रहीज्यो, वो ही मौकै रो फायदो उठावतो बोल्यो, "सगळा नै छोडो एकर, लखदाद है ई बाई नै (चादा), वारै-तेरै बरसा री ही जद मायो खुस्यो हो, वीस बरस गांव मे आई नै दूग्या न ओजूं की सू ही चौगिजर हुइ अर कीनै ही होंठ रो फटकारो ही दियो, समझ पडघां पछै, अगलो तो हाथ राख्यो ऊपर अर जी राख्यो रामजी मे, धनवाद है ई रै मात-पिता नै, दोनूं घर उजाळ दिया।"

थोडो ताळ वाद नूत पडी, सरधा सारू सगळा ही दियो, हजार-इग्यारै सै रिपिया तो आहीग्या। रिपीया गिणीजै हा—धनजी जोड़ मिलावै हो। दो आदमी लारै आपस मे वात करै हा होळै-होळै—"हा अबै सुरू हुई है जोड़ लागणी, लगती ही रैसी जीसी जितै, ग्रस्थी साधु हुग्यो, साधु मैंत वणग्यो, अर मैंत पाछो ही घरवारघा रो बाप। बीजळी, पखा, कमरा अर साज-सजावट। जोड़ बघती रैसी, ठाठ लागतो रैसी, पग लम्बां किया पछै, लारै

लड़ाई, अर मुनाफो की तीसरै रो। दुनियां ईं सू ही राजी है। मैंत रो गधो अन्त-पन्त पच'र मरण नै है।

दूसरो बोल्यो, "वैकुंठी काढ़ण रा मजा लेवण नै दुनिया है, अै जीवती लासा दुनिया मे आवै ही ईं खातर है।"

धनजी एकर अणत-चवदस रो जागण दिरायो और ब्रामण-भोज कियो। जागण री क्यो बात करो, ओजू बो गाव री जीभ पर है। बूंदी री प्लेटा अर चाय तो हा ही, पचास बडळ बीडी अर कीतो तमाखू और लाग्या, चर्चा तो असली आरी है।

कम हजारोमल ही नी है, ईं सू च्यार दिन पैला वारै बेटै री बहू अठ्ठाई रो उच्छव मनायो। भाईपो अर मेळ-ढबआळा सै ही जीम्या, दो मिठाई अर पूड़ी साग। पाच-सात बूढ़िया अर पाखरिया चर्चा करै हा, आठ-आठ दिन तांई निराहार रैणो कोई हंसी-खेल नी है, साधुवां री आंख्या ही चितराईजे, तखदार है ईं वाणियै री बेटी नै, लाखा लूटै है बापड़ी पुन रा, भाग्या रै आवै इसी लिछमी, आपा काई मिनख हां, आखो दिन खोरसो अर रोज आधै कुडै दळियै रो नास, धरती नै मारो भार, आपा सू तो दळियै री हाडी ही आछी, ऊंरै बी सू चौगुणो देवै पाछो, ओग मे तपावो चूकारो ही नी करै, ज्यू-ज्यू तपावो पक्की हुवै।"

ईयां देखां जद कीति-पुन मे दोना री ही चर्चा है, पण वां घरां मे आवण-जावणआळा, हीरो बामण अर छोगजी साध, सिनाथ आगै और ही बात करै हा, कै "अै मुलढब बिना काटो ही नी काढ़ै, दिनूगै दो घडी झाझरकै सू लगा'र रात रो बारै ताई तो म्हारा कसरा काढ़ै, लुगायां म्हारी दाळ-दळियो, हाती-पांळी, अर म्हे पायचा टांग-टांग भोग आगै खुरपा देवती वेळा पुन री लैण सागै म्हानै ही खड़ा कर लेसी, ग्यौरसै कांनी आख हुलावां; ही नी लै, म्हारो भला ही आं कीती देखतां-देखतां आंख्यां ही दूखो, मजूरी री मिणियां मोगै जद जी तो घणो ही बळै, पण उपाव कांई, म्हे देखां नी टूटै सो ठीक है।"

सिनाथ बोल्यो, "पण इक-तरफी ठीक थोड़ी ही निभै दादा ! थे जाणता अर भोगता थकां ही थारै साच नै बारै नी काढ सको, तो थारो वो साच कूड़ गू ही कमजोर है। मन मे मोरचो माडयां किसी लड़ाई फतै हुवै ? दोरा नी

हुवो तो की कैऊ ?"

"जजमान दोरा क्यों हुस्या, हे जिकी जरूर भाखो।"

"दादा, सामनै पूछ हिलाणी अर पूठ पाछै घोरका करणा, ओ बौपार मिनख री चेतना रो नी है,—है तो कुत्ता पछै काई करसी ? थांनै आं मान राख्या है पीर, बवर्ची, भिश्ती, खर। एकै कांनै थांनै हाथ जोड़'र कैसी, 'पगे लागू म्हाराज,' अर दूजे कानै हुकम दे' सी, 'म्हाराज, बस-स्टैण्ड बीटों पुगार आणो है थे वी बेळा ही टुरस्यो, घिरतां नै पावलो का आठाना पकडा दे'सी, मजूरी रै नांव पर नही. पुन रै नांव, अर थे आसीरवाद देंतता, जस गावता बन्द ही नी हुवो। हू समझू म्हाराज, इसी भेडाँ धरती पर ऊन खोसावण नै ही जल्मै है। तड़को, भिस्टो थांनै, घर रो काम खोटी कर'र ही थे तो बी सागी भगवान री पूजा मे ही जा ऊभस्यो जिकै री बाट में आत्मगौरव रो टोपो नी हुवै वो उजास नी कर सकै।"

हीरो बोल्यो 'जजमान, साची बात आ है कै म्हे आसागीर आज ताँई आं रूंखां री छांयां हेठै ऊभ'र आरी सोनळिया डाळघां कांनी आंख्यां फाड़ी, आं रो उतारू अन्न खायो, वो अंजळ मूं बण्यै मन में आत्मगौरव रो उजास कठै पण आरां चरित देख-देख अबै म्हारो साच थारै आवण नै तड़का तोड़ै, घणां ही दिन ऊजड चाल्या, अबै ई चाळोसी मे अदाज री हत्या कर'र आवती पीढी नै कमजोर नी घालां।"

"थारी आपरी कमजोरी नै थे लखली तो दूजै नै दोस देणों विरथा है।"

"दोस जजमान म्हे आंनै थोड़ी ही देवा, विरोध तो आरी नीति सू है, म्हारी नीति ही जे अनीति है तो बीनै पाळती थोडी ही चाईजै।"

"दादा अै आसार अच्छा है, ऊपर उठण खातर।"

सिंझ्या बजी पांचेक पटवारी अर गांवसेवक धनजी री दूकान पूग्या। सेठ बैठो ही देखतां ही, ऊभो हु'र बोल्यो, "आवोसा बडा आदम्यां, किया मैंर कर दी अबार ?"

पटवारी बोल्यो, "मैंर थयांरी है, मनवार रा काचा हां म्हे तो, थां

आज ठेठ कागोलियँ ताँई म्हानैं जिमा दिया—ठूस-ठूस'र। अबै जियां-कियां ही सिञ्या सू पैलां म्हानैं पचाणों जरूरी हुग्यो, कारण म्हारैं तो आज असली-परसाद रो 'प्रोगराम, है थानैं तो ठा ही है आज सेराआळा पइसड़ा गाव मे बाटया है। बस आ ही समझलो, परसाद पचावता फिरां हां और कीनैं ही धक्का नी खा'र इंनै आयग्या।"

' आछो काम कियो, थारा पगलिया कठै पड्या है, फरमावो म्हारै लायक सेवा-चाकरी ?" धनजी सगळी बात नैं सावल समझ'र मन ही मन मुळ'कर पूछयो।

पटवारी आपरी जेब सू बीस रिपिया निकाळ'र बोल्यो, "अै, बीस रिपिया देऊ आपनैं, दीपो दरोगो आवैलो आप कनै, मिर्च-मसालो मागै ज्यूं दे देया।"

"हुकम, और कोई ? हां, पदमा चौधरण टकरी आपसूं का नहीं ?"

"नी टकरी, क्यो ?"

' पाच-सात दिन पैला वण कैयो बतावै है कै पटवारीड़ो मिलै तो, बीरा पूर बैतूं तोळू दरोगै नैं वण मरायो बेईमान, थारैं अर हजारीमल खातर कैयो कै, रामद्वारैंआळै डैणियै अर गूगियै छोरैं रै छुरी वां फिरवाई।"

"बीनैं कण ही तो कैयो हुसी सेठा ?"

"या मू किसी छांनी है एक ही है वो चूचको लगावणआळो सिनाथ, कुचाल रो कीड़ो है, म्हे तो खैर, बाणिया हां म्हारी मूछ तो खैर इंयां नही बियां ही सही, पण एक घर तो डाकण ही टाळै, का नही ?"

"तो जद करां कोई टोटको ?"

"आ तो हू काई बताऊं आपनैं, थां सू किसी छानी है, मैं तो हीं जिसी रागदी आप आगै।"

"पण की मदत तो आपरी हो मिलणी चाईजै ? '

"मदत री तो देखो सा आ है कै थारै चोर चोरी करै, घर मे आ'र साच बोलै, लाटी-राबड़ी फरण जोगा म्हे नी, अर थाणै-कचेड़ी फिरणो म्हां मू तावै आवैनी, हां, पांच-पचास रिपिया साजणा हुवै, वै थांनै मटां तो म्हांनै ओळभो।'

"थारो इत्तो हाथ ऊपर हुया पाछै म्हे बिना तरवार माथो देड़ करदा

देख बन्दै री फैरी, अम्मा तेरी क मेरी, खडको करता ताळ कितीक लागै ?"

"स्याणै नै तो मैन ही करणी पडै पटवारीजी, घणो दळियो दळनै मूं काई फायदो ?"

"आगै थे दायतो ही फरमावो, म्हे समझग्या ।'

गया बै। धनजी सोचै हो कै ओसर चूकी डूमणी गावै ताळ-बेताल। ओसर देख'र नही विणजै वो बाणियो ही गवार। मोकै पर लाग्योड़ी *ठीकरी ही घडो फोड़ अळगो करै, वो काई जाणसी, खस्यो है की सूं ही।* धणी करसी तो लागज्यासी हजार-दो हजार, काई केस खांडो हुवै, आंरी ही जूती आंरो ही सिर, बांडै कुत्ते रो लाय मे बळै ही कांई ? चाकी चालै तो चालो, पीसीजसी अगला ही आपां न ऊरीजां अर नै ऊपणीजा कठै ही ।"

"सेठ सा'ब ?" अवाज अचाणचकी सेठ रै कानां मे पडी, बीरै विचार री कततो डोरो टूटग्यो। वण सामनै देख्यो तो थळी कनै केसरो कोटवाळ ऊभो है।

"वो बैठग्यो, हाथ जोड'र। सेठी वीनै एडी सू चोटी तांई देख्यो। जिन खोजा तिन पाइयाँ, जिको रात-दिन जिकी अधेडवुण मे बसै, मोडो-बेगी बीनै बा मिलै ही। बीरै मन मे एकर इसो विचार आयो, बीसू बीरो रूं-रूं राजी हुग्यो वण केसरै कानी एकर और देख्यो, खुरचणो-सी धोळी पतळी दाडी, मू में ऊपरला दो-एक दात, वै ही हालै। सेठ एकर-दो दफै नही, बीस साल सू ईनै देखै, टैम-बेटैम बोवार ही करै ई सागै पण जिसो आछो अर अपणायतआळो वो आज लागै बिसो पैलां कदेई नी, तीर मांरा, मोको है, लाग्यो तो ठीक है, नही तो अभ्यास ही सही। सोच र सेठ कैयो, "आव केसरा, पैलां तो आ बता, आज परसाद लियो का नही बूदिया, पूडी धाप'र ?"

"नही सा।"

"क्यों भई घर में घाणी अर तेलो लूखो, मुलक जीम्यो अर तू नही, आं कियां ?"

"खेतडै कानी गयोडो हो, अबार ही आयो हूं।"

"कोई बात नी, कूकडो बोलै जद ही सांझरको, आयो जद ही सही, अबै

ले लिए, हा, अबै वता किया आयो ?"

"गुड लेणो है आधो कीलो।"

"देस्यां, थारी तो साळती पड़ती सुणी।"

"हा पडर्या नी।"

"तो तू बठै कांई लेवै डगळियां मे बैठो, कितीक रात, कितोक झांझ-रको, कोई परड़ोट और खासी बूढ़ै-बारै ?"

"तो कठै जाऊ ?"

"थारै किसा नान्हड़िया रोवै लारै, का बीनणी बरजै बारै जावतै नै ?"

"तो ही सेठा, सिर घुसोवण नै कठै ही दो हाथ कातरो तो चाईजैनी ?"

"अर खावण-पीवण नै ?"

"बो तो सगळां सू पैलां।"

"चावड़ी रो चोसो ही लेंवतो है सो ?"

"एक टैम तो झलगी सेठा।"

"दो टंक पकी-पकाई, एक टेम चाय, फाटेसर गाभो-चीरड़ो भर होड़ै खातर तै साईंनी ही कोई बीनणी ढूढदू तो किया ?"

"बीनणी अबै लकड़ा में लाधसी कोई, उठू ही गोडां रै हाथ दे'र हूं।"

"तो खोळै खातर कोई सुपात्र सूधो छोरो देखदूं ?"

हां अबकै की जचती फरमाई, पण म्हारै कनै आ'र बो कांई लेसी, एक सेतड़ियो तो है, पगा नीचे, और तो हुवा हरेहर है।"

"लेणी अगलै नै आसीस है थारै सूं, धन री अगलै रै बायड़ ही नही हुवै तो ?"

"तो सेठा माईताळी करो।"

"है पक्को नी।"

"पक्को को कोई अगलो ही रैयां पार पड़सी।"

"आज काई वार है, सनिवार ही है नी ?"

"हा।"

"तो बस आज ही रोपदै तिडो, थावर कीजै थरपना, थारी मवली अर गूदड़ ले आ, टबियो, मुरचियो, कोनै ही देणो चावै तो दिरा'र लारो छुडा, तू आवरो आपणै बाडैआळी गाळ मे, थारै किमी अणसैधो है वा, थारै सू तावै

आवै तो कोई कुत्तो-विल्लो काढ दिया कर घर सूं, बाडै सूं, अर रोटी खा, गाभा पै'र, छोरै कनियै नैं थारै नांवै कर दियो समझलै, ईयां'स सैं टाबर थारा ही है, थारो जो नहीं धापै तो खोळै रो कागद करवा सकै, राज मे।"

वो सेठ रै सामों देखतो रैयो दो मिट, 'ओ इयां किया वोलै आज, भांग लियोडी है का माथो लैण उतरग्यो ईंरो', वो वोल्यो, "सेठां रै आज मसकरी करण री कांई मन मे आई—अर बा ही म्हारै सागै ?"

"थारी सौगन केसरा, रिजक पर वैठो हूं, गणेशजी री गिद्दी है आ, आज कोई ध्यान मे ढूकगी इसी ही, तू काई जाणसी कै धनजी रो कोटवाळ हू, हजारूं रिपिया लागै गवाडी में आए महीनै, सौ-पचास वेसी ही सही, तैं बीस साल म्हारी चाकरी वजाई तो म्हे पाच-सात साल वजावण जोगा ही नी ? तूं आ नही सोचै कै म्हारै आज कोई ही नी है, खाली ईं अणेसै नैं मेटण; तू जाणै का हू, तीजो आपणी पचायती में आवै ही क्यो, जा, आजो-आज आपणै तो लगा डेरा साळ मे। रिपिया जे पांच-पचास थारै कनै है तो राख थारा, खेतड़ो है बी में दो हळ रा ऊमरा आपणै जचसी तो करवा लेस्या, गाजर री पूगी बाजै विनै वजाए, नही तो वेच दिए कदेई, आछी लागै बा थारी, हां जा देखा, ढील मत कर, आवरो वैगो-सो।"

केसरो टुर तो गयो पण मन मे ओजू दुविधा ही, आ काईं जची सेठ रै, फेर सोच्यो, आपां बीस बरस सू आवां-जावां अठै, एकलपो हूं अबै, पूरो दीखै भाळै नी दया बापरगी है कोई, इया ईं रै किसो भार है, कुत्ता ही तो धापै अठै, पण कनियै नैं खोळै कर दियो समझलै ? अै तो ठट्ठा ही लाग्या, चोखो आपणो काईं लियो, आपानै तो दो रोटी मिलणी चाईजै, दो-च्यार पूर घणां बारै महीना मे, अध-घड़ी सूरज थका ही वण आपरी साळ स्यधली।

सिंझ्या सात-सवा-सात वजी हुसी। खेतां सू हारघा-थाक्या लोग घरे पूगग्या, इक्का-दुक्का पूगै हा। नान्हा कटडिया अर लुवारा वाछडिया उदास हुयोड़ा आपरी मावां सू मिलाप नैं उडीकै हा। सुवावडी गाया अर भैंसा रा मन हेज सू फाटै हा अर अवाड़ा दूध सू। खेता सू पाछी आवती घर-धिरियाण्यां रै माथां पर घास रा भारिया का खारिया में खाली वरतण अर नान्हा वाळक हा। हारा कनै घर री वूढी-वडेरी का छोरया खदखदीजतै खीचड़ै मे डोया फेरती बीनै वैगो सिजोवण री उतावळ में ही।

साव गरीब अर निचलै वर्ग मे इसा घर ही घणा ही है जिका ठडो लावण-लगावण घास री भारक्या नाख-नाख सेठ साहूकारा रै सू ला'र फेर टुकडा सेकसी। केई तो इसा है जिका रोज कुवो खोदणो अर ताजो पाणी पीणो, आवता ही कळचक्की जा'र आटो लासी। हारा अर चूला रो धुवो गैरै अधेरै सागै मिल'र एकाकार हुवै हो। पण धनजी अर हजारीमलजी री दूकाना मे चानणो, अर तोला-जोखो जोरां पर हो। गणेशजी अर लिछमीजी आगै जगती अगरबत्या सू दूकान रो भरीजतो अकास की धुंवों बरामदै कानी ही फैकै हो।

पण, पचायत रै लारलै वाडै मे अबार और ही चैल-पैल है। दस-बारै आदमी हुवैला, पणखरा आमे वै ही जिका नै आज सेरा रा पइसा मिल्या है। पटवारी, गावसेवक अर सकेट्री तो इसै कामां मे अणनूत्या मेमान है, गुड विना चौथ पूजीजै तो आ विना अै काम हुवै। चाळीस रिपिया मे एक बकरियो आयो है। मोती दरोगो अर भूरियो नायक मास बणावण रा कारीगर है। पन्द्रै बोतला काळू कलाळ अध-घडी पैला राख'र गयो है। आ मे बो सूरतियो ही है, जिकै री बहू लारै सै, टक रै आटै खातर आपरी सासू अर टीगरा रा कूट-कूट हाड खोळा कर दिया हा अर फेर दूसर चूलो चढणो ओखो हुग्यो, कान्है कोटवाळ रो बेटो किसो कम है, आ मे ही बो है जिकै रो बाप अर टीगर टुकड़ा खातर फळसा धोकता फिरै अर लुगाई घूड़ कठै ही खावै। इसा ही पाचिया, पेमला है जिका रै घरे रोटी-दाता वैर है।

पटवारी अर ईसरसिह दोवा'दो परियो बैठा आपरी कोई, छानी गुरबत करै हा अर सागै-सागै गुटकियो ही लेवै हा। वै बी चैल-पैल नै छोड'र कद उठग्या, वै ही जाणै ?

बरस चौतीस-पैतीसेक रो ईसरसिह दसवो ताई पढयोडो है। तैसील मे पेसकार हो कदेई, घूस लेवतो झलग्यो हो एकर, बरखास्त हुग्यो। बाप नै डांको-सो पढै अध-माणस ही समझो। पेसकारी मे झलो दारू री आदत ओजू फोडा घालै। टीगर ग्यारियोक है, सेतड़ा है दो पगां नीचै। एक सेत सिनाथ रै सियाँ-जोड है। धीरजी रै एक पीढी आतरै ही भतीजो लागै।

रात री फोर्ट अन्दाजन ग्यारै-साढी-ग्यारै बजी हुसी, गाँव मे सोपो

कीनै वैठे, चला'र मोत रै मगरां में आगळी करणी म्हारै नी जचै, राज मा-बाप है, जाणो ही हुवै तो सिरैंपंच सूं बात करो", धनजी आ कह्'र हाथ पसार दिया।

वण आदमी आ'र ही जिसी बात, पाछी ही भावोभाव अगला रै पल्लै घालदी। पदमा बोली, "राजा जोगी, कह्'र इया अै गिरकै तो सिरको, आपमुत्तळवियां किसै दिन ढाल घुमाई ? पण, तोळियै अर गूंगियै-मूंगियै री राज नै किसी वास पड़ै ही, मरी तो की गावआळै नै ही खाई है।"

सिनाथ बोल्यो, "दादी रामद्वारैआळै मोडियै नै तो धन्नै अर वी गूंगियै नै अकल काढ'र हजारीमल टोरचा, आधो अर अजाण वरावर हुवै, हींग लागी न फिटकड़ी रग आपै ही आछो आयग्यो, थाणैदार पर अैसान, अर आपरो सकट टळ्यो।"

"वाणियो खावै सैंधै नै अर कुत्तो खावै अणसैंधै नै, कैंवा कूडी थोडी ही है ?"

"अवार रै ई राज अर आ मे काई फरक है, दादी, राज ही वाढै अर अै ही वाढै, एक अस्पताळ मे लेजा'र अर दूजो दूकान मे, पण दूजो राज सूं ही ऊचो पडे, वीरो जचा'र वाढचोडो, जियै जितै ही सुंवो नी हुवै।"

"कोई मत जावो रे, आपांनै तो वानगी देखणी ही है एकर, होम करता हाथ वळसी तो बळो।"

दूसरै दिन, भोराभोर, पदमा अर सिनाथ दोनूं पूगग्या; कुसमा कटा-रिया रै वगलै। दस मिट ही मसा हुया हुसी, सूरदास ही आ पूग्यो डपका खावतो, कोनै ही सागै लें'र।

"थे क्यों आया वावा", सिनाथ पूछचो।

"हूं गाव मे नी वसू ?"

"लै तो म्हे ही आवता, म्हे देख्यो, थांनै तो फोडा पडसी ही, डागडी खैंचे-खैंचे म्हे फिरस्या तो की फोड़ा म्हारै ही पाती आसी।"

"फोड़ा तो आंधो हुयो वी दिन सू ही सुरू हुग्या हा, किसो अन्न है वांरो, अर इयां सूरदासां री किसी दिस, मूढो करै वीनै ही टुर पडै, पण म्हारै कारण थे वेसी फोडां सू टळग्या तो ही चोखो।"

सिनाथ की झेपग्यो पण सूरदास नै किसो दीसै हो, वोल्यो, "आ...

आछो, आयग्या तो, दो सूं तीन हुयोड़ा चोखा ही हां, बैठो।"

एक हाजरियै सागै, सिनाथ कैवा दियो कै ईं ढग सूं दो-तीन आदमी आप सूं मिलण आया है। अध घंटा हुगी, आनै एक वैच पर बारै वैठा नैं। उडीकता-उडीकता आखता हुग्या। सिनाथ उठ'र बरामदै मे गयो। आमां-सामा दो चिक लाग्योडा कमरा, बिचाळै एक दरवाजो घर में जांवण खातर खुलो हो अबार। "इयां अचाणचकी हो माय किया जाऊं", बण खंखारो कियो। खखारै रै सागै ही एक कुत्तो भुस्यो। बण सोच्यो, 'आवैनी गडक कठै ही चट्टी करै।" माय घटी बाजी, दो मिंट बाद एक आदमी चिक छेड़ी कर'र बारै आयो, बोल्यो, "क्यो-सा, कठै सूं आया, काई चावो ?"

पदमा बोली, "तूं इती ही कह दिए बीरा, कै पदमा जाटणी आई है दरसण करण नैं।"

आदमी गयो अर आधी मिंट मे हीं भळै आयो, बोल्यो, "एकर बैठो बे बारली बैंच पर।"

दस मिंट और बैंठा रैया अै, फेर वो ही आदमी आ'र बोल्यो, "चालो, मिललो अबै।"

अै तीनूं ही बरामदै मे आयग्या, बा वैत री बाजूदार एक कुरसी पर बैठी ही चिक आगै। तीन स्टूल पड्या हा कनै ही। सामा-सामा कर'र अै हीं बैठग्या बा पर, बोली, "किया आया ?"

दादी बोली, "पैला तो आ बतावो, मनै ओळखी का नही ?"

"हा ओळखली माजी, पण इसी बातां मे टैम मत लगावो, आणो किया हुयो, बा सुणावो।"

सिनाथ बोल्यो, "नसबन्दीआळै रोळै सूं वडो भो है गाव मे। परसूं ही दस-बारै आदमी गाव सूं पकड़'र लेयग्या थाणैआळा, बा मे एक तो कवारो ही है, दो महीना छेडै फेरा हुता, एक रै एक छोरो अर छोरी है, छोरो आज मरु काल मरू इसो है, एक बरस साठेक रो है, एक गुगो है अर···।"

"हा हूं समझगी थारी बात, पण नसबन्दी रै ईं सवाल नै ले'र तो कठै ही मूंडै बाफ ही मत काढ्या। अफसरा नै ही नही, एम. एल. ए अर एम. पी. सगळा नै ही हिदायत है कै जादा सूं जादा ईं अभियान नै चलावो, मूका सागै बळन नै कोई आतो हो वट सकै पण बीरो तो रोळो-रप्पो हुणों ही नही

चाईजै, बी सू आदमी मरै थोड़ो ही है, एमरजैन्सी है अबार, पोलिसी ही इसी है, थोड़ो ही वैम हुय्यो तो तुरताफुरत मांय, जमानत ही नी हुवै, च्यारूंमेर सी. आई. डी. फिरै, कुरसी सू ही कंवर सा'व रो काम करड़ो है। और कोई काम है तो बोलो।"

दादी बोली, "म्हारी हजारू जीभा री तागत थारी एक जीभ मे है, म्हे तो ई खालड़े रै टुकड़े नै ताळवै रै इया ही चेप्या फिरां, दळियो तो ईं सू उगाळा ही हा, बाकी न तो म्हारी चलै अर न म्हांनै बोलणो ही आवै, पण म्हानै नही आवै तो काई, म्हारी जीभ तो थे हो, थे आगै अरज तो करो दियोडी म्हारी जीभ सू।"

"अरज करू क्यो घर म्हारो पाणी मे है?"

"बताणों थारो फरज है, टाळ'र लिया है हजारूं आदम्या थानै, अर सावळ कैवता ही, इंया किसा थानै तोप रै मूढै चाढै?"

"मैं थानै कह दियोनी कै और कोई काम है तो बतावो, म्हारै हुवै देरी।"

"और काम ओ है कै म्हानै सेर-अच्छेर संखियै री मैर करावो।"

"काई करो'ला सखियै रो?"

"थोड़ो-थोडो लिया पछै, न म्हानै कूकणो पड़ै कीरै ही आगै अर न बापड़ै राजआळा नै तापडनो पड़ै म्हारै लारै। थे नही कैणै सको तो इत्ती तो करो कै एकर मनै सागण जाग्यां लेजा'र खड़ी कर दो, बा सत्पुरसा रा दरसण कर'र एकर रळी तो पूरी कर लू।"

"माजी थे हुया हो गूगा, बानै मिनिस्टरां री सुणण नै ही फुरसत नी मिलै, थे अर हू किसी चकारी में हां।"

सूरदास बोल्यो, "एम. एल. ए. सा'ब गांव मे तो पटवारी, सिरैपच, गावसेवक, अर बारै अफसर अर सिपाई सै आधा हुया फिरै, घर गिणै न गवाड़, जिकै मिनख रै गपकी घलगी, बीनै ही ले टुरै, बा आंधा सूं तो की पिंड छुडावो म्हारो।"

"बाबा तू ही तो आधो ही है, पैला जावतो थारो ही हूणों चाईजै।"

"हा, हू तो आधो ही, एम. एल. ए. सा, पण दिन मे दो-तीन रोटी सूं बेसी उजाड़ नी करूं, बै ही म्हारी कमा'र, पण बै आंधा [illegible]

करै, खुलती गवाही ढकै, इत्तो ही फरक है वा में अर म्हारै में, म्हारै जिसा ही आधा, थे जे बातै ही करवा नांखो तो बड़ी मैर हुवै थारी।"

वा चिड़गी, बोली, "ठीक है, हू समझगी थारो रोग, म्हारै कनै ई रो कोई इलाज नी है, जावो थे लोग, तीन बजी मनै दो बस ले'र जैपुर टुरणो है, काल प्रोग्राम है बारो, लाखू आदमी पूगसी बठै। "हां, थारो नांव तो सिनाथ है नी ?" वा लारै जावती सिनाथ कानी देख'र बोली।

"हा सा।"

"लारली दफै म्हारो विरोध करण में सगळां सू आगड़िया में आप राम ही हा नी ?"

"दारू री बोतलां नैं ले'र हो सा।"

"पछै तो बन्द हुग्यो देस में दारू ?"

"मैं तो कैयो सा, गांधी री दुहाई सागै दारू रो काईं सम्बन्ध ?"

"म्हारै मे जद आस्था ही नहीं तो अठै आवण रो फोड़ो ही क्यों देखो ?"

"पण जीत्या पछै तो विरोधी अर बेविरोधी सै आपरा ही है, सै एक लाडू मे गुधग्या, बीरी किसी कोर तो खारी अर किसी मीठी, धिगाणै भींत क्यों खीचो बिचाळै ?"

"ज्ञान मोड़ो आयो, यो बेळा तो आंख्या अकास मे ही।"

"अर अबार आपरी है सा।"

"हा है, निकळो अठै सू, कण ग्यूं तो दियो थानै कै अठै पधारो।"

सिनाथ देख्यो वाजो कठै ही बिगड नही जावै, भाग री कमरै सू आवाज आई टणणण, टणणण—फोन आयो दीखै हो कठै सू ही। बा कमरै कानी टुरी, अर अै तीनूं, आमा जठीनै हो। पगोथिया सू उतरतो-उतरतो सूरदास बोल्यो, "सिनाथ तो विरोधी हो, पण पदमा तो फूल बुहारती चालै ही आगै-आगै, बीनै तो कीं ख्याल करती।"

डोकरो बोलो, "विरोधी हो तो, ओ किसी आपरी सिकायत सुणावै हो आ तो आगै गाव री सिकायत ही।"

पिछ पड़ी बारी कनकर निवळतै सिनाथ नैं सुणीज्यो, "हां, मैं तीन बजे रवाना हो रही हू—कार से, बसों को आध घंटे पहले रवाना कर रही

हू, मैं सीधी कोठी ही पहुचूगी, वे खुद कह्या है, यही है, तो फिर एक मिंट बात कराओ।"

डोकरी अर सिनाथ रै कांधै पर हाथ दियां सूरदास, भूखा, तिस्सा अर उदास बस रै अड्डै कांनी वगै हा। काळजै असन्तोष अर होठां पर खटाई लियां थै अड्डै पर आ'र बैठग्या। बस हूकण में ओजू एक घंटा बाकी हो।

डोकरी थेलियो खोल'र एक न्यातणै में बध्योड़ा दो पीडिया काढ्या, तीनां दो गुटका पाणी भावै जिसो की आधार कर लियो। सामनै पौ ही, एक बूटीवाज डोकरो पाणी पावै हो। नीचलै होठ नीचै खासो-सारो जरदो दे राख्यो हो। कोई दो-पाच पइसा देवै बीनै ठंडो पाणी कोरी मटकी सू पावै अर पावै ही ढंग सूं, नही जिका नै एक मोटी बाल्टी भरी बी मां सू; पाणी ही की गिदळचोड़ो, गरम अर वेस्वादो। सूरदास बूक माडी, डोकरै अरड़ दे'सी लोटो ऊधा दियो, एक गुटको लेईज्जो हुसी, बाकी पाणी बूक ऊपर कर नीचै, मगळा पूर भीजग्या। सूरदास रै कठै खटाव, "हू तो आंधो हू, म्हारै दांई तू है कांई ?"

"क्या बोलियो मूडै सू पोणी पीणों है तो पी, नही तो ओ पडियो रस्तो नाप इठै सू, रंग जमावै है क्या म्हारै माथै ?"

सिनाथ बोल्यो, "ओ तो ठीक ही बोल्यो है, तूं अठै पाणी पावण बैठो है का नसो उगावण नै ? ह्येरी लै अर ल्याळा पडै, दिन भर में आधी बाल्टी तो लाळां पावै लोगा नै, अर करडावण मे पाती ही नी दै ?"

"म्है इयै मे क्या कैयो, इत्तो गरम हूण री क्या जरूत है ?"

"गै तो पूर भिजो दिया, नास्यां मे पाणी चढग्यो, अळगूट सू आंदरां अगनै री बारै आवै अर कठ ओजू सूका ही पड्या है, और तू कांई डांग मारू हो ?"

डोकरी खड़ी ही कनै ही, बोली, "तू अठै तैसीलदार लाग्योड़ो है का पाणी पावण नै ? लर-लर करतो घणों ही, है तो इणो दं गेळी में डुबो-डुबो'र काढू दो-तीन दफै भेड नै काढै ज्यू, हणै थारी भाग जावै कडै ही, दाढो वैन्पियै गे सो, गळती मै तो नी देखै, घोरका और करै।"

वण ही कैयो "जावण दो जावण दो माजी, म्हाराज भोळो"

"आगैमारू ध्यान राख्या करो ब्यासजी।"

"भोळो है तो सेठां में तो नी पियै, पाच पइसा कोई देवै तो, "हां बाबूसा, अबार लायो ठडोटीप जळ", फट लोटो हाथ में देंवतो ही हुवै। अबार लोरी में बैठी एक मेठाणी नै करवो ले'र पा'र आयो है, म्हाराज रो मूंढो लियो आगीनै सू, म्हाराजा रो डोळ हूंतो तो देस नै देषण देवता नी आवता ?"

ईं थोडी गरमागरमी रो फळ ओ हुयो कै डोकरी अर मिनाय नै पाणी ठंडो ही नही, हाथ में लोटो और दे दियो—पाणी रसोरो पीवण नै। सामनै री एक भीत पर सिनाय एक ओळी बांचै हो, 'अनुशासन ही देश को महान बनाता है'. फेर आगै 'यहां कोई पेशाब न करें' पण लोगां मूत-मूत बी भीत रो सत्यानास कर राख्यो हो अर बीरै रसारै-रसारै बेसुमार टट्टी न्यारी। भीत सू पाच-सात पावडा परिया पैसावघर हो, किवाड़ियां कोई लेयग्यो दीसै हो, परियां सू ही बीरी दुरगन्ध आवै ही—माथो ऊचो चढै जिसो। सिनाय सोचै हो, "ईया भीता, पाखाना अर पैसावघरा पर लिख्यां अनुशासन रैया करै—लोगां अनुशासन रै आखरा ताई धार दे राखी हैं। फेर बीनै ध्यान आयो हजारीमल री दूकान में टग्योड़ा नौकार, धनजी रै बरामदै में लिख्योडा दोहा, चौपाई, अर च्यार सूत्र ? सगळा जीवण सू कोसां दूर, दिखाऊ अर जड़ भींता रो फुटरापो—कूडो प्रचार; ई पर सरकार अर समाज जीवता हुसी ? इया जे सरकार जियै तो बीनै मरण ही कुण दै, पण तो ही दौडै बीनै ही है।" विचारां में धोयोडो, बो थोड़ो और आगै निकळग्यो।

पण देख्यो, गाडैआळो एक जवान छोरो, गांव रै कोई बूढै गाहक सागै बोलै हो। गाहक कैयो, "आ अठानी खोटी है बाबू सा'व, दोनां कानी एक-सी, आक ही नी दीसै, अबार थोडी-सी ताळ पैलां हूं भुजिया ले'र गयो आप सू, बदळदो बाबू।"

गाडैआळो बोल्यो, "बाबा कान में घालले ई नै, सेह को पड़ैनी कान में।"

"अरे बीरा पौ ताई ही तो जा'र आयो हू, संभाळो ले'र देखलै, म्हारै कनै दूजी कोई हुवै तो आठानी।"

"रह दियो माथो मन खा," हाथ सूं सैंवतो-सो धक्को दे'र डोकरै नै

वण आगो कर दियो, "चाल आगीनैं, धिगाणै कठै ही नावै मंडीजसी।"

डोकरो बोल्यो, "बावू, इन्याव है ओ तो, ओजू तो भुजिया म्हारैं हाथ में ही पड्या है।"

"बताऊं कांई, आयो घणो ही साहूकार ?"

गाडै रैं एक फाटकै पर लिख्योडो हो, 'युवक कांग्रेस जिन्दाबाद', 'युवा नेता है हृदय सम्राट', इया ही केई नारा अर केई नाव और। गाडैआळै री छीलरी चेतना पर जरूर कोई गळतफैमी तिरै ही अर चैरै पर एक कूडो क्षह। आसैं-पासैं खडै और गाडैआळां सूं ओ अपणै आपनैं की न्यारो-सो समझनो लाग्यो सिनाय नैं। गरीब डोकरो भळै ईं कनैं नी आयो, टुरग्यो, एकर-दो दफै ईं कानी मुड़-मुड देख्यो जरूर। थोड़ो परिया, एक सहरी जवान चालतो ही टुणकळो नाखग्यो, "आ नै अवार मत छेडो, आरा दिया ही दिन है अवार तो, आंरी तो पूजा करो, युवा सम्मेलन मे ओ अबार ही गोहाटी जा'र आयो है ?"

अण सुण लियो दीसै हो, बोल्यो, "हां आयो हू, कर लेया कोई की ?"

थोडी दूर परियां एक सिपाई खडो, काईताळ सू ईं नैं देखै हो, बोल्यो, "अरे मिनिस्टरां री हिम्मत ही नी हुवै, गैलोतजी नैं बतळावण री, क्यो आफत नैं तेडो देवो आ नैं छेड'र ?" बस, गाडैआळै रो रोब और चौडो हुग्यो चैरै पर। सिनाय सोचै हो, 'देखो देस रा भाग जाग्या है, अर मिनखां रो तोड़ो आयो है। गूघला रैं फण निकळग्या, अनीता नेता हुग्या अर नेता बापड़ा दीखणा ही बन्द, ओ गाडो चालसी किंयां ? कोई सरकार, कोई नेता आछा है तो, काम करो आछा। गाडा, ट्राम अर ट्रक काळा करणै सू काईं फायदो ?" फेर सोच्यो "ठीक ही तो है, जिती ऊमर रोगन रैं आ आखरां री है वित्ती ही ऊमर अवार रै नुंवै नेतांवा री।" विचारा री ईं धुन मे वो दादी कनैं आ'र बैठग्यो। ओजू अध घन्टा नैडो ही बस टुरण मे।

दादी बोली, "देखो, वा ही टैम ही, मनैं आ टुकडो ही नी खावण देवती, 'चालो मा-सा, फुरती करो देखा' अर हू गूगी, थोपरी छाया रैं वज्जै मे हुयोड़ी-सी ईं रै लारैं आघी देखी न पाछली, जावती जठै ही ईं नैं दूध, चाय अर फलका ला'र देवती, थोड़ो तो और, नहीं-नहीं की तो और लेणो ही पडसी, भैंस रो दही, ऊपर आगळ-आंगळ जाडी मळाई आयोड़ी, न्यौरा

करते-करते जीभ ही दूखण लागती, जाणू ई रो खायोड़ो भगवान नै मिलतो हुसी, अर अग चूखलो पाणी री ही नी पूछयो। उल्टो कैयो, 'जावो अठै सूं, ओ लाड कियो, तू ही आए अबकै करेई, जीवती रैई तो पूछस्यू, मरगी तो थे हो—याद राख्या, आदमी स् आदमी तो मिलसी ही, कुवै सू कुवो नी मिलै।"

सूरदास बोल्यो, "दादी हाकणा रै ब्याव मे न्यौतारां रा काळजा, उपासरै मे तू कागसिया सोधै ही ?"

सिनाथ बोल्यो, "इंया ही है दादी, अणकमाई सुविधा कांनी थाप फाडतो घणगरो देस ही टुकडेल हुग्यो, हुग्यो काई कर दियो बीनै। मैं गाव मे ईं रो विरोध कियां—खाली ई बात नै ले'र कै चुणाव सू दो रात पैलां दारु री बोतला वंटी—नायक, मेघवाळ, दरोगा अर रजपूता कांनी—बोतला मे बोट विकग्या समझलै", मैं कैयो, "आगै-लारै नाव गाधी रो राखै अर काम करै अै, गाधी रा अै गुटकिया बौपारी, आपानै काई टारसी ? थारै देखावै रा दात और है, मायला और, क्यो मे काई गळत कैई ई मे ?"

दादी बोली, "मनै तो बीरा ठा ही मोड़ी पड़ी, खोसीज्या पछै दोड़नै स् काई बणतो ?"

सूरदास बोल्यो, "दादी, लाड-कोड अर सेवा रा खड़ा कियोडा डूगर थारा तो आ मफा भूलगी पण सिनाथ रो राई-सो विरोध, पाच-साल सू ऊपर हुग्या, ई रै काळजै ओजू अगद रै पग-सो रुप्यो पडयो है। घटी रो टणटणाट नहीं हुतो तो आ आपानै काढती कुत्तो लगा'र, चोखो सजगी आपणी।"

दादी बोली, "आ मायत सोचती हुवै कै अबै न कोई चुणाव हुवै अर न मनै को कनै ही जाणो पड़ै।"

सूरदास बोल्यो, "बारै-मास सावण हो थोड़ो ही रैया करै, पोह रो पाळो अर जेठ री आंधी हो तो आसी थदेई, ओ ठा अबार ईं नै थोडो ही है ?"

सिनाथ बोल्यो, "अठै, जैपुर अर दिल्ली सगळै ईं रो एक-एक बंगलो है, कार अर छोरा दो जीप है, भाडो आवै, बना किसो ई रै दूकाना चालै ? टेड पूगै, थठै था पूंछ हिलावै, दै आगे अर ई रै हाजरियो आगे अफसर हिलावै

पूछ—आपरी जाग्यां थिर राखण खातर, अफसरा आगै बारै निचला। इया दादी, कुत्तां री एक लम्बी कतार देस मे वधती ही जावै है।"

"चोखो बीरा, म्हारो तो अण वापडी उपगार ही कियो, म्हारै ही पूछ ऊगगी ही, ईं रै सत्सग सू, आज वा खिर'र नीचै पडगी, पिंडो छूटचो, अण तो दो नांव रट राख्या है, वाकी दीन दुनिया पडो दरड मे।"

सूरदास बोल्यो, "आ न गुर री अर न पीर री, ईनै न घिरियाणी सू मुतळब, अर न कोई कंवर सा'ब सू, अण तो मूढो कर राख्यो है सिंहासण कानी, बी पर गधो बैठे चावै घोडो, आ तो गीत बीरा ही गासी।"

सिनाथ बोल्यो, "दादी हू आयो अठै एकर, वै भाईजी आया बी दिन। ओ हो ! मत पूछ तू, एकसौ-एक दरवाजा सहर मे, खुली कार मे कवर सा'ब, भाडै रा आदमी अर लुगाया जाग्यां-जाग्यां ऊभा फूलमाळा लिया, मिनिस्टर अर काई अफसर, डरतो डूम करै गुभराज, सै हवाईजाज वण्योडा हा, जीप, कार, बस अर ट्रक मावै ही नी हा, सहर मे। दोयसै-दोयसै, ढाईसै-ढाईसै कोस सूं बसा आई फ्री, भाडो-तोडो की नही, चढो अर चालो। एम. एल. ए. अर एम. पी. सगळा री ड्यूटी जादा सू जादा आदमी ले'र पूगो। जाग्यां-जाग्या पडदा अर भीता पर काकै री विडदावण, सवारी निकळी जठै सू ले'र पूगी जठै ताई सा-वस्ती गुलावी। गोगो बडो'क गुसाई? परडां गू वैर कुण वाधै, कराणी पडै, फुटपाथा पर मानखो बेसुमार, सी. आई. डी. ठेठ डागळां तांई पूगगी। लोग बात करै हा, एक किरोड रिपिया लागसी ईं सुवागत में, केई कैवता हा अस्सी-पिच्यासी लाख मे तो बोलणो ही काई है ? मुख्यमन्त्री अर बहुरूपिया नेतावा री छोड, वै तो वेमाता जाणू जिन्दावाद बोलण नै ही घड्या हुवै, कव्या री जीभा सू सरस्वती छेड़ै जा बैठी, वा पर भाड बैठग्या आ-आ'र।"

"छेकड़ वण की कैयो तो है लो ?"

"कैयो, कैवणो आवै तो ?"

"वस !"

"और नही तो।"

"तो ई मे लाखू रिपिया खर्च हुया वै फिजूल खर्च नी हुया, किसा जनता रै हित मे लाग्या का गरीवां ऊमरा किया या सू ?"

"दादी, रांड रंडापो काढै पण कोई काढण दै जद नी, कंवर सा'ब कांई टा इत्तो पोचो नही हुवै पण बडै आदमी रै बेटै नै तो हाजरिया बिगाड़ै, बीरी ओट मे सिट्टो आपरो सेकै। बेईमान पाखरिया गुड दे'र अगलै रो गळो करवा देवै।"

हॉर्न सुणीज्यो, "अरे लोरडी हकण मे पांच-सात मिट ही बाकी है. उठ दादी, आवो सूरदासजी, आपणो जाग्यां रधा", अर सीधा जा'र बैठग्या लोरी मे। सिनाय पढै हो लोरी मे, लिख्योडो, "यहा धुम्र-पान करना सखत मना है" अर बस मे बीडी अर सिगरेट रै धुवै रा कुरळिया उठै हा, बस टुरी जद सास सोरो आवण लाग्यो।

9

गाव में बिरखा खासी जोर री हुई। बळता अर बुझता छेत पाछा बा-वड्ग्या। बाहेतरै सारू धान सगळा रै आछो बणसी, पण, सागै-सागै बोदा अर कच्चा ढूढा ही घणघरा, पाधरा हुग्या। हरिजना रै केई घरां मे तो बारो आटो अर लूण-मिर्च ही डगळियां नीचै दब'र रेत मे रळग्या। हाडी. घाडिया, मटकी अर कूलडिया—वा मे ही तो चूण-चुग्गो, वां मे ही तेल, तमाखू अर गुड़ री काकरी, सै ठीगळा अर ठोकरी हुग्या। तवा अर चीपिया मुरड छेड़ै कर-कर काढ लिया, पण थोडा-घणा पूर-पल्ला अर माचा-मचली। टूम-छल्ला केया रा तो, धनजी अर हजारीमल रै पैला सू ही पूग्योडा है, रैया-सैया अबै पग कर लेसी। केई जणा तो, दो-दो टंक, चोगान मे गूघरी उगाळ-उकाळ काढ्या है। अबै सेती मायै था डगळिया। घर मे बी पळो-पण अर मिनखां रो जोर है, बा तो पाच-पाच, सात-सात दिना में, एकर काम चलाउ 'ठा-ठर' कर लियो। घाटैमाळा अर एकलपा हा, वै घरां रो दवा-दूमो कर, ढाणी उठग्या। तीन-च्यार महीना टापली सेवन करसी। सेमा-छोदो टापची नीचै, गोवा-उठो, आघरी मं बा निरवाळी देवळू पर।

ठंठार घणों पड़सी जद, फूस बाळ-वाळओग मे दियँ सिट्टा रो मोरण चावता रैसी, रात इयां ही काढ दे'सी दोरी-सोरी। घणो फोडो तो पन्द्रै-वीस दिना रो ही समझो, फेर तो फळी-फूबी अर रीटिया चाल पडसी, गरभडो गिटता, टीगर कीरै ही सारैनी।

लोग लुगाई खेत में पचसी आखो दिन। डेरै टीगर एकला, आरै सागै हुयाई करण नै मैर हुसी तो मलेरिया समझो। अळगा खेत है, का पाणी लांवण सजत नही है वैं, तळाई रो खोला-न्हायोडो अर टीगरा री पात्र गिचोळघोड़ो कालरिया पाणी पी-पी वगसीस मे 'वाळा'* लेसी, वारी रूखाळो करता वापड़ा खेत किया रूखाळसी? माथो खेत मे, अर चोटी खैंचीजसी और कठै ही, कुण सीरी? दाणा, घास, पालो हुया पछै, धनजी अर हजारीमल जिसा मेवँ रा रूख वा पर वुचकार-वुचकार छाया करण नै आ पूगसी। आधै सूं घणा फकीर हुयोडा नैरा कानी का भट्टा पर ईंटा थापण, दो-तीन महीनां आटैआळा पइसा करण विदा हुसी। चौमासै भळै वैं ही घोड़ा अर वैं ही मैदान, कौ घर रा, की उधार अर खळो निकळे पाछा फकीर, आ चरड-घाणी इयां ही चालै, आज सू नही जुगा सू।

एक दिन सिनाथ अर धीरजी आं घरा कानी जांवता-जावता भाए-जोग सागै हुग्या। केई घर चौडै चौगान डगळिया पर तोवा मेल्यां रोटी सेकै हा। धीरजी बोल्या, "सिनाथ उजाड तो, गांव मे मोकळो हुयो है—आं घरा मे और ही वेसी। टंक टाळनो ही ओखो है केई जाग्या तो?"

"काकोसा, टूटचोड़ा लड की वेसी ही टूटै।" बात करता वैं जावै हा।

सिनाथ, धीरजी रो माण, आपरै बाप रो सो करै। वरस पन्द्रैक पैलां सिनाथ रो वाप अर दो दरोगा—एक ऊंट रै सौदै सपटै नै ले'र हब्बो-थब्बो हुग्या हा—फेर लाठी चालगी। रोही ही अर चौधरी हो एकलो। पडै ही खासो पोचो हो आं विचाळै। धीरजी वीनै सू निकळै हा—ऊंठ पर चढघोड़ा—खेत सू आंवता। दिन चिलकारो-सो हो। पड़चै पर लाठी झोकतां देख'र, आ सोच्यो, आवँनी अकाज नही करदै मिनख रो अँ, है ग्यू ही ऊंठ सूं कूदग्या, अचाणचकी ही, लारै सू लाठी झाल'र, जचा'र मुक्की री दी गुद्दी

---

* नैहरुवा

मे, वींरै तो नकमीर छूटगी अर आख्या आडो तिरवाळो घूमण लागग्यो। दूसरै आ पर एक वार कियो लाठी रो, आरै फैंटो हो, की ठवको-सो लाग्यो पण जाणै जिमो ठा की लाग्योनी आंनै। 'ठैर साळा,' जोर री दाकळ देंवता ही पग कच्चा हा भाग छूट्यो, वै लारै दब्या, वण सोच्यो अबै मारसी, पण मोळा पड़ग्या, आ लारै सू सतोल हाथ सू दी फोव्या मे, पड़तो ही रेत चाटण लागग्यो। चौधरी रै खासी भलेरी लागगी ही कमर में, वा दोना नै तो अध-घड़ी पछै चेतो हुयो, जद ठाकर पूछ्यो, "धापग्या का और लाऊ, चूळू तो बाकी ही है ओजू, एकलाँ देख'र इया घात करो मिनख री, हो तो इसा गाव मे धारा समचार ही जावैं, घूड खावण दियो ऊठ पैलां।"

हाथ जोड'र पगा पडग्या दोनू, "आज पछै जे नाव ही लेवा तो, चोरां मे करो वा म्हारै मे।"

ठाकर वी वेळा, वरस तीस-वत्तीस रा छक-जवानी मे हा, चौडो ठाठो, भवर मूछा अर गाठा बधता वूकिया। धीरा अर सीधी मे कोरै जिसा दोदारू। वी दिन सू ही सिनाथ अर इंरै घर रा, ठाकरा रो पूरो कायदो राखै। सिनाथ चौमासै मे आए साल पाच-सात दफै निनाण करावण, मोठ उपडावण का खळै पालै मे जावै ही, ठाकर घणो ही मना करै, पण औ जावै हो—आपरै सैज सभाव अर सरधा रै बसीभूत।

एक फळसै आगै गुरतै नायक री बूढी मा कूकै ही कोसो तरै सू। पोपलो मूडो अर धुजता-सा राखिया कोड्या, आसू निकळ-निकळ गाला रा साळ पार करता मूडै म जावै हा। धीरजी पूछ्यो, "डोकरी, इत्ती बिलगी क्यो ?"

"बिलगू, घण्या म्हारै करमा नै," बलबलीजती वा बोली।

"तो ही बता तो सरी ?"

"म्हारी साथळ उघाड़णी, हू ही लाज मरू ?"

"लाज री मनकारघोड़ी, बहू तो सरी की, लाज रो डर लागै तो रो बैठी। रोवती नै लाज नी आवै ? इया किताक दिन ढबसा राधसी लाज नै ?"

"मार्ईना, गुरतियै री बहू, दो कीलो आटो लें'र आई— कळकत्तो सू। मनै दो-तीन दफै कैयो, "रडार पड़ियाउ वठै, बाड़ी पर मूतण जितो म्हारो लगावण जोगी ही नी वठै।" वण आटै री गाठड़ी फूटपोडी साळती रै गूणै मे धरदी, अर आप पाणी रो घड़ो लावण निसरगी। पाणी तो चाईजै ही

माईतां, सीधो करै जद ।"

"हां-हा, तू कह तो सरी ?"

'मैं देख्यो, हजारीमलजी रै अठै सू पाव-डोढपाव छावड़ी रो गुटको लाधै तो लाय दूं, टुकड़ो की स्सोरो गळै ऊतरसी । हू टीगरां नै कह'र गई ही, छोरा साळती री ख्यात राख्या रे, 'हू थोडी छाछ ले'र आऊ ।' टीगर डगळियां सू घर-कोलिया माडता रमै हा । गडकड़ा गाठड़सी फाडदी । आटियो की खायो अर बाकी रो रेत भेळो कर दियो ठेठ ताई—बाळन-जोगां ।"

सिनाथ बोल्यो, "तू पाछी कद आई ?"

"हूं तो आई डोढ-दो घटा सू ।"

"इत्ती ताळ वठै काई कियो, पगोपग ही आणों हो तो तनै ।"

"आऊं किंगो म्हारै बाप रो घर हो वठै ? ठाण साफ किया, वाखळ मे वागरी काढी, कैया पछै दो काम अगलै रा उठाणा ही पड़ै । आवता ही बहू वैठी ही डगळियां पर लाल-पीळी हुयोडी, हू छाछ ले'र बड़ी । मनै कैयो, 'आगीनै आ तू, भारणी उतारू थारी ।' मनै काई ठा धप्या आ बात हुई, ठुळी री एक दी नळी पर, पारियो पडग्यो वठै ही, घोवण डगळिया चूसग्या, मनै कैयो, 'घर सू निकळ अबार री अबार,' हूं बोकी जोर सू, बोली, 'बोकै तो बारै जा'र बोक, अठै जलड़ा किया तो मिणियो मोस द्ली ।' हू रोवण लागी जद ठरड'र मनै बारै नाखदी ।"

वण पीडी री नळी दिखाई, खुन आयोडो हो थोडो-सो पण लील काई जाग्यां में मूगीछम जम्योड़ी ही । बै दोनू भाय गया । साळअर रसोई उघाडै-वारणै पडचा हा । टीगर कूकै हा, छोरा-छोरी पाच-छव हा, दो-तीना नै हुसी अर दो-तीन, कूकता नै देख-देख कूकता हुसी । टाकर कैयो, 'अरे भली कूटया आदमण, हुणी बा तो हुगी, बीती वा कदेई पाछी बावड़्या करै ? दो कीलो आटो अर दो-तीन कीलो मोठ, बाजरी, कोटडी सू अबार मेजू । इंयां दिया करै है कदेई, घर मे ला वीनै ।"

लुगाई उठ'र गई, हाथ झाल'र लावण लागी । डोकरड़ी बोली, "जाऊं किसी पोल पड़ी है, नो चालू, मरणदै मनै अठै ही, अन्नपाणी अगलै जलम मे ही खास्यू कठै ही ।"

ठाकर कैयो, "डोकरी, इसो करडो सत्याग्रह तो गांधीजी ही नी करता ?"

सिनाथ बोल्यो, "अगलै जल्म मे भळै इसी ही कोई बीनणी लाधगी तो, अन्नपाणी प्रायो ही है ? है जिकै नै लात मार'र, अगलै खातर दायतोही कोड करै, जावै नी घर में।"

धीरजी वहू नै बोल्या, "इं दसा मे रीस आणी तो तनै ही सैज ही है, पण तो ही, हाथा पर की काबू राखणो चाईजै, इं ढग सूं आ जे मर ज्यावती तो, खाई ही नी छूटती।" गई डोकरी, रिणकती धीरै-धीरै।

अै दोनू ही टुरग्या। सिनाथ बोल्यो, "अबार पाच-सात दिन तो आ लोगा री, तावै आवै जिमी मदत करणी ही चाईजै।"

"अरे भई, डोळ सारू आपानै काईं हरेक नै हीं करणी चाईजै। भार तो भीत झालै, समर्थ है बानै पूरी करणी चाईजै, पण बानै तो अबार कमाई रो मौको हाथ आयोड़ो है—पूरा करसा काढसी आंरा—डोडा-दूणा। इसा मौका हरदम थोड़ा ही आवै, आरी गाटड़ी तो फाड़सी ही, कुत्ता नहीं तो कुमाणस ही सही, अर इयां'स साव आपा सोचा जिकी बात ही नी है ?"

"किया ?"

"कियां काईं, नच-गाडा भूख है आ रै तो ही सिइया कोई-न-कोई गुटको लिया त्यार लाधसी, घडी-दो-घडी तो बादस्या ही कांईं करै आंरै आगै ? म्हारला तो टाकराई मे डूबग्या अर अबै डूबी पर नच वाम है, सागै आंनै और ले डूब्या, गुरू तो आरा म्हारला ही है।"

सिनाथ री निजर आगीनै गई, बोल्यो, "आ लो, केसरियै कोटवाळ री माळ तो अै-माताजी रो हुगो दीसै है।"

"एकलो ही है ओ तो, मळ हे लो को ?"

"नहीं ओ, साळती खडी हुणी ही ओखी है।"

इतै मे परिया सूं कान्हो कोटवाळ आ लियो। आवतो ही धीरजी अर सिनाथ रै धोक खा'र पड़ग्यो, "धण्णा मनै गरीब नै बचावो किया हो।"

"बच्योड़ो ही है तू, कुण भूत खावै तनै, थारै साथ मे टापरा तो अैस पनपरा पाधरा हुग्या रे ?" धीरजी बोल्या।

परिया एक छोरो अर छोरी खडा हा, पोतो, पोती हा इं रा। बोल्यो,

"धण्या, रडार तो होठा रै पोतो दियोडी, सेठा रै बाड़ै मे बैठी है एक ओरियै में, रोटी सेकै, की लावण-लगावण मिलज्यावै हेली सू, घर कानी मूंडो ही नी कियो, तीन दिन सू, आज दिनूगै हू गयो, कह्यो, 'घरे चाल,' रडार चटिया पडगी, अकूणी दिखा'र बोल्यो, 'आ टेकी है देखो ठूळी री हू तो' आयग्यो म्हारै बडेरा नै धोवा देंवतो, ढूढा पडया है बाको फाडया, यामे कुत्ता वड़ै अर निकळै, टीगर मरता है दो टका रा । हू तो चाऊ, खेतड़ै में जा पडू, पण टीगरा रो पपाळ—नी हुवै तो कुवो-खाड ही कर लू।"

ठाकर कैयो, "छोरो थारै बळू का चीरै ?"

"हू तो पैर लागू ही काई हू, पण त्याल वो बीनै ही की करैलो, गुर रो न पीर रो—फिरै है घूड खांवतो रूळेटा सागै, च्यार फुलडी कनै ही. हू तो, दे'र मळगो हुयो, अबै म्हारा हवाल खोटा हुसी।" कह'र आमू नाखण लागग्यो।

सिनाथ बोल्यो, "दसेक सेर, बाजरी, अर की मोठिया चाल घालदू, खीचडियो करो पाच-सात दिन तो।"

"परसू तो बापड़ो पदमा दादो, जियो, बीरै अठै टीगर अर हूं खीचड़ो, रावड़ो जीम'र आया।"

"सिनाथ," ठाकर कैयो, "आ लोगां मे कळै घणी, बोली रा कुफार अर गरीबी नै तो आ पाळ ही राखी है। आ नै लोन, तकावी अर पट्टा देवै बी सूं ही जादा जरूरी आनैं, सिक्षा अर सस्कार देंवण री है। आछा सस्कार तो आछी सरकार ही दे सकै अर वा आप ही नागी हुई बैठी है। चोटी री ऊचाई सू निकळी गगा ही धरती री तिस्सी चेतना नै धपा सकै, रोळ-खोळ चोर अर गुडा जद कुरसी पर कब्जो करलै तो नीचलो वर्ग आपरी निजर गमा'र तिस्सा अर लाचार हुयोडा, चोरा कानी ही देखै, मतलब बांरी दया पर जियै अर ठोस ईमानदार वर्ग उदास हुयोडो अमूजै, जे बो साच री सड़क सू आगळ ही आधो-खाधो नी हुवै तो ईमानदारी रो इनाम जेळ जावतो भोगै।"

"कुर्स्यां रा भूखा, अर जाग्या रुप्या आखा आदमी एक आदमी री पूजा मे लाग्यां तो आ ही हुवै।"

"पण आ आधी उपासना मगळमई नी हुवै रे, माटी ईनै मजूर नी करै,

मायत धीरजी की ओर कंवता, पण, की तो कान्हो कम समझै हो आंरी बात, अर की मरतै टीगरा री चिन्ता ही बीनै, वो विचालै हो बोल्यो, "थोड़ा चालता देखा, टीगरा रै पेट मे कूकरिया लड़ै माईतां।"

"अरे, हा चाल, चाल, बीसर-ही-ग्यो हू," सिनाथ कंयो, अर वै दोनूं एकै कानी अर ठाकर एकै कानी, टुरग्या। परियां सू हरजी बामण आवै हो, आपै सू वारै हुयोडो, रोळा करतो।

"काई बात है दादा, की पर कुठाकरी है आज ?" सिनाथ पूछ्यो।

"काई बात है रे, पांचियै मेघवाळ अर भूरियै नायक नै खेत मे चालण खातर सात-सात रिपिया एक दिन आगूछ दिया—निनाणियै री तुग्गी खोस देया रे पीं, अबै बेटा अळगा-मळगा करै, आज नी काल, काल नी परसूं, दो दिन हुग्या थारै लारै फिरता। मैं कह दियो, "अै हाथ जोड़्या थानै, मनै म्हारा पइसा दो, हूं धाप्यो, चोटी ताण्या राधै बारै ही माग रा हो थे।"

"काई कंवै वै ?"

'बेईमान है रे, केवै, 'पइसा नटा थोड़ा ही हा, देस्या पण हुया-हुया।' हुवण गो काई, छव महीना नै हुवै, अर कदेई नी हुवै। अै हिल्योडा है, भट्टा-कानी सू ला-ला'र, वो बापडो आरै लारै-लारै फिरै का आपरो धन्धो करै ? कर्जा आरा माफ कर दिया गोरमिट, सायता आनै घणी, तो ही भूख किमी मिटै आरी, लिया पछै दद्दो आखर तो अै जाणै ही नी, नीवत नीच हुवै है आदमी री। गोरमिट कांई, जे कुबेर बरसै आ पर तो ही अै धाप'र खावै तो मनै कह दिए।"

सिनाथ, गरीब अर भूपै डोकरै कांनी देख-देख सोचै हो, वाकेई ओ दुखी हैं, अर पेट बळनो दया करै। केई तो है ही दया के थाप दिखावै बी आगै तो वै निमै, हाथ जोड़ै थीनै जू जितो ही नी समझै। पण वांरो कांई दोस है, आ आदत बामं पण ही तो घाली हो है। बोल्यो, "थे दादा ऊधा थीनै पलग्या; अै तो दोनू ही जुवारी अर दारूखोरा है, भोमिया पूरा बिगाड़ राख्या है आंनै।"

"पग्यो न धम्यो, मनै कांई दा आ हुमी, दो दिन हूग्या रोटी तो रोटी छूटगी, नींद न्यारी नी आवै, डोकरडी अर छोरा, बरका सू न्यारा खावै, भोडों नै जजमान मूत रो रेळो हो भारी।"

ही दोरो।"

केई जणां बोल्या, "आ किया बाबा, म्हारी समझ मे नी ढूकी ?"

"थे समझ मे ढुकावण री चेष्टा ही तो नीं करी आज तांई कदेई, हूं पूछूं खेत कीरो ?"

"म्हारो बाबा", सै ही एकै सागै बोल्या।

"ऊमरा कुण करै ?"

"म्हे ही बाबा।"

"अर उपाड़नो-ऊपणनो ?"

"म्हे ही।"

"पण धान घणाखरो ढो'र कुण लेजावै ?"

"धान तो घणखरो दूसरा ही लेजावै बाबा।"

एकजणो विचाळै ही बोल्यो, "दूसरा-दूसरा काईं करै, मिन्दर मे लुकोवै क्यों बात नै, सीधी ठरकावैनी—लेजावै धन्नो अर हजारीमल।"

सूरदास बोल्यो, "ठीक है, ठीक है, हू समझग्यो कै थे बात नैं ऊंडै तांई समझो हो पण कोरो समझ्या ही काईं हुवै, वा काम मे आवै जद हुवैनी। सगळो की थारो हुतां थका, थारै भूख, न थारै टावरा रा पेट ढकणनै पूरा गाभा, न थारी लुगाया रै लाज लुकोवण सारू ललसर कपड़ा-लत्ता अर न सिर खसोळन नै मिनखाचारै कातरा।"

"हा बाबा, तो काईं करा, किया पिंड छूटै आ दो-दसानां सू ?"

"पैलां तो आ बतावो कै, ईं चरड़घाणी स् थे छुटकारो चावो हो कांई मन सू ?"

सगळा ही बोल्या, "हा बाबा चावां, झूठ नी बोला।"

"तो सगळा सू पैला तो सै एकजुट हुवो—गाडीआळै सू ले'र गडासी-आळै तांई—मैनतकसां मे जात नी पूजीजै—थांरी मैनत हुवै जिंदाबाद। एक लूटीजै दूजो काख पिदावै, आ नही हुवै, एकरो सही हक, सगळां रो सही हक।"

"अबै कोमीस तो था ही राखस्या, बाबा।"

"था मा'ला केई बोतल रा गुलाम है ?"

"है बाबा।"

"है तो रामदेजी आगै बधो मको, पण करलो अबार सूं हीं आईन्दे पियां तो बाबा, थारा गुनैगार हुवा—तीन ही तिल्लाक भळे हाथ लगावां तो।"

"हे आ कैई, हाथ ही लगावा तो धोबी री कूंड में गळां", सगळा ही बोल्या।

"था मा'ला केई कुत्तर री मसीन पर जावै ?"

"हा बाबा।"

"दिन भर मे कित्तोक घास काट नाखो ?"

"गढ-पडतो सौ-सवासौ मण।"

"मेठ मण पर काईं लेवै दूजा सू !"

"रिपियो मण।"

"था च्यार जणा नै कित्ता देवै ?"

"सात-सात रिपियां सू अट्ठाईस रिपिया।"

"थे इयां मत करो।"

"तो ?"

"थे लेवो मण पर आठाना, इयां थारै चवधै-चवधै, पन्द्रै-पन्द्रै रिपिया एक-एक रै पड़सी। लारलै आठाना मण मे ब्याराना-पावांना मसीन खर्चै अर मण लारै तीनाना-च्याराना सेठ रै बचस्या, वो न हाथ हिलावै न पग, पच्चीस-तीस रिपिया बैठै-सूतै थोडा है ?"

"घणा ही है, अबकै ही लो थे, म्हे तो अन्धेरै मे ही हा इत्ता दिन।"

"थारो चारो, पालो अर घास, था री समझ सू बेचो, दो महीना रोक'र; अगमो मत्तो करै जद ही ऊचा'र अठगो करै, इंया बटाऊ रो माल थोडो ही है। बेधड़क हू'र *एक ही जबान* राखो, सेठा धान अबार नी देवा, ब्याज रा पइसा दो महीना और लागसी तो लागो।"

"ठीक है बाबा, अैम तो इया ही हूसी।"

"सागै-सागै थे उपज नै बधावो, गेता नै गैंग जोतो, माटी सागै जिता जादा रगड़-मगड़ हुस्यो बित्तो ही मिठास वेसी आसी, था मे किरको दियो है रामजी नीं बीगे पूरो फायदो उठावो।"

"हा बाबा, पूरी मैनत करस्या तो फायदो म्हांनै ही है।"

"फायदो थोड़ो-घणो नही, आंवतै पाच-सात बरसां मे ही थारै घरे गाय, भैंस हुसी; बैठण नैं थारै मिनखाचारै घर हुसी, थारै डील पर हुसी कपडो-लतो, याद राखो थारी मैंनत ही दुधारू भैंस है थारी, मैंनत री सिद्धि दी है भगवान थांनैं, बा माटी नैं सोनै मे बदळदे।"

"थे कैयो वी रस्तै ही चालस्या बाबा, पण भगवान तो सेठ-साउकारा अर बडै आदम्या रै नैड़ो जादा है—धापै-फाटै है वै बिना मैंनत किया ही"। एकजणो कोई बोल्यो।

"अरे सफा भोळा हो थे, मनै बतावो थे कै थारै घरा पर तावड़ो घणो पड़ै अर सेठ साउकारां री हवेल्यां पर कम ?"

"नही बाबा, सगळे एकसो ?"

"वो तो जीवण रूप सू सगळां मे एकसो है—'सोमोऽहं सर्वभूतेषु। एक खूब मैंनत करतां ही अध-भूखो अर एक को नही किया ही धापै-फाटै, आ व्यवस्था आदम्यां री है, भगवान री नही, आपा इनैं ही तो की बदळनो चावा।"

"समझग्या बाबा, जय हुवो थारी।"

"तो अबै जावो थे, खेत जावण नै मोडो हुवै थारै।"

सगळा ही टुरग्या, निकळता चर्चा करै हा, "भैंस आपणी, चारो अर चाटो आपणो, भळे भूखा क्यो, सूरदास री बात ढूकती है।"

13

अस्पताळ मे झरतैं माथैं, कुळतैं डील अर अधचेनैं थे जियां ही पूग्या, एक डागधर धीरजी नैं पूछ्यो, "आ दोनां, नसबन्दी करा राखी है का नही, आ बतावो पैला ?"

धीरजी कैयो, "नही सा।"

"तो पैला आ लिख'र देवो कै, म्हे नसबन्दी कराणो चावा, इलाज री

बात पछै करस्या।"

"कीरो ही मायो मरै तो मरो, सास निकळै तो निकळो, पैलां थारी सर्त पूरी हुणी चाईजै, मजबूरी मे तो इयां की हुँकरा सको डागधरसा'ब, गधै नै बाप बणा'र ऊचास्यो तो ही ऊचस्या पण थे थारी लीक मत छोडज्या —थे कैस्यो बीनै ही देस्यां पांवडा म्हे तो।"

"काई बताऊ ठाकरसा, देस मे अबार हवा ही इसी है, थारै सूं किसी छांनी है।"

"कीनै सू चालै है आ हवा, को तो मनै ही समझावो ?"

"ठेठ चोटी सू।"

"चालणदो सा, टैम है, पण बारूं मास हवा रो रुख एक-सो नी रैया करै है, कदेई दिस फुरसी जद ?"

डागधर बड़ो भलो, सूधो अर बैवारकुसळ लाग्यो होळै-सी बोल्यो, "जरूरी है फुरसी बा तो, अर राम कियो तो चोटी रा रूंखड़ा ही उडसी पण म्हे तो ठाकरा, सामु आगली बहू हां, ओढायो काम करां, ओडो दिमा अठै ठैरा किना पडी, राज है बीरो आज है।"

"नसबन्दी तो टैम पर कराणी आछी ही है सा, घणै कनखळ मे कांई है, भ्रिनगाष्ट्रा री फौज नही बधाई सही, जड़ती का दळिदै रो नास करसी पण इणै मोकै इया अड़ाणी, म्हारै कम जची, चोखो कर देया, लो हूं दसखत वर दू फारम पर।"

धीरजी री मायली नैडप रो एक कम्पोडर मिल्यो, घर अर भलो। बांनै भरती करवा दिया, दोनां नै आमा-सामा ही बैड मिलग्या। डागधर कैयो, "टैम तो महीनो-बीस दिन लागसी पण डर री कोई बात नी है, ठैमगर पूगग्या थे—आछो हुयो।"

धीरजी नै ठा लाग्यो कै रामसिंह अठै ही सरजन है। धीरजी रो बेटो फौज मे कप्तान हैं, बो रामसिंह रै काकै-बाबा मे ही परण्योड़ो है। बै राम सिंह सू मिल्या, ईसर अर सिनाम री भुळावण सावळसर बांनै दे'र, बै गांव आयग्या।

ईसर रै रह-रह दो दफै खून चढाणो पड़्यो। गुगनो दो दिन रैयो बठै, कम्पोडर कैयो, "थे अबै जावो भला ही, हूं संभाळनो रैस्यूं, रिपिया मनै

दियोड़ा है ठाकर सा'ब रा, आंरी तरफ सू रत्ती ही चिंता मत किया, घबरावण जिसी कोई वात नी है।"

जावण लाग्यो जद सिनाथ कैयो, "सुगना, अँसके पूरी जी मे ही कै आपा दोनूं भाई-भाई, दिन-रात एक कर'र मेनत रो मजो लेस्यां, पण भाईडा, थारी एक बाव तो आज, अस्पताळ मे पडी है, अवैं एक बांव है तू।"

सुगनो गळगळो हुग्यो, चैरे पर ममता री कायरी ऊभरगी अर कठ एकर भरीजग्या, आधी मिंट सिनाथ सामो सजळ देखतो रैयो। सिनाथ भळे बोल्यो, "पण, सुगना, ई मे ही की-न-की मंगळ ही सोच्यो है भगवान, हुई बीनैं सिर पर राख'र उपाव में लागैं तो एक तो बीरो दुख खासो हळको, दूजो भगवान वी सू राजी,— राजी रो मुतळब बीरी मदत करैं, वीरी मदत एक आस्था है रे, वा जागैं जद आदमी रैं पुरसार्थ रो काई पार, वीरी एक बाव सागैं हजार बांव।"

सुगनो टुकर-टुकर अणसमझ-सो सिनाथ सामो देखैं हो, दुविधा मे डूब्योडो। बोलणो चावैं हो की पण अवाज कागोलियैं सू ऊची आवैं जद ?

"सुगना, म्हारी मूळ लालसा तू समझग्यो हुसी, कै मैंनत री कमी मे, खेत में दाणों ही खांडो-खोरो नी हुणों चाईजै, धरती-माता, हाथ भरया हरख सू देवण थाई है अर लेवणआळी बेळा आपां मैंनत सू जी लुकोवता लारैं सिरकां तो समझलैं मा नाराज, आपां धरती रा बेटा हा, धणी नहीं; वा पसेव मांगै, मोती देवै, आस्थाहीण हू आपा जांवतैं घाटैं नैं घेर'र क्यो घर मे घालां ? म्हारी लालसा नै न काकी नैंकारैं अर न मा। घर रैं कव्वै-वच्चै री बावां थारैं सागैं है तो तनैं डर ही काईं ? बैं थारी आस्था सागैं एकाकार हू, समझलै थारैं में विराट वण'र आ ऊभसी, धरती आ ही चावैं अर आपानैं राजी बीनैं ही करणी है। काकी नैं समझा दिए सावळ, जिसो तैं दूध चूध्यो है बीरो, बिसो ही मैं, दूध अर हेत रे नातैं, थारी-म्हारी मा एक ही है, वा रोवैं-रिणकै नही।" पैलडा आंसू सुगनैं रा सावळ मूक्या ही नीं हा, आख्या-भळै सजळ हुगी।

सिनाथ थोडो-सो पसवाडो फोरयो, सुगनैं की स्सारो दियो। सिनाथ, भळै बोलण लागग्यो, होळै-होळै, "गूगो है तू, एक ही आसीस पर तो फिरा-टुरा हा आपां दोनू—काकी री। तू तो एक ही ध्यान राख'कैं, या सगळां

मिल, जे म्हारी लालसा नैं धपा'र राजी करदी, तो समझलै हूं दो महीना मे त्यारहुतो महीनैं में ही हुस्यूं। विचाळै एक-दो दफे और सभाळलिए म्हानै। हां, एक वात तो तनै कैणी भूलहीग्यो कै, कदेई ईसर कांनी ही ध्यान दिए भलो, बीरै खेत कानी सफाई इभको है, बो अर हूं अवार एक ही विछावणै पर हां।"

सुगनो टूरग्यो, उदास चैरै, भीगी आंख्या अर भारी मन। सोचै हो, 'खेत रो देवता हो ओ, जद हुसतो, मुळकतो काम मे लागतो, मैनत री आत्मा सैंदे था'र ईरै वूकिया में वास करती। म्हारै पर ईरो सनेव, मा-बाप ही नी राखै, ई रै विछोडै मे, म्हारे सू खेत मे फिरणो-टुरणो ही तावै आणो मुश्कल है। कित्तो निरमल अर निरदोस है, ओजूं ही समझावणी देवै मनै कै, ईसर कानी ही ध्यान दिए की, हू तो खैर देस्यू ही पण, ध्यान ईसर किमोक फळरो दियो है, ई रो कोई विचार ही नी है ईनै। इसै आदमी री भगवान जाणै किया निभसी ? घर वाळ'र तमासो करणियो है।"

पन्द्रै-बीस दिन हुग्या आमनै-सामनै सूता है दोनू, ईसर रै ओजू ही की कमजोरी जादा है पण खतरै री खाई सू बारै निकळग्यो। बीरै चैरै पर कमजोरी रै मार्ग काळजै एक फास फोडा घालै ही बीनै कै "ओ कांई कर दियो मैं, सिनाथ पर लाठी, कदेई तो बो म्हारी हसी-खुसी री वास-भूमि हो, बो जीवत भूमि रो अन्त करण रो मैं सोची, ससार मे ई सू मोटो पाप सायत ही कोई हुवै," बस आत्म-गिलाणी री इसी हीण भावना मे डूब्यो बो, टैमो-टैम दवाई लेंवता थका ही कम पांगरै हो—अगचंग को लागै ही नी दवाई। सिनाथ नैं बैड पर सामो देख'र तो बीरी भावना और गैरी हुती। फास बीरै मन में रोज की न की ऊंडी बैठती। सिनाथ बीनै कदेई बतळांवतो तो बो उडतै मन सू उथळो देवतो 'ठीक ही है रे,' ई बात नै सिनाथ समझै हो आंख्या री भासा आख्या सू छानी थोडी ही रैवै।

एक-डोढ बजी हुसी रात री। कमरै रा रोगी घणखरा सूता हा, केई अधसोई अवस्था में पसवाडा बदळै हा। नर्सं री गोळ्या लिया केई कमरै री दीन-दुनिया सू बेखबर हा। सिनाथ उठ'र ईसर रै बैड कनै पडी कुर्सी पर आ'र बैठग्यो। बोल्यो, "ईसर ?"

"हां," बण उदास मन, होळै-सी कैयो।

"आपां दोनां इकसठ में करी दसवी ?"

"हा ।"

"धर्मसाळआळी वा कोटडी याद है नी, लैंट्रीन रै चिपाचिप, डकी खांवती कोझी तरै सूं, तू कैवतो आछो'क डकी खावै तो, दो घडी जादा पढलेस्या, सोवण नै तो घर ही घणो ही है, याद है नी ?"

"है।"

"अर तू काई कैवतो ?"

ईसर बोल्यो होळै-होळै, आपरै ही भार सू दबतो चीथीजतो, "पढ भलां ही लै पखानै री बास सू पल्लै तो की पड़ैनी, सूनै सिर मे कोई चीज ठैरै है कदेई ?"

"अवार-आळै दाई आपणा खटोलिया आमा-सामा हा, सिराणै एक पीपो मेल राख्यो हो, म्हारी मा लाडू कर'र भेज्या हा सागै, चिटकी अर गूद रा फूला हा माय, अर थारी मा सक्करपारा अर कीटी, दोनू वी एक ही पीपै में घर राख्या हा आपां ।"

"हां।"

"लाडू घणखरा कांई, राम करै तो सगळा तै ही खाया ।"

"हां।"

"अर सक्करपारा अर कीटी हूं जीमतो, मनै वै सुवाद लागता अर तनै लाडू ।"

"हा ।"

"थारी मा री कियोडी चीजां मनै सुवाद लागी, अर म्हारी मा री तनै । वडै सनेव अर एकमन सूं बणाई ही आपणी मावा वानै । थारी मा रो प्यार-सनेव मनै मिल्यो, वा चीजां सागै, वारो खून ओजू ही कठै ही तो म्हारी चेतना मे हुवै ही लो, अर म्हारी मा रो सनेव थारै मे ही कठै ही तो जियै ही है ओजू ?"

ईसर गळगळो हुग्यो, आसू गालां सू उत्तर'र वैड री धरती पर पड़ता अदीठ हुग्या, ओजू ही धीरी आख्या चोनिजर हुणै मे सकोच करै ही । अै वातां कर जाणै बण ईसर रै आत्म-गिलाणी-ओग नै ओर हवा घालदी । सिनाथ फेर बोल्यो, "वी प्यार नै पा'र आपा पास हुग्या, तै तैसील में नौकरी

करली पेसकार री, अर सागै गोलीपो झाललियो बोतल रै पाणी रो, अर बो तनै ले वैठो—थारै सोनै-सै सरीर नै अर रूपैसी थारी गवाडी नै । हूं एक ही हो म्हारी मा रै, बीरै नी जची, बोली, 'मनै सूनी छोड'र कठै फिरसी गूदड़ घीसतो—जाग्यां-जाग्यां !' मैं तनै केई दफै टोक्यो ही हो, ईसर रस्तो ऊंधो है, पण थारै बा अंग-चग नी लागी, पण, अबार हूं सोचूं कै लागण री बेळा ही नही आई हुवै तो बा किया लागै ? गळगळो मत हू, परमात्मा बढिया कियो, बी बेला नै अबै भेजदी वण, अबै बा लागसी थारै, अर लागसी ही इसी कै ऊमर भर ही नी छूटै । आपां हा जिकै सूं और घणा नैंडा हुग्या—अस्पताळ री आं खाटा पर, अै वरदान है आपणै खातर ।"

फेर ही ईसर रो चैरो उदास, आंख्यां बुझी-बुझी-सी, बोलै कम, आंसू जादा ।

सिनाथ बोल्यो, "हूं तनै ओळभै री बात नी कहू, आपां तो उथळां हा आपणै लारलै एकरस रसवत-जीवण नै । कनड्डी-पाळो तनै याद हुसी एक दिन सरद-पून्यू नै दूध-सै धोळै आभै नीचै टाइ मे खेल्या आपा—दोनूं आमनै-सामनै, तू जावतो बीनै थारो मैदान अर हू जावतो बीनै म्हारो । डोढ घण्टा चाल्यो हुसी पाळो । किरत्या खासी ऊंची चढगी ही, बीस-बाईस नैंडा छोरा हुवाला आपां, बीसू आदमी अर पचासूं छोरा गाव रा और । तनै ठा है बी बेळा धीरजी आपानै थुपकारो नांख'र बोल्या, "छोरा, घरे चालो, दूध पाऊ थानै । पियो हो आपा, याद है नी तनै, मळाई-समेत तीन-तीन पाव रो एक-एक बाटकियो !"

"पियो हो नी !"

"आवती बेळा, बां थापी दी आपणै, ठा है नी ?"

ईसर देखण लागग्यो बी सामो । सिनाथ बोल्यो, 'तनै ठा हुणो चाईजै कै वै आपरी टैम रा आछा जवान अर कबड्डी रा खिलदार हा, गाँव मे ही नहीं आसै-पासै । आछो पैलवान उठतै पैलवान नै, आछो खिलदार आछै खिलदार नै देख'र मस्ती मे सराबोर हू, बाथां में भरलै । आपां पी'र जित्ता राजी नी हुया बो सूजा दा राजी बै पा'र हुया हुसी । म्हारो बाप तो भोळो है तूं जाणै ही है, दिनूगै जा'र ठाकरां रै पगा पड़ग्या अर गदगदीज'र बोल्या, 'इत्तो लाड तो हूं बाप ही नी राखू,' बी वेळा म्हारै घोणो ही

नी हो।"

ईसर री आख्यां आगै जाणू रील चालै ही कोई, 'इत्ती एकरसता मे तै ओ काईं भाठो नांख्यो,' रह-रह ओ विचार बीरै माणस नै मथै हो।

सिनाथ बोल्यो, "आपणो खेत ही सियाजोड है, ठीक, अस्पताळ री आ खाटां दांई। हेलै सागै आव-जाव, ऊंचावा पर उठी झूपड्या एक-दूजी नै देखै, जाणै वा मे ही कोई हेत हुवै पुराणों। हू थारी मा सू मिल्यो हूं, वीसू दफै पढतो हो जद थारै सागै जा'र, म्हारी मा सागै ही गयो हू केई दफै। मनै याद है गयो जिती दफै चिटकी, सकरपारो और नही तो पाच-सात पतासा ही, की न की ले'र ही आयो। बता ईसर, आपणै विचाळै भीत कठै ही ?"

"नही भई।"

"तो तू काईं रात ही काटणी चावै हो, प्यार री धरती पर ऊगै की बिड़लै री ? वो किसो थारी पाती खोस'र जियै हो, बो तो पोखै हो तनै प्यार दे'र अर खुद पोखीजै हो, तनै देख-देख। आपा दोनां नै रसवत देख'र ही तो गांव री धरती आपणो माण करै ही।"

ईसर सामो देखै हो, गम्योडो-सो, हारयोड़ो-सो, बीनै इसी कोई काळी टीकी नी दीसै ही सिनाथ रै जीवण पानै पर जिकै सू बीमे कोई गिलाणी उपजै। सोचै हो, "एकर अधघड़ी जे वैड रै नीचै वड् तो किसोक ?"

"पण, मनै ठा हो, ईसर मार नी सकै, तै दी तो ही, जिसी लागणी चाईजै, बा नी लागी, कारण हाथ थारा नी हा, न मन ही थारो, थारै में तो छांयां ही कोई ओपरी ही, म्हारी आस्था री इणी ही नी हिली ईसर ! थारै मे बी वेळा थारो ईसर हो तो बता, सात गुना माफ है तनै। चावतो तो तू मार सकै हो एक ही लाठी मे, एक-एक लाठी में ऊट नै थाडो नांख्यो है तै केई दफै।"

ईसर एकर अधर हुग्यो, आख्या बन्द करली, जाणू वो फास रै खासो नैड़ो पूगग्यो हुवै। बोल्यो, "सिनाथ, पटवारी एक-दो दिना सू ही नही, केई दिना सू लारै लटूम्यो पगथळी चाटै हो म्हारी। कबरसा'ब, आप फरमावो तो, हूं आपरी ऊमर भर चाकरी बजा सकू, विश्वास नहीं हुवै तो स्टांपी कागद पर लिखदूं, रोणो खाली एक ही बात रो है, चावै घर बिकज्यावो

म्हारो, भाई मरचै रो धोखो नहीं, भामी रो नखरो मंगणो चाईजै, थे ही एक इसा आदमी हो, ओ काम कर सको हो अर तनै ठा है, हूं गुटकै रै गोलो, मरयो जीऊं बीरै नांव पर, दीन-दुनियां री छोट लू, घर नै ही भूरयोडो।"

"हू समझू ईसर ! थारी प्रकृति नै ही जाणू पण ई मे ईसर, कौं रिपिया-पइसा ही तो बीनै मिल्या हुसी कठै सू ही ।"

"पाचसै-सातसै रिपिया घनजी ही दिया बीनै, पण एकदिन कैयो मनै, "कदरमा'ब सेठ री पूरी मनस्या है कै जो काटो तो कियां ही निकळै जद ही जी मे जी आवै, रिपिया रो कोई बात नी, पण आ बात परकासीजणी नहीं चाईजै। हू असल मे महीनै-बीस दिन री बीरी उथळी संगत मे ऊंडो सलग्यो, निवळतो ओखो हुग्यो। रोज सतरो अर रोज चरको-मरको, मनै तो इत्तो ही चाईजै हो, दो-तीन दफै बकरिया ही कटया। विवयोडी चेतना सिवाय, बिलान री छेनी पर राखी बोतल सूं आगै काई तो देखै अर कांई सोचै—कोडी मूधी है का तो।"

"तो ईसर, थारै अन्तस मे जे इसी कोई फांस है कै मैं ओ काई कियो, तो तू काढदै बीनै अर फेंकदै बी अणचाईजती फूस नै। धरती-माता री सौगन खा'र कहू तनै, म्हारै ईंरो कोई ही विचार नी है, अबार आपां साच अर समता री सुगम धरती पर सूता हा।"

"हू समझू हू सिवाय, सगळी समझ्, पण भूल् कियां ईनै आ नी समझू, याद करू ज्यू-ज्यू वा दूणीजै अर काढू ज्यू-ज्यू ऊंडी बैठे, मनै दिसाहीण कर पछतावै रै गैरे अन्धेरे मे ऊंधो नाखदै।"

"तू नीद लै, समझलै थारी रोग कटग्यो अबार सू ही, दिनूगै देखलिए भला हो, थारै चैरै पर उजास री किरणा नी खेलै तो। बैगा ही ठीक हू'र चालस्यां आपा, आपणी माया कर्न, बारो सनेव भळे लेवां—सागै मिल'र, पण ईसर, गुटकै नै तिल्लाक दे अबार सूं ही, कमजोरी रो नाजायज फायदो नागो दुनिया उठावती आई है सदा स् ही। लोकै हासी, घर मे हाण, काई फायदो ?"

"अबै ही भळे करार समझै तु तिल्लाकण मे, जूत पडै अर पूछै कोट-वाळी कठै ?" अर ईंरै सागै ही आतम-विश्वास रा भाव उठ'र चैरै पर ऊंचा आंवता छाना ही नी रैया। नीद रो आसण आख्यां मे बिछणो सुरू हुग्यो

हो। बारा किवाड बन्द, नींद री नचीती दुनिया में पूगग्यो वो, अर मिनाथ ही आपरै बैंड पर हुग्यो नींद भेळो।

दिन पचीसेक हुग्या दोनूं सावळ हा, दोनूं सुधार पर। बैंडा पर सूता हा। दिन री वारै-एक वजी हुसी, धीरजी आयग्या, मिनाथ पगा लाग्यो अर ईसर ही। धीरजी स्टूल पर बैठग्या दोना रै विचाळै, बोल्या, "ईसर, कम सूं कम पचास, साठ मण दाणा तो थारै मजे रा हुता पण हुवै कीरै बाप रा, बाप थारो भद्रमाणस, लुगाया पडदै मे, टीगर रिगदा अर रोमला, भोजाई नै एक दिन कैयो, 'पड्दै में काईं काढस्यो, भूख ठोकीजस्यो, सूरज ऊगै सूं पैला खेत पूगो, डील दो घडी रेत में करो, जादा नहीं तो आधा-पडथा दाणियां तो करो, साल किया निकळसी, उधार आपानै कोई देवैनी, मैनत पार आपणै सूं नी पड़ै, अर मांग आपा सकांनी, तो मरज्यावा आपा सिड़-सिड़ कोटड़्या में। धाड़ो करा वो जमानो ही अबै नी रैयो, अर न धरती नै बीरी जरूरत ही।"

कैया पछै की करण लाग्या है काम टावर, तो ही पइसा तो की चाईजै ही कनै, तू तो खैर आंख्या मीच बैठो, हू तनै घणो ओळखो ही नी देऊं, कारण म्हारी निजर मे तू थारै पीजरै मे हुतां थका ही परवस हो वो बैंळा, तनै तो राछ वणायो है कण ही —चालवाज अर चलतै आदमी, पण विना-आख्यांआळै रा देख मजा तू, बाडीआळै बण सूरदास रिपिया तीनसौ दिया हैं, थारै बाप नै कैयो, 'ठाकरां खेत नै सभावो, अबार जरूरत थांनै रिपियां री है, थें लो, ईसर कनै सूं हूं आपै ही लेस्यू-देस्यू आसी जद, म्हारी अर बीरी रोज भैळी ही चरै, थे नी जाणो', जाणतो है तो सूरदास नै तू ?"

ईसर काकोसा कांनी देखै हो अचम्भै सूं। बोल्यो, "हा, आणू को-नी तो, बियां राह-रूख कम ही है वो सागै।"

"कम है तो ही समझलै दाणा वणज्यासी साल भर जीमणजाळा।" मिनाथ सुणै हो आंरी वातां ध्यान सूं अर देखै हो धीरजी रै चैरै सामो। इत्तो कह'र धीरजी जेब सूं एक रुक्को काढ'र मिनाथ रै हाथ [illegible]-दियो। मिनाथ देख्यो बीनै, भरपाई कियोड़ो, दसखत ५.

बोल्यो, "काकोसा, ओ तो धनजी कनै हो, आप कनै किया आयो ?"

"सूरदास दियो हो मनै तो सिनाथ नै दे दिया ओ।"

बो वारै सामो झाकतो रैयो, बोल्यो, "हू नी समझ्यो ?"

"ईंरा रिपिया सेठ नै भर दिया बण, भरपाई करवा'र रुक्को अगलै लेलियो सेठ सू।"

"बीनै कांईंठा पडी म्हारै ईं रुक्कै री ?"

"बो दिन दो-एक गयो हो सेठ रै माचा बणन नै, बठै ईं ढग री कोई चर्चा टुरगी—थारै बाप सामी, थारी मा भळे आयगी ही बठै, सूरदास नै सुणीजग्यो कठै हो बोल्यो, 'रिपिया बींरा म्हारै कनै है सेठां, झलावो रूक्को अर लेवो थारा ब्याज समेत, सैंत री जात गिण'र', सेठ देखतो ही रैयो। रिपिया बण नाख दिया ला'र सेठ आगै।"

सिनाथ अचम्भै मे हो, अर सूरदास कानी एक सैंज सरधा बी मे जाग-जाग ऊची आवै ही रुक्कै नै बो घडी-घडी उथळ-उथळ देखै हो, सागी म्हारै ही हाथ रो है, ठीक वो ही जिको मैं मैंतजी नै कर'र दियो हो कदेई।

धीरजो बोल्या, "सत्ता तो खैर आदमी नै आंधो करदै, लारलै बरसां मे एक मुखमत्री री कुर्सी गोळमाळ मे घीमीजै ही—जद बण आपरै की मांयलै आदमी नै कैयो, "मनै रासणी आवै है म्हारी कुर्सी, जाट अर राजपूतां नै आपस मे जूतम-फाग कराया अर आपणी कुर्सी इसी पक्की के भूकम्प में ही नी हालै", अर बण आ ही कर दिखाई। विधान सभा में हीं नी हाई स्कूल सू ले'र कालेज, विश्वविद्यालै अर छात्रवासा ताईं जाट अर रजपूत दो ग्रुप, आए दिन मारपीट, पढाई टांगदी ऊची, केईं जान सूं गया, ओजू किसी बुझगी वा, केई लाय लाग्या ही हरा हुवै बा आपसी हुवो चावै हरिजनां-मुसळमाना कीरी हो। गळत चीज नै एकर जे आकार मिलज्यावै तो बो वैगो-सो नी मिटै, अर फेर ऊपर सू फंक्योड़ो हुवै तो बो और रग पकड़ै। मिनक्यां री लडाई मे बानर रै तावै सदा सू ही आई है, पण साधारण आदमी नै बीसू काईं लेणो-देणो, रोटी-रोजी चाईजै बीनै तो; पण, था दोनां रै किमी कुर्सी खोसीजै ही, क्यां माथा फोडाया, म्हारै की समझ मे नी आई ?"

ईसर बा सामो देखै हो, बीरी आख्या में पछतावै री एक छांयां घडी-

घड़ी उभरै ही, धीरजी समझग्यो कै जरूर इंरी चेतना पर अणचाई चोट पडी है, इंयां आपै ही समझ्योड़ो और ही आछो, ऊमर ही नी भूलै।

वै भळे बोल्या—आपरी ही सैंज मोज मे, "थारा बैंड अवार सियाजोड़ है नी रे?"

दोनू ही वोल्या, "हां।"

"अर ईं कमरै रा सगळा बैंड?"

"वै ही सियांजोड़ ही है", सिनाथ बोल्यो।

"इंया हीं एक कमरो दूजै कमरै सू अर सगळा कमरा एक अस्पताळ मे फिट हुयोड़ा है। इया हीं एक देस दूजै देस सू अर वै सगळा धरती रै एकल डील पर फिट हुयोड़ा है—अस्पताळ रै कमरा दाईं। मिनख हो थे, धरती री एकता पर सोचो, थांनै मिठास आसी जीवण रो, दिस्टी चौडी अर लम्बी हुसी तो कठै ही बैंगासा नी आखड़ो।"

दोनू ही देखै हा वां कांनी, जाणू आख्यां स् पींवता हुवै वारी वाता नै। बोल्या, "लेवो दवाई-पाणी, घरे सगळा राजी है, पूरा ठीक हुया पछै ही गाव कांनी मूढो किया, हू जाऊ अवै", अर वै टुरग्या।

एकदिन पडित रामधन आयग्यो—कोई ऊडी वात ले'र, पण आ दोना नै आमा-सामा सूता देख'र बीनै अचम्भो ही हुयो अर बीरो मन हीं की उदास। वो बैठग्यो आंरै विचाळै पड़ी स्टूल पर। आं दोना ही पगे लागणा किया, वण दोना नै ही आसीरवाद दियो। सुखसाता पूछी, बोल्यो, "भगवान आछो करो भाईड़ा, आखड्या जिसा नी पड्या।"

पाच-सात मिट बाद ही सिनाथ उठग्यो पैसाव करण नै। रामधन, ईसर नै ले'र गैलरी री एक बैंच पर आ बैठो। ईसर बोल्यो, "बोलो कांई हुकम है गुरुजी?"

"हुकम तो कवर सा'व, हुकम री जाग्यां, पण ओ काई कियो थे, ओजू ढीला बैठा हो, रपोट ही दरज नी कराई, आ सफा सूती-गंगा कियां? अर अठै ही थे भळे आमा-सामा, थारी तो काया कांई ठा कित्ती ही सीजती हुवैली, म्हारै ही लूण वरसण लागग्यो बीनै देखता ही। बीज-वारस री मेळ

हुयो हो आज ताईं कदेई ? जाट अर रजपूत रै तो वर्ग-वैर है, च छ ज,—जाट तो सिंह, अर य र ल रजपूत हिरण, सिंह अर हिरण री मेळ हुवै तो जाट अर रजपूत रै हुवै, अर जिकै में रावडी कैवै मनै ही दांता सू खावो, सिनाथियो थारै घर सू पळयो, बो री हिम्मत थारै पर लाठी चलावण री, अै तो नसीब हा टाबरा रा, नी तो आज कठै हाथ घालता वै ?"

ओ कठै बोलै है, ईसर ईनै भापग्यो, तो ही बो बोल्यो, "गुरुजी, वर्ग-वैर में सिंघ अर हिरण, कुत्तो अर बिल्ली जिसा जिनावर तो थे गिणा सको हो पण आदम्यां पर ओ नैम लागू नी हुवै। ईसर अर सिनाथ रै, ईं अर स मे मनै न तो कोई विरोध लाग्यो अर न बा में कोई जाडो-पतळो ही। एक स्वर है अर दूजो व्यंजन, शब्द अर अर्थ-सा एक जीव है दोनू ही, वांरै मेळ बिना तो बोल ही नी फूटै आदमी रो। गुरुजी, न नावां मे विरोध अर न जाता में।"

"कवरसा नाव अर जात जावणदो, इतियास नै तो नी नैकार सको आप ? जाट अर रजपूत में कद रैयो मेळ-मिलाप अर भाईचारो ? इतियास रो काळजो उघाड'र देखलो, उत्तर मतै ही बोल उठसी।"

एकर तो बो कहू हो कै बीनै चोखीतरै ठा है कै आ इतियासी पीड़ा जुग रो अज्ञान है अर जुग रो अज्ञान आदमी री अणसमझ, पण बी सागी अणसमझ नै, इतियास ठेठताईं उथळतो चालै आ जरूरी है काईं ? आदमी में समझ आणो गुनाह है काईं ? फेर बण सोच्यो, "ईं बहस नै लम्बी खींच्यां, हूं चाऊ बा खटाई में पडज्यासी, आपानै आम खाणा का पेड गिणना, पैलां ईं कनै सू असलियत तो कढाऊ किया ही ?" बो बोल्यो, "तो कांई करणो चाईजै गुरुदेव ? म्हारो तो थानै ठा है, भुवाजी बारकर घूमै है, दवाई रा पइसा ही नी जुड़ै—काकोसा देवै है।"

"ईंरा सोच थे क्यों करो, रिपिया हजार-पाचसौ लागसी तो लागो, थे रिपिया बिसर थोडा ही हो, धनजी दे'सी, हाथ-पग तो थानै ही साभणां पड़सी, की नी किया खोता सिर चढग्या तो गाव उचाळ दे'सी, म्हा गरीबा रो तो पछै बसेपो ही नी हुवै, समझलो।"

ईसर एकर पंडित रामधन कानी निजर गडो'र देख्यो, फेर बोल्यो, "गुरु, थे कैई बा ठीक है पण काकोसा सू ऊपर कियां जाऊं, वै नी चावै ?"

"लागी आपरँ है का काकोसा रे ?"

ईसर देख्यो, म्हाराजियँ रो पोत तो आ लियो, बोल्यो, "गुरु थारँ पर म्हारी एकलै री ही आस्था नही, हू सोचू बामण हुवण रै नातै आखँ गाव री ही हुणी चाईजै, पण विसी बात थारँ कनकर ही नी निकळी लागी। हूं पूछू हू थानै कै थे म्हारी पीड़ मिटावण आया हो का वधावण ?"

पडित रो मूं उतरग्यो, बोल्यो, "आयो तो मिटावण नै ही हू।"

"पण मनै लागै, थारी चेतना मे रामधन अवार मरग्यो। डील रामधन रो जरूर है, पण बोलै वी मे सेठ धनजी है। हू बामण रै हाड-मास रो पुजारी नी, वीरी ऊची अर ऊजळी चेतना रो हू, वा, था मे कठै ? थे तो म्हा काकै-भतीजै मे ही राड घलावण आया हो थानै म्हारी ही चिन्ता हुती तो थे म्हारो खेत सभावण मे मदत करता, म्हारँ लाचार बाप नै धीरज देंवता, ठाकरा हुई सो हुई, थाणो-कचेडी मत किया। थे मिन्दर मे ठाकुरजी रा पूजापाठ नी, धनजी रा करो हो, पडित रामधन री ई भूमिका सू, आम बामण री कदर घटसी, थे जावो, अर था सू तावै आवै तो ओजू ही थारँ ई पाप नै धोवो।"

रामधन आ तो गयो पण मन उदास, पग भारी अर मन मथीजै हो। की क्रान्ति कर सकै, वै पुरजा घसीज्यां बरस बीतग्या हा।

इयां ही एक दिन पटवारी आयो, भागे धीरजी वयो मिलैनी अस्पताळ थागै। बोल्या, 'कियां आया पटवारी जी, ईसर रै लागी पर लूण बुरकावण आया हो काई ?"

मूंडो उतरग्यो, झेप मिटावण नै बोल्यो, "नही सा।"

'तो थाणै मे ओजू रपोट दर्ज नी कराई जी ई खातर ?'

'हूं तो म्हारँ ही काम आयो हो सा !" इत्तो कह'र वो तो काई ठा कीनकर सिरक्यो, पाछो बाख्यो ही नी।

धनजी सोच्यो, "चलो ईसरआळो खेलो पार नी पडै तो, मूंडो सिनाथ कानी ही सही। नत्थू गोदारो आपरी आसामी है, वीनै भेज्यो एक दिन सिनाथ कनै। वो पीढी दो-एक आतरै सिनाथ रै काको लागै। सिनाथ नै एकलवाणै ले'र वो बोल्यो, "ईसरियै, ओ तनै नी कूटयो है, गाव रै सगळै जाटा नै हो समझलिए तू। तू इत्तो ढीलो किया है, म्हारै समझ मे नी आई।

खरचै सू डरग्यो तो घर दीठ रिपिया सौ-सौ चदै रा कर लेस्यां, पण ईं लेड नै तो वाडै घाल'र छोड़णो है।"

डाकण सूं काळजो छानो, सिनाथ समझग्यो बात नै कै म्हारी, सुखसाता पूछण ही औ आंवता तो आज पैला क्यो आमानी ? आसामी है धनजी री, गुड री डळी मे गंगाजळी उठावणआळा, तो ही बात रा चासा तो लेवां, बोल्यो, "काका, कीनै ही बाड़ै घालै तो बी लारै, खुद नै ही तो बाडै जाणो पडै। खैर छोडो, ईंनै, बोलो थे किता रिपिया देस्यो मनै ? देणा अबार ही पडैला।"

"सौ-पचास की हू देस्यू, अबार नही तो दो दिन ठैर'र।"

"सौ-पचास क्यों, थे काका हो थानै तो पाचसै-सातसै देणा चाईजै।"

"नही हुया बिना, कठै सू लाऊ ?"

"माथै करो, ब्याज भोगो, खेत-खळा वेचो, जद वाडै जासी अगलो, पण पैला एकर आपानै जाणो पडसी।"

बो काई ताळ देखतो रैयो सिनाथ सामो, फेर बोल्यो 'तो कूट खा'र बैठो रैसी बोलो-बोलो ?"

"तो कूवया बडो आदमी हुज्यासू, ओ ईसर बैठो, कूट खा'र चुपचाप। काका, साची पूछो तो थानै म्हारै सुख री चिन्ता नी थानै तो चिन्ता है मनै बाडै घालण री, ओ घाप'र क्यो खावै, आ थानै नी सुहावै।"

"तनै आछी नी लागी तो आपणै नही सरी।"

"धर्म सू बताबो, थे थारै मत्तै आया का कण ही तगडया है थानै ?"

"आयो तो मत्तै सू ही हू, तनै नी लाग्यो तो जावण दे।"

सिनाथ देख्यो, जाट है नी, झाल्योडी. झाटो तो किया छोडै, बोल्यो, "काका, पग तो थारा है, पण चाली बा मे धनजी री नागी मनै, खयावळ मत करो, हू किसो फासी देऊ थानै, जीभ थारी है जचै ज्यू बोलो पण बोलो राम सू डर र।"

राम रो डर बतायो जद, बोल्यो, "सिनाथ, मैं, बी कुमाणस नै दो-तीन दफै कैयो, सेठा मनै थे वठै मत भेजो, सिनाथियो चादबारकर चकरो काद र आयोडो है, थणो कैया नी आऊं तो माडी बात, बता काई करतो ?"

सिनाथ मुळक्यो काकै पर अर रोयो मन ही मन धनजी री समझ पर।

बोल्यो, "ठीक कियो काका, भाड़ो लाग्यो सेठ रो, ई मिस मिलाप आपणों हुग्यो, जावो राजी-खुसी सेठां नै कहदेया कै दाळ-गळन री वेळा गई, ओग दे-दे'र तपेली काळी करो तो थारी मरजी है पछै माजीजैली दोरी।"

14

अस्पताल मूं छुट्टी मिलण मे बानै दो ही दिन बाकी हा। वै सोचै हा, "कद दो दिन पूरा हुवै अर कद गाव चाला?" ईसर बोल्यो, "भाईड़ा, अबै तो धापग्या अस्पताल रै जीवण मू, आव-आव टूटै घर अर गाव खातर, भळै तो ईनै मूढो ही नही करां।"

सिनाथ बोल्यो, "मूढो आपा थोड़ो ही कियो ईनै, आ तो कोई मेवै रै रूख री मैर ही आपणै पर।"

ईसर, पाछो कीं न कीं उथळो देऊ ही हो का पदमा चौधरण कमरै मे पग दियो। उठ'र दोना ही धोक खाई, बण मिर पळूस्या। सिर पळूसती-पळूसती बोली, "हो तो इसै भाग रा कै दोनां री जट झाल'र सिर इसा भिडाऊ कै दो महीना भळै पाटा-पोळी करावो।" दोनूं ही चुप हा। बनै पडी कुर्सी पर बैठगी बा, फेर बोली, "जी मे ही कै सुपसाता पूछण ईनै पग हीं नी राखू।"

ईसर बोल्यो, 'इत्तो कुठाकरी किया दादी?"

"कुठाकरी ठीक ही है, इसा काई थे सीव मार्थ लड़ाई फ्तै कर'र घायल हुया हो का गांव री रिछ्पाल करता चोट-फेट खाई है, डफोळपण मे एक-दूजै रै टाचा दे नांख्या, बी खातर पगरख्या फाडनी मनैं नी पोसावै। इया तो घणा ही ढाढा लडै गाव मे रोज, हू की-की कनैं फिरती फिरस्यू?"

दोनूं ही गैली तरकारी कानी देखै ज्यू डोकरी रै चैरै सामो देखै हा।

वा भळै बोली, "हू राजी हुया करती थानै पढता नै देख-देख कै अै छोरा गाव में कदेई उजास करसी, पण मरायोड़ी खीचड़ी दांतां चढै, था तो

चूट'र इसी हाथ में दी है कै गासियो होठां सामों करण री ही हिम्मत नीं हुवै । जापा बी दिन थाळी फोड़-फोड कासी तो करी मूंघी, गीतां री भूख्या, कठ फाड़-फाड़ गळा किया खराब, गोदी नै मारी भार अर सौ-पचास बधाई रा बांट'र घर में घाल्यो घाटो ।" इत्तो कह'र अधमिट बा चुप हुगी । फेर बोली, 'ईसर तनै तो किती ही दफै रमायोड़ो है, बेटा जिसो ही तू है, पण अकल काढली थारी तो बण, थारी कांई, पणखरै गांव री, तनै ओळभो ही काई देऊं, हा एक बात बताऊं थानै कै पटवारीड़ो काल कोझो कूटीज्यो कान्है कोटवाळ रै घरे—कूटीज्यो ही दो पइसा घी सू, दो दिन मांचो सेवै इसो, अर भळे ही की न की खांडो-खोरो रैसी ही । लत है बेटा, घरे उगांवतो-उगावतो, परायै घरे उगावण लागग्यो, दूजा खातर खाडा खोदै, बीं खातर जाजमा थोड़ी ही बिछाईजै—कुवा त्यार है ।"

आ बात सुण'र जिती खुसी सिनाथ नै नीं हुई, बी सू हजार गुणी ईसर नै हुई । बण कैयो, "दादी थारै मूढै में घी-सक्कर, पग पूजूं थारा, रू-रू राजी कर दियो तै म्हारो । चोरी तो मरचै री खबर सुणावती तो और ही ज्यादा आनन्द आवतो, जिको धरती रै निरदोस दूध नै फाड़तो फिरै, बी कोड़ायल काचर रो किन्नो कटचो ही आछो ।"

"मरणो-जीणो तो हरि रै हाथ है पण इसो कुमाणस मरयै सूं भोग्यो आछो, बीनै ग्यान हुवै तो वो की लैण पकड़ै ।" दोराई बी सू नीं, चोरी वृत्ति सू है ।"

सिनाथ बोल्यो, अबै तो चुणाव हुसी बतावै दादी, गांव री हवा क्यां काई है ?"

"अरे आ तो भू थानै कैणो, हवा रो काई कैसी, कांग्रेस री खेतो खातर तो समझलै झोला बाजणा सुरु हुग्या है, धन रा मोघा जाग्यां-जाग्या खोल राख्या है पण धरती री चेतना फुरघां पछै, बा पघारणी ओखी है । लाव कुवै में पड़ती लागी मनै तो, पछै'स बोरै घर री कुण जाणै । गाव पणघरो एकैकांती है, धनजी अर हजारीमल थारी कतारियाजी सागै दौड़ता फिरै," कह'र बा कुर्सी पर सावळ जमगी, बीरै चैरै पर मुळक रै सागै एक उजास बधग्यो । बीं उजास में स्वाभिमान बीरै होठां पर नाचै हो । बोली, "बा पीरू आई ही कतारिया ।"

ईसर बोल्यो, "कतारिया नही, कटारिया दादी।"

"की कह, कतार अवै लदगी समझलै बी री तूं, घणां ही दिन अकल काढी वण लोगा री। दोपारैं-सैं, छोरा कैयो मनैं, 'दादी, जीभ (जीप) आई है, बुलावै तनै।" हूं किसी धान नी खाऊं, समझगी बो वेळा ही, एक छोरैं नैं हू बोली, "कहदे आवै है अर हू भैंस री ठाण रळकावण लागगी, सोच्यो जीभ (जीप) आगै जा'र कांई मट्ठो काढस्यू, म्हारी जीभ (जीप) तो म्हारी भैंस है, रोज कीलै-एकरो लोघो काढू चूटियै रो। बीरैं ठा हो, बा मरी ही नी मानैं आए बिना, पांचमिट ही नी हुया, आयगी लारीनैं। बोली, 'दादी नाराज हो कांईं पोती पर, सुणाई ही नी करो।" हू बोली, "हां आवो बाईसा, काल तांईं थारै कानां उतर दे राख्यो हो तो आज म्हारा कान बिगडै का नही ?" ठगोरी किसी सैंज है, वोली, "काना री तो कोई बात नी, मीट तो ठडी है नी म्हारैं पर ?" मैं कैयो, 'बाईसा, थे जिकै दिन अणदीठा कर'र काढ्या हा, म्हारी मीट तो बी दिन ही मरगी ही, अवै तो मीट मे गीड है।" की उदास हु'र बोली, 'लो वाता मे कुण जीतै थानैं, अै विस्कुट है टावरा खातर अर ओ चाय रो पूडीको थांनैं, अैसकै आसाम गई जद, लाई ही गौहाटी सू।" हूं बोली, 'ना ओ बाई, ओ कांई करो, इत्ता दिन कांई खावै हा म्हारा टाबर, अै दे दिया तो घरआळी रोटी-राबड़ी नैं वै स्सोरै सास सूघैला ही नी, अै दे'र लिगता मत करो आनैं, गिडक नारेळ रो काईं करै, म्हारैं चाय रो लेखादो ही काईं हू पैंला बीनैं तू कारो ही देवती प्रेम सू, बी दिन लम्बा-लम्बा जीकारा दिया। बा किसी समझैं ही नी रुख उल्टो देख'र, बीरैं चैरै पर उदासी आ बैठी, झैंप मिटावती बोली, "दादी, इत्ती नाराजगी कियां अबकै ? ... रो तो ध्यान राख्या, म्हारो तो दारोमदार ही थारै पर है।

"ध्यान है बाईसा ध्यान, इसो कै वस पड़तां थानैं अर थारी चीलकां नैं भोट रो एक दाळियो ही नी मिलैं।" बा चमकी किया बात करो हो आज ?' मैं कैयो, "इत्ता बैगा ही ... थानैं मिनख ही नी लाग्या बी दिन, पाणी रैं गुटकै जोगा ... अर बिस्कुट धामो, अवै म्हारा ही इमा कांईं राजाजी हुग्या सावण थानैं सदी री लागैं हो सोचैं हा थे उनका सायत सामो देखती रही। पाच-सात लुगायां और भेळी हुगी।

आदमी और हा, बारँ खड़ा हा वँ जीभ (जीप) कनँ। गीधँ गोदारँ री बहू नँ थे थे जाणो ही हो, सदा री ही मटबोली है, बोली, "है कतारियाजी, थे तो तीन-तीन, च्यार-च्यार मोटचार लियां फिरो अर म्हारो एक ही दाय नी आयो, बीनँ ही बढा'र अळगो कियो, अबँ म्हा रोवत्या नै बोली राखण आया हो काई।" लुगाया, थे जाणो ही हो हसण री ही पण कटारियाजी रो मूंढो छाछ-सो हुग्यो। मैं कँयो, "बाईसा भोटां खातर म्हारँ कनँ फोडा देखण भळे मत आया, कोई राम नीसरचो हुसी बो तो थारँ बिना कँया ही नाख दे'सी, क्यो फालतू तेल वाळो धोरा में, थे पधारो तो म्हे म्हारँ धन्धँ लागा।' बा टुरगी, रीस मे आ'र, मुणी ही धनजी रँ अठँ ढूकी, बठँ आवभगत आछी हुई ?"

अबकी दफँ जित्तो आनन्द सिनाथ नँ आयो बित्तो ईसर नै सायत ही आयो हुवँ। बोली, "लो चालूं'रे अबँ, थे वँगा आवो, उठाणा है घणा नँ, गाव में ही नी आसँ-पासँ आपणो बस पूगसी बठँ ताई।" बा टुरगी. पण जावती एक जीवतता छोडगी दोना पर।

आज सिझ्या बजी च्यारेक वँ अस्पताल सू निकळ्या, छुट्टी तो बानँ तीन बजी ही मिलगी ही। घटा पूण-घटा बानँ मिला-भिटँ मे लागग्यो। सुगनो आयग्यो हो गाडो ले'र।

बँ दोनू डाकधर रँ क्वाटर गया बीसू मिलणनँ। कम्पोडर सू पैला ही मिल लिया हा। डाकधर आपरँ कमरँ मे बँठो हो। आ दोना नँ देख'र बडो राजी हुयो, बोल्यो, "आवो, बिदाई अबार ही है कांई ?"

सिनाथ बोल्यो, "म्हारी बिदाई तो आजनँ कदेई हुज्यावती, आप हुवो न म्हांनँ जीवणदान मिलँ।"

"नहो, नहो, आ बात ही मन मेलो जबान पर, म्हे तो खाली दवाई दे ही सका हा, अर कँई-कँई दफँ या ही भाग री स्टाक मे नी लाधँ, जीवणदान रो काम तो बो मोटँ धणी कनँ हीं हँ, बो कनँ राव रंक सगळा नँ एक ही धरातल पर ऊभणो पडँ।"

"ठीक है मा, अठँ का तो कोई जाण हुवँ तो लवँ लागणदँ, का हुवँ अटो

में जोर, म्हारै कनै दोनूं ही नी हा, थारै सेवाभाव मे ही म्हे तो अै दिन काढया ।"

"पण भोळा आदम्यां, जाण अर पइसै सू ही जीवण नी मिलणो हुवै तो नी मिलै, फेर तो पद अर पइसैआळो सायत ही कोई मरै । देखो थानै बताऊँ; परसू नाळी कांनलो एक केस हो, बीरो भाई एम० एल० ए०, चीफ-मिनिस्टर री सिफारिस, पइसाआळी पार्टी, म्हे आठ डाकधरा घेरै राख्यो बीनै रातरी बारै बजी ताईं, छेकड हाथ झडका'र उठग्या-सै । केयां नै म्हे समझां, कै, ओ नी जियै, बीरो की नी बिगडै, अर केया नै म्हे सोचा सफा मामूली-सो आपरेसन है ओ, बो खतम । हवाईजाज सूं पड'र कोई जी सकै, अर चौकी पर तिसळ'र मर सकै, हां रिपियां नै ही मा-बाप मान'र दवाई देवणियां बहूदी ही अठै घणां ही है, वै जडसेवी है, चेतन धर्म सू विपरीत-विपरीतता मे आछो फळ नी मिलै । रोगी डाकधर आपरो ही भलो नी कर सकै, तो दूजां रो काईं करसी ? बा मे सालीनता नी आ सकै ।"

दोनू डाकधर रै चैरै सामों देखै हा, जाणू ईंरी आतमा मे परमातमा रो बास हुवै अर ईंरी जीभ पर सैदे सरस्वती बोलती हुवै । ईसर उठ'र पचास रिपिया, डाकधर री मेज पर धर दिया, बोल्यो "सा, की तो आपनैं फूल-देवां ही ।" "ना, ना, ओ कांई करो, मैं किसा मोठ उपडवाया हा थानैं, रैवण नै राज फस्ट-क्लास मकान दे राख्यो है, अर आछा देवै पइसा, बै कांई बात रा है, उठावो पइसा ।"

मिनाथ बोल्यो, "की सेवा तो ?"

"हां हुसी सेवा तो भुळास्या कदेई, थे किसा दूसरा हो पण अै तो रुखावो अबार, अर देणो ही है की, तो, दान-पेटी मे नाख देया, जरूरतआळै रै काम आसी, बस पडता नांखणा ही चाईजे । ईं सूं ही मोटी सेवा आ है (की मुळक'र) के भळे आपस में की सागै ही इया भायो फोडा'र अस्पताल में आवण री मैरबानी राख्या । थारै पर लागी दवाया अर थानै मिल्या वैद, थे ईयां नही आवता तो की और गरीब रै काम आंवता का नही ?"

दोनूं ही एकर झेंपग्या । मिनाथ बोल्यो, "आप बिल्कुल ठीक कैयो, चेतो राखस्या आइन्दै अर चेतै राखस्यां आपरी सीख ।"

अै आयग्या दोनूं, सरीर सूं ही नीरोग हु'र नी मन सू भी ।

अस्पताल रै फाटक कनै फुटपाथ पर बैठी सुगनी बामणी आनै मिलगी-एक गांठडी अर पेवटी लियां। जियां ही अै फाटक सूं निकळ्या, सुगनी बोली, "जजमान सुणो, हो नी ?"

आ दोनां लारीनै देख्यो, ईसर तो नी ओळखी, सिनाथ की नैड़ो, आ'र बोल्यो, "कुण सुगनी दादी ?"

"एक तो वा सागण ही मरूं।"

सिनाथ बी कानी निजर गडो'र एकर और देख्यो गूगळो आख्यां मे, घसीज्योडा कोड्या, पीलरै चैरै पर फैली उदासी की बेमार-सी लागी बा। बोल्यो, "पैला सूं तो मोकळी मुचगी दादी, ऊमर तो थारी पिचपन-छप्पन नैडी ही हुवैली।"

"हा जजमान, पैला खून मे की गरमी ही, गाव रा हवा-पाणी हा अर राबड़ी-रोटी रो असली खाध हो, कळकत्तै मे अै तीनूं ही नी मिल्या।"

"तो धनजी रै रैवती-रैवती कियां गई ?"

"धनजी नै छोड'र कठै जावै ही, धनजी वनै ही तो ही।"

सिनाथ बीरै सामो देखण लागग्यो, बो ही बैठग्यो एकै पासै बी कनै। ईसर अर सुगनी गाडै कानै की आगै निकळग्या। बो बोल्यो, "दादी हूं नी समझ्यो थारी बात ?"

एक लम्बो सास ले'र बा बोली, "स्याणा, धनजी किसो एक थारै गांव मे ही है धरती पर, आखै देस मे है अै धनजी—मेवै रा रूंख, अर इयां ही मैं जिसी सुगनीबाई ही धणी हीं। बिया धनजी हो भिजवाई मनै आपरै सग्गा रै कळकत्तै—इसा ही म्हे अर इसा ही म्हारा सग्गा, बै ईं सूं ही परलै पार। एक जुग तापी धनजी रै अर पूरै एक ही, कळकत्तै मेवै रै रूंखां मे मोजमाणी।"

"तो आयगी किया, काईं दियो-लियो बां तनै।"

"बा दियो जिको तनै दीखतो ही है लो, बा दियो मनै गठियो-बाव अर धोखो, लियो म्हारो आख्यो रो उजाम अर मैनत रो पाणी। आखो दिन चूल्हो सेवती, पण मूं थोड़ी लाचार हूगी, जद बिदा करदी।"

"फेर बनास्पू कदेई लम्बी है आ राम-कथा।"

"तो अबे ?"

"अबै गाव चालस्यूं थारै सागै।"

"आई कठै सू है अबार तूं ?"

"मोकळा दिन हुग्या कळकतै सू आयां, अठैही ही अबार, छोरी सू मिलली, थारो ठा लाग्यो जद ई नै आयगी, देख्यो भाड़ैआळा च्यार-पाच रिपिया ऊबरै बै ही आछा, अर ठेठ तांई घर रो सागो—सोनो और सुगन्ध।"

"बेमार है तूं, अठै ही दवाई-पाणी लेवती, केई दिन छोगी कनै, गाव चाल'र अबार काई करसी, इसा काई मोठ वळै है थारै ?"

"पैला तो बेटी अर जवाई रा ठोला क्यो सैऊ, दूजो गांव नही जाऊ तो भगवान रै घर री गुनैगार बणू। जाणो जरूरी है, जावण खातर ही तो आई हू कळकतै सूं।"

"इसी कांई बात है, हूं ही तो सुणू की ?"

"की काई, सगळी ही सुणै तू, पैला फुटपाथ सू तो आगीनै टुरां, गाडो कठै है, मगवा बीनै।"

परिया एक जाळ नीचै गाडो ऊभो हो। सिनाथ आपही ले'र आयो बीनै। सावळ उठणो तावै नी आयो, सुगनी सू। सिनाथ गोदी मे उठार बीनै गाडै पर बैठाई, अर बो पाछो ही आयग्यो जाळ नीचै।"

ईसर बोल्यो, 'घड़ी दो घड़ी लागसी हू बाई सू मिल आऊं, बैनोईजी कह'र गया हा घणै-मान।" सुगनो बोल्यो, "आयै भाई हू ही लूण-मिर्च अर की मिठाण ले-लू, गांव मे कूटीजणो नी पडै।" गया बै दोनूं।

सुगनी अर सिनाथ दोनू बैठा हा गाडै पर। सुगनी पेवटी सूं एक पोस्ट-कार्ड काढ्यो। बोली, ओ आज आयो है, लै बांच ई नै।"

सिनाथ पढण लाग्यो, लिख्यो हो—"सुगनी माई से सवन कहार का पा-लागन। हम यहा तुम्हारे आसीरबाद से सुख प्रसन्न हैं। हम भी नोकरी छोड दिये है, दो-ठू भैंस और एक-ठू गाय बांध लिये हैं—हवडा में। हनुमनिगा भी घर चया गया है, बोलता था दो बीघा जमीन है, पानी लगता हैं सब्जी उगाऊंगा, एई गन्दा नोकरी अब नही करेगा। तुम्हारा सेठ एक रोज से लाल बजार थाना मे है—उसका गोदाम में दो-ठू चोरी का गाट पकड़ा गया। तुमको हम बोला था, वो ही करना अपना गांव मे। जबाब जरूर

देना। तुम हमारा मा के समान हो हम तुमको कभी नहीं भूलने मकेगा।"

सुगनी बोली, "ओ लखन कहार हुवै न मनै बी जेळ सू काढै।"

"हा सुणा दादी. किया" मिनाथ बोल्यो।

"अै दोनू बाडी रै नीचलै तल्लै मे एक छोटी कोटडी मे रैवता। कोटड़ी, बिना लट्टू की नी दीसै दसी। वरस तीनेक सू आ सागै म्हारी जाणचीण हुई। ओ लखन म्हारै अठै चौका-वरतण करण आवतो, बाडी मे कई जाग्यां और ही काम करतो, खरो आदमी हो. वरस तीस-पैंतीस नैडो है। अै दोनू दो-तीन दफै दस-दस, बारै-बारै दिन बेमार रैया। हू रात-बिरात जा'र आंनै चाय-पाणी कर देवती, म्हारै लायक कोई काम हुतो तो टैम काढ'र पूछ लेंवती। अै मनै मा दाई मानता। अैसकै मनै जद, गठियो-बाव हुग्यो, सेठाणी बोली, 'थे बामणीजी अबै देश जाओ ठीक रैसी, अठै अबै निभाव हुणो ओखो है।' हू बोली, 'जास्यू नी तो कीरो घर बूझस्यू, नही राखस्यो तो घिगाणो थोडो ही है, हिसाब कर दो म्हारो। सेठ चोपडी देख'र बोल्यो 'साठ रिपिया म्हारा निकळै पण कोई बात नी, सीख मे टिगस थानै और कटवा देस्या।' सुणता ही म्हारा कान खूस'र हाथ मे आयग्या, काई ठा कांई आमा लगाए बैठी ही। हू बोली, 'काई हिसाब सू म्हारो महीनो भरयो है. बतावो तो सही।' सेठ बोल्यो, 'छव वरस ढाईसै, अर छव वरस तीनसै रिपिया साल रा, रोटी-कपडा म्हारा हा ही, दो-तीन दफै थानै तीरथ करा दिया बै थारै नफै में।' हू सोचै हो, 'साठ रिपिया थारा निकळै, टिगस धर्म री कटावै अर दो-चार तीरथ नफै मे करा दिया, कर्ज सू लाद दी मनै तो।' थोडो परिया लखन बैठो सुणै हो। नैडो आयग्यो, बोल्यो, "पन्द्रह-सोलह आदमी का रसोई, चाय-दूध, दिन भर चूल्हा फूकेगा—बीस-पच्चीस रुपिया मे, सौ-रू रुपिया मे भी कोई नही करेगा।" सेठ बोल्यो, 'तुम अपना काम करो, तुमको इसका पचायती नही है, 'कैसे नही है, ए हमारा मा है, हम ऐसा अन्याय नहीं देखने सकेगा, हम अभी हनुमनिया को बुलाता है, सब बाडी-वाला को इकट्ठा करेगा, लूटता है गरीब को।' सेठ बोल्यो, 'तुम अपना नौकरी लेवो, हम इसको तुमको पूछकर नहीं रखा था।' 'अच्छा नही रखा था तो, हमको नही करना ? तुम्हारा नौकरी।' लखन मनै बोल्यो, 'तुमको बारह साल हो गया, कभी हिसाब ही नहीं किया, कैसा पगली औरत है

तुम।' हूं वोळी, 'हम हर साल सेठ को बोलती थी, ये बोलते हमको, 'हिसाब का तुमको क्या करना है, जरूरत मुताबिक पइसा उठा लिया करो। हम सौ-डेढ-सौ रुपिया का कपड़ा, कभी सौ-पचास रुपिया नकद छोकरी को देस भेजता, हमकू क्या पता हम कितना उठाया। दो-चार दफँ बीमारी में पाव-पाव दूध लिया, गोली लिया उसका पइसा भी हमारा लगा।' 'अरे भई' जितना भी लगा ठीक है, पर बीस-पच्चीस रुपिया महीना कँमे देते हैं ए लोग।' दादी एकर चुप हुगी, जाणू बिसाई खावती हुवँ।"

फेर बोली, मैं सेठ नैं कँयो, 'सेठां दो-च्यार बामणी और ही तो रसोई करै बाड़ी में बांनै साठ-साठ रिपिया अर मैं सू काम थोड़ो, मनैं बीस-पच्चीस ही किया ?'' सेठ बोल्यो, 'आ बात थे देश मे धनजी सार्थ किया, म्हे तो वा सू ही तैं करी ही।' हूं बोली, 'वा मनैं किसी वेची है थानैं, काम थारै कियो अर बात धनजी सूं करूं, आ किसैं घर री रीत ?' सेठ नी बोल्यो। सिझ्या लखन अर बीरो भाई आया। लखन सू ही वो जादा तेज हो आंवतो ही बोल्यो 'सेठ इस माई का हिसाब ठीक से करदे, नहीं तो इसका नतीजा खराब होगा, हम और आदमी है, जेल-वेल से नहीं डरेगा, ऐसे हम खून नहीं चूसने देगा।' सेठ ई बात नैं जाणै हो कै ओ जे बदमासी पर उतरग्यो तो स्कूल जावतै कोई टीगर नैं ही पार करवा दे'सी। बोल्यो, 'अच्छा हम इसको चालीस के हिसाब से निकी करके दो हजार रिपिया और दे देता है हमारा पिंड छोडो।' वण कँयो, 'पिंड क्या तुम धर्म का देता हैं।' हूं बोली वीनैं, 'भइया हमकू इतना बहुत है, हमारा सौगन है, तुम अगाडी कुछ बोलेगा तो।' दो हजार रिपिया मनैं दे दिया सेठ ला'र। मूढा चढयोड़ा सगळा रा, न म्हारैं सू राम-राम न कोई आदर-सत्कार। रात भर लखन री कोटडी में काढी। मनैं बो कँयो, 'अब माई क्या करेगी', हू बोली, 'बेटी के पास जाएगा।' वो बोल्यो, 'नहीं माई, तुम बोलती थी कभी, कि हमरा गाव है, उसमें हमरे जैसा कई गरीब लुगाई-लोग बडा सस्ता खटता है। मैं कँयो 'हा।' 'तो तुम बेटी के नही अपना घर जावो, एक-पोत का लहसुन लेना खीर में पकाकर, तुम्हारा गठिया चला जाएगा, लेकिन वो सस्ता चूसा जानेवाला भोला औरत-जात को तुम चूसने नहीं देना — उनको मेहनत का पूरा पैसा मिले, तुम ये ई सब करना — भरोसा देती हो तो तुमको जाने देगा, नहीं तो

यही रोके रखेगा, अपना ए ई कोठरी मे तुम्हारा सेवा करेगा ।' मनै बोलण ही नी दी, बीसू पैला ही भळे बोल्यो, 'माई जब तक जीना है, मर्दानगी से जीयो, हम तुम मर जायेगा तब भी ससार तो चलेगा ।' हू बोली, 'ठीक है लखन एई होगा ।' बो बोल्यो, 'हमको भरोसा है, सुगनी माई झूठ नही बोलेगा ।' "अवै बता सिनाथ, गांव चालू का सहर मे पडी-पड़ी टीगरी कनै लाचारी भोगू ? सरीर री अणूती ममता तो मैं छोड राखी है ।"

सिनाथ एकर बीरै पीलरै चैरै कानी पारदरसी दिस्टी सू देख्यो, बी पर एक अटूट आस्था तिरै ही । बो सोचै हो, जरूर इं गरीबणी रो अर्क निकाळ्यो है कण ही बडी बेरैमी सू, ईंरै हर रू मे सत-सत घाव है बोलता, प्रगट मे बो बोल्यो, "जद तो चाल ही नही, जरूर चाल दादी, म्हारै सू तावै आसी बिसो हीड़ो थारो म्हे करस्या ।"

"आछी बात है थे करस्यो तो, पेट तो सिनाथ हूं च्यार कूडा पोठा थापै'र ही भर लेस्यूं पण खूटै वधी नही मरूं ।"

'पण दादी, एकै कानी तो सेठ तनै तीर्थ कराया अर दूजै कानी पाव-पाव दूध अर दवाया रा पइसा ही थारै नावै माड दिया, जबरो है, सेठ ।"

"तीर्थ कराया बै हू ही जाणू सिनाथ, सेठ-सेठाणी, बहू-बेटा, सगळा मिन्दर-देवरै का घूमण-फिरण जावता, हू डेरै बैठी दितूगै-सिझ्या चूल्हो फूकती, टाबरा नै चाय, दूध पावती, दोपारै सगळा खातर चाय उकळती, गई जठै घाट पर दो दफै सिनान करण रो दोस तो लाग्या मत ना, और मैं कोई सतसग कियो न कोई मिन्दर-देवरा देख्या फिर-फिर । 'चूल्हो-फूक' तीर्थ करावणनै ही लेग्या हा वापडा । सिनाथ, देवण-लेवण रो की धोखो नी, मोटी बात आ है कै वै आपरी पीड़ नै ही पीड समझै, अर आपरै सुख नै ही सुख, नौकर-चाकर नै तो अै समझै है कै काठ रा वण्योड़ा है बै । धणखरो धन्धो ही कूड़ रो, पैला वडोडो भाई विराट-नगर मे पकडीजग्यो हो—पूर-पल्लो लावतो बीनै सू । दूसरै नै काचर उठावतो देख'र ही हवा मे उछाळसी ।"

इतै नै परिया सूं ईसर अर सुगनो आवता दीस्या । सिनाथ बोल्यो, "मोड़ो कर दियो नी रे, सूरज देवता बीसीजणआळा है ?"

ईसर बोल्यो, "आपणै किसी अवै, चवरी री टैम टळै है, बाई नी-नी करतां चूरमो अर पूडी कर दिया, गाडै पर बैठा गटकता चालस्या, पैंडो

स्सोरो कटसी अर पेट में कूकरिया नी लड़ै। रात है अर आपा।"

सुगनी बोली, "पुरस्योड़ी थाळी नै पूठ नही दी थी तो आछो ही कियो।"

सिनाथ बोल्यो, "तो आवो रा अबै, ले गणेसजी रो नाव", अर गाडो टुर पड्यो।

15

देखतां-देखतां सहर री धरती सू कोस-पूण-कोस बारै निकळग्या। गाडो ज्यू-ज्यू बधै, आ तीना रै काळजै कोड ऊंचो आवै अर आं दोना रै आगणै हेत रमै, उछळै।

सिनाथ बोल्यो, "ईसर सगळा सू पैला आपां बाड़ीआळै सूरदास रै चालस्यां, घरे पछै, किया जची ?"

"जची काई, आ ही हू सोचै हो।"

फागण वदी तीज ही, आभो साफ अर अणगिण तारा बीं पर लटक्योड़ा पण पड़ै एक ही नी हो। सिनाथ बोल्यो, "दादी थे आडा हुवो तो, हुय्यावो एकै पसवाड़ै, थर्ड-क्लास रै डिब्बै री सी दुखदाई नी है अठै।"

"जजमान डब्बै री तो पूछ ही मत, आई जद मरी तो पैर नी ही पण बाकी को रैयोनी, बैठणो तो बापड़े पइसैआळा रो है, अधघड़ी नै आडी तो हुणों ही है, और किसो चूल्हो फूकणो है मनै अठै ?"

"दादी कळकतै मे थारै दाई, अठीनलो कोई पंछिड़ौ और ही बसतो है सो ?"

"कोई काई, कित्ती ही तो मनै मिलगी, मैदी माडती अर ऊपर-सापर री हाजरी भरती फिरै, बै तो टेराचट है अर म्हारै दाई चूल्हा फूकै बै थोटा-सा ही भुगतै। आदमी केई इसा देख्या जिकां धरती नै पूठ दे राखी है।"

"पूठ किया दादी ?"

"थारा खेल है अठै, बानैं ईं रेत सूं हेत कम है। 'सेठ-सा', 'बावू-सा', 'मालक-सा' आपरा ही दिया दिन है, आपरी मैर है तो सगळी बात है, ईं में आस्था जादा है बुझता आदमी है वै।"

"ओ संसार ईयां ही है दादी, मोरी रा माछर, मोरी में हीं मस्त है, छोड बानैं, तू तो आपणैं गाव रै पून-राणी में स्सोरा सांस लै।"

बात करता-करता, डोकरी नैं झोकडी आवण लागगी। मिनाथ बोल्यो, "लै, ईं खेसलै पर आख खारी करलै दो घड़ी, बिछावण नैं तो इसो सो ही है।"

"हा जजमान, नींद है आख्या में केई रातां री", अर, बा आडी हुगी। पड़तां ही नींद फिरगी। मिनाथ सोचै हो, "इसी स्सोरी नींद तो कळकतै री बाडी में बारै बरस में ही ईं नैं नी आई हुसी, अर आ जीवणदाई हवा ईडन-गार्डन अर विक्टोरिया में कठै, दूब पर थूक अर सेडो, मूफळ्यां रा छूतका, चाट-पिचका अर मुडो रा अैंठा कागद अर सगळां सूं घणों मोटर, बसां रो धुवो, पण ईं बापड़ी नैं आ हवा ही तो नसीब क्यों हुई है कदेई।"

तीन घड़ी रात बीतगी ही अर अगूणैं आभैं री जड़ा में लाल गोळो ऊंचों आवतो दीस्यो। अंधेरो धीरैं-धीरैं लोप हुवैं हो। रात सुहावणी अर पून मधरी। रस्तै में एक पो थाई पाणी-लूणी पियो, अध-घड़ी लागी बठै, पण दादी तो आख ही नी खोली जाणू आधो सू घणी बेमारी तो बीरो आज ही खतम हुगी।

हसती रेत, ज्यांरां कानी ऊंची पाळा अर कठै-कठै ही निरवाळा धोरा, वांठ. बोझा अर रूपराम, सै मौन, सैं सान्त। ऊठ आपरै मत्ते, मस्ती में एक भरोसों चालैं हो—ईं रोही रो एक-एक बाठ अर धरती रो एक-एक पावडो ईं रैं सैंधो हो। पाच साढ़ी-पाच बजी हुवैली, ब्रह्मबेळा री ठंडी हवा वो में मीठैं-मीठैं सी री की पुट ही। सिनाथ, दादी पर आपरो भाखलो अधर-सैं नांख दियो। बा तो इसी नचीती सूती हो, जाणू समाधि ले राखी हुवै।

ईसर बोल्यो "सिनाथ, आपणैं खेता रैं बरोबर आयग्या हा आपां, हे अैं दीसै सामनैं।"

सिनाथ बोल्यो, ',तो चाला एकर खेत में ?"

"अबै काई लवजो लेस्या बठै ?"

"सीव पर चाला, एक झड़प और करा।"

ईसर की झेपग्यो, बोल्यो, "कियोड़ी ही है हुवा, अगली तो बुझी ही नी है, दूसर सिलगावण री मन मे और आवै, अकल भाग खायोडी है काई, अबकै तो नुंवै सिरै सू जमीन काढो अर आस्था राखो मैनत पर।"

"सुख राख्यो रामजी तो ईसर, ओ ही काम करस्या, कुमाणसा रै पगा नीचै किचरीजतै, कोई इक्कै-दुक्कै नै काढ'र आपणो पथ बधावा जद ही स्वाद आवै, आपरो पेट तो सूकरी-कूकरी ही भरै, तो ही नीचै तो उतर एकर, चाला खेत कानी।"

उतरग्यो नीचै बो। हुग्यो सागै। सोच्यो, 'कांई करू है' पण होठा सू बारै नी काढ्यो आखर ही। सिनाथ बोल्यो, "सुगना तू ही आवरो।" ऊठ नै सुगनै रस्तै सू थोडो आगीनै कर, एक फोग सू झटका दियो। वो ही टुरग्यो छाया-सो वारै लारै, लाठी ही बोरै हाथ मे। अबकै ईसर रै मन मे सो बड़ग्यो। सोच्यो कांई भरोसो जद बुद्धि है, पल्टता किनीक ताळ, ओ तो एक सरडाटो है, आयो'र आयो हू सफा खाली हाथ हू, मार'र खाडावोच नी करदै, आनै तो बदळो लेवण इसी बेळा, इसो मौको, सोध्या ही नी लाधै।" एकर रू-रू हालग्यो, लगतो ही सोच्यो, 'इया आज मू काल थोडो ही हुवै, सिनाथ इसो कागलासर थोड़ो ही हुसकै, मारणो हुतो तो बी दिन ही मार देवतो— सुगनो निरवाळो होनी जेई तिया, अर इया करता ही जे मार दे'सी तो मारो, बीज म्हारो ही बोयोड़ो है, फळ लागग्यो है तो बो मनै ही खाणो पड़सी।" एक बूजै री ठोकर लागी, पड़तो-पडतो बच्यो, सिनाथ झाल लियो बोल्यो, "इया काई करै, मन और कीनै ही है काई, आखड़ं कियां है?"

"नहीं", बण कैयो। देखता-देखतां दोनू पाळ पर चढग्या, फैर सागण सीव अर सागण ही जाग्यां। "आ ही जाग्या ही नी ईसर?"

"हा।"

"तो टांग पायचा अर हु त्यार।"

ईसर सोच्यो, लै भई आयो सेखै नै भातो, सोचो वा ही हूसी, जाट अर आपणै मेळ रो रस्तो ही कठै? बोल्यो, "कांई करसो?"

"दो हाथ करस्या कुस्ती रा।"

"अबार बयारी कुस्ती, अर बी सागै?"

"डर मत ना आपां-आपां हीं, सुगना, डाग झला देखां।" ईसर अगलै छणां री उडीक करै हो, जिका मौत सू ही भयंकर हुमी, पण मौन, अर दूधड़ चितां मे। बण एक लीक खैंची, लै बीनै सू एकर तू आ, कबड्डी-कबड्डी करतो अर पछै हू। सुगना आ लै डाग तू देखतो रह।" ईसर रो भय और गैरो हुग्यो।

"नही तू ही आ पैलां" ईसर बोल्यो।

ऊजळो रात, मौन; पण तारा विसराम री उतावळ में। आथूणैं आभै कानी खायो भागतो चाद अर दौडता ठण्डो हवा रा झोका। एक मिट जाणू सैं एकग्या हुवै आरो खेल देखण नैं।

"तो लै हू आऊ ईसर" कबड्डी कबड्डी'''खेत री सूती रोही एकर मुखर हुगी—हे ओ मारयो, लै तू आ अबै।" करसी ठाकुरजी, "कबड्डी-कबड्डी' हे ओ लै, ओ मारयो, सिनाथ बूकियो झाल'र, बठै ही राख लियो" बोल्यो, 'मारयो कठै', 'मरग्योनी ?' 'पण चालो अबै, हुमग्यो खेल।' सुगनो गूगों-सो देखै हो, इचरज में डूब्योडो। बीनै बा डोकरी जागगी; आपरै स्वार्थी बेटी-बेटा रै इन्याव अर आपाधापी सू तग आयोडी दूबळी भारत-माता-सी अबोल बैठी, पण सुणै ही।

सिनाथ बोल्यो, "ईसर आपां तो इया मर-मर जियां, अबार देख्यो तैं, "धरती रा बेटा इमरत पुत्र हा आपां।" आयग्या गाडै पर। ईसर रै मन मे अबै जा'र मान्ति वापरी। एकाध काळो टीको ओजू बीरै माणस मे तिरै ही कठै ही, अबै बा ही धुपगी, मन गगाजळ हुग्यो, खेल खतम हुतां ही।

"सिनाथ, एकर तो हू डरग्यो कै ओ इया कांई करै, आवैनी" ईसर बोल्यो।

"संकै सू संको ही जरमै ईसर, बिस्वास थोडो ही, चोखो मळ री इत्तो अस ही माय रैयो कांई काम रो, समै पा'र मळै कठै ही फोडा घालतां।"

गाडो चालै हो, चालतो रैयो। गाव रो गोरवो आयग्यो। पीळो बादळ हुग्यो। ऊषा अबै दौडती आगै-आगै अर बीरो बाप ईं रै लारै-लारै। हाथ नी आवै बा। आं गे आं खेल रोज हुवै' धरती पुलकित हुवै ईं नैं देख'र।

चाद आथूणों जा'र पीळो पडग्यो, तारा तो विदा हुवण रा ही हा। सिनाथ बोल्यो, "ईसर एक रो ऊगणो अर दूजै रो फीको पडनो, आ रो ओ

क्रम ससार नै कितो सुखदेवो है, इया ही जे ससार री वृति हुवै तो किसीक ?"

"अठै तो एक ऊचो चढता ही दूजै नै खावण री करै।"

पखेरवा रो कलरव काना नै सुवावै हो। गाव रा घर अर रू ख बा दोना री चेतना मे अणमावतो आनन्द भरै हो। महीना सू दीस्या है नी। डोकरी रै कोड री तो मँमा ही छोडो चाको ही नी हुवँलो सायत।

इतै मे ही सेठ धनजी दीस्या हाथ भाजता। बा दोना नै एक ही आसण पर बैठा देख'र सोच्यो 'ओ बीज-बारस रो मेळ किया', फेर खडो हु'र बोल्यो, 'कुण सिनाथराम ?' सिनाथ नी बोल्यो।

"बोल्या किया नही ?"

'सेठा जिकै सिनाथ नै थे जाणो, बो तो मरग्यो, ई नुवै सिनाथ नै थे सायत ही जाणता हुवो, ई खातर नी बोल्यो।"

"आ किया कँई ?"

"सेठा, आदमी रो मोल ही काई है, गाव खँडै मे हजार, दो हजार, कुर्स्या री लड़ाया मे लाख, दो लाख हुवँला, दिया सोट अर लाग्यो भचको पण डरता-डरतां लुक'र हीणा काम कोई ही करै चावै, बीरी लकीर चँरै पर जरूर मंडै।"

"भई मनै तो घणो ही सोच हुयो, केई दफै जांवतो घरे पूछण नै।"

"आ राजनीति तो और ऊचै दरजै री है सेठा, राजनीति री घणी ऊंचाई पर इयां ही हुवै, भीड मे चालतै रै समझ मे ही नी आवै। पूछै हा तो माईतपणो हो थारो।"

ईसर बोल्यो, "इयां पइसा आछा ऊगै सेठा, लगाया करो, ओ नही मानै तो मत मानो, हू तो गुण ही मानू थारो, थे हुवो न म्हे एक धरती पर खडा हुवा', गुण नै तजै वो गोलो-दोगलो।"

सिनाथ बोल्यो, "म्हारा किसा बैरी है, म्हारो कँणो तो है कै की माटी री मँक ही लिया करो, भेळा करो हो था सूं तो नी आ सकै वा," अर गाडो आगीनै निकळग्यो। काटो तो गूत नहीं, सेठ रो मन एक नुंई उथळ-पुथळ मे तिरतो-डूबतो आनै तीन-तेरै करण रो कोई मूल आधार ढूढै हो। सोचै हो सेठ, कै, "ई ढंग सूं एक माळ नी बांचता, तो अै उचाळसी गाव।"

सूरज री पैली किरणा गांव री धरती पर पूरी तरै फैलगी ही । गाव रो जीवण-बौपार आपरै पैलै चरण में चालू हुग्यो । अै दोनू ऊतर'र वाडी कांनी टुरग्या, अर गाडो डोकरी नै ले'र घर कानी । छोटी-सी साळ है बठै पक्की अर पुराणी । आगै चौकी है । अै होळै-होळै वधै हा । आंरै काना मे इकतारै री झकार सागै एक सुरीली अवाज पडी । अै आधी मिंट एकर वारै ही थमग्या । राग कानडो, पछला बोल हा भजन रा—

'रूप रेख गुन जाति जुगति बिनु, निरालम्ब कित धावै ।
सब विधि अगम विचारहिं, तातै सूर सगुन पद गावै—
अविगत गति कछु कहत न आवै ।"

अवाज बन्द, जाणू तार नै काट दियो हुवै कण ही विचाळै सू । इकतारो खूणै मे खडो कर दियो । एक बोरी पर वैठो हो सूरदास । कनै ही एक अधवुणी कुर्सी पडी ही । वण वीनै सभाळ ळी । स्कूल का पंचायत री हुणी चाईजै कुर्सी । अै आगीनै वध्या सूरदास री सुणन-शक्ति तेज हुवै, आरी थोडी-सी सुरसराट जिया ही कानां मे पडी, फट सजग हु'र वो बोल्यो । "कुण हुसी ?" दोना ही पगा रै हाथ लगायो, "अरे ओ काई करो ।" सिनाथ बोल्यो—

"अै तो म्हे हा, ईसर अर सिनाथ ।"

"थे कद आया ?"

"अबार सीघा ही, घरै ही नी गया ओजू ।"

"जवरो काम कियो आछा हो ?"

"हा म्हाराज, आपरी असीस सूं ।"

"हू थारै डोल नै तो कियां देखू, अर मनै जरूरत ही कांई देखण री, पण थारी मिलवी-अवाज अर थारो मिल'र आणो, थारी निरोग चेतना रा लक्षण है, हूं वडो राजी हू । एक मिंट रुक'र, "ई मे म्हारी असीस रो काई थारी समझ है आ तो ।"

सिनाथ बोल्यो, "म्हे तो इत्ता दिन समझ ही नी सक्या आपनै, अळगा-अळगा ही रैया, भाग री बात, अवै आपरा रिपिया देस्यां, ब्याज-सूंणा, की पळोयन घर रो ओर भेळस्या तो ही समझा आपरो रिण नी

ऊतरै।"

"हूं तो आंधो हूं-परखम, की नी दीसै पण उपासना सगुण री ही करूं, न रिपियै-पईसै री न निर्गुण री—पवितर मैंनत मे बसतै आदमी री, अहं अर ईसको छोड़'र मोद सूं मिलती मानवी चेतना री। इष्ट नै पावण खातर ही जीऊं, आ समझलो। थे खुद नै समझो तो मनै समझण री जरूरत ही काईं, मन री एकता है आपणी तो जलमजात, सिनाथ,था रिपिया देवण री कही बा हू नी समझ्यो, किसा रिपिया ?"

सिनाथ बोल्यो, "म्हारै खातर आप दिया वै।"

"थानै कद दिया रिपिया मैं, हू ओजू ही नी समझ्यो। रिपिया दिया मैं म्हारै मन री मोज नै, इष्ट नै पावण नै; थे माग्या हा कदेई रिपिया म्हारै सूं ?"

"नी मा।"

"बिना माग्या ही कोई की कानी ही फैंकै तो बी गुगै रो कांई करै कोई, अर इयां फैंकणियैनै कांई जरूरत पाछा लेवण री ?"

वो बोल्यो, "ओ तो आपरो बडपन है, पण रिपिया है वै तो देणा ही है म्हानै।"

"ओजूं ही थे पत्तां पर ही फिरो हो, मूल कानी नी मुडो। आ लड़ाई सिनाथ अर ईसर री नी ही आगै जा'र आ हुती जाट ओर राजपूता री, हवा घालणआळा घणा ही है इं नै। दो घडा जूझता टैम-बेटैम, बारै सागै केई किचरीजता अर केई करता चूरमा—गांव बिखरतो। स्वार्थ बस बीज बो दियो कण ही। आपरै पगा ताई ही ओछी नजर राखणआळा दूरगामी परिणाम नै कियां देखै; हू चावै हो, ओ बीज किया ही निर्मुल हु'र वो जाग्या मेळ रा दो फूल मुळकै। फूलां री धरती थे हा दोनू। विस नै निर्मुल कर दियो, म्हारी मस्ती ही बी सूं जादा चौड़ी हुगी। पइसा रो मुवावजो तो मनै कदही मिलग्यो।" सूरदास एक मिंट चुप हुग्यो।

फेर बोल्यो, "थे जाणो हो, म्हरै किसा टाबर-टीकर है, किसी लुगाई-पताई, रिपिया कनै ले'र सोऊं तो कोई मिणियो ओर मांस दे, कांई रिपिया म्हारै। हूं तो धणै सूं घणा लोरो भाड़े रा दो-च्यार [illegible] सकूं, अर नी हुवै तो वै नी सही, पण है ठाकुर जी रा दियोड़ा।

में हूं दो-चार साल बिताऊ, कळै अर ईसकै मै तिरतै-डूबतै दो घडा नै एकल ऊचावै पर खडा राखणा का बेजा अभाव मे पीचीजती दुखिया री आह नै सोरो सास लिरावण, म्हारै कनै हुवै ज्यू नांखदू , बस मौको मिलणों चाईजै मनै अर हुणों चाईजै गाठ मे को । ई गाव में आपनै च्यार साल नैडा मनै हुसी—म्हारो थे एक मोटो मतळब पूरो कर दियो अबै ओर कोई ढूंडो दूढस्यू, आखो देस म्हारो ही है, घणो ही लम्बो-चौडो, कठै ही जा'र टिको, की सू लेणों ही नी तो कुण पालै ?"

बै दोनू सुणै हा मत्र-मुग्ध-सा अर एकटक देखै हा बी सामां । सिनाथ सोचै हो, कांई आदमी है ओ, देखणी मे ही नी आयो म्हारै तो इसो आज तांईं । नैचो पर निश्छळता रमै है ईंरै चेरै पर । सकतो सिनाथ बोल्यो, "तो ही की कदर तो म्हारी भावना री ही करो ।"

"देवण री ही तो बात है नी ?"

"हा"

"हा देवो, देवो क्योनी, बरजै कुण है थानै देवता नै, पण मैं बेजरूत नै क्यों ? समझ तो थारै ही है, थे ही देवो थारै मन री मोज पर; वित्ता ही क्यो, सामर्थ है तो बोसू बेसो । बौपार है ओ तो बधावो, मुनाफै रो काईं चाको है । तीस बरस नैडा हुग्या देस आजाद हुया, हरिजन ओर मुसळमान, सत्ता मे एक खास धडो रैयां जी सकै, नही तो खतम है का खतरो है, आ कठै री रीत है । सुविधा रै नाव पर वांनै की दे-दिरा'र ओरां सू राखणा न्यारा ही । कोई ही धडो देस सू बडो नी हुवै देस हित पैलां, धडो पछै ।"

ईसर बोल्यो, "अबार तांई तो सा आ ही बात है, अर लागै ही अचैरी है ।"

"न्यारा-न्यारा धडा हुया, एक रै फायदो हो सही, पण देस नै तो घाटो है, टूटै नी बो ।"

"टूटै तो है सा" सिनाथ बोल्यो ।

"टूटै तो मैंटो बोनै, आंखआळा हो थे, हर मैनतकस नै आस्थावान करो, आप सू तार्च आवै जित्तो, धडैबाजी सू ऊपर उठै बो, बो ही क्यों आखी मिनख-जात उठै ।"

सिनाथ बोल्यो "ठीक है सा, आपरो बतायो रास्तो बस पड़ता, म्हे ही

पकड़स्यां, पण थोड़ो घणों की आपरो परिचै तो म्हे ही जाणणो चावां।"

"परचै थारै मामो है, सूरदास हूं, बो न रंग-भेद जाणै अर न जात।"

"सूरदास जल्म सूं ही हो आप ?"

"हूं नहीं, कर दियो कण ही मनै ?"

"कियां ?"

"आ अबार मत पूछो, लम्बी कथा है, अर है ही बडी दर्दीली, भळै कदेई कैस्यू फुरसत में।"

"जात ही की तो हुवै ही ली ?"

"जात मैंनतकस है, रोज पांच-छव घंटा खटणी कर'र रोटी खाऊं, मैंनतकस ही थे हो—एक जात रा हां आपां, हां अबै थे जावो एकर, डोकरी-डोकरां सूं मिलो, उडीकता हुसी आख्यां फाड़ै।" टुरता-टुरता उठ'र भळै बोल्यो, "एक मिंट, एक मिंट ?" थळी कनै ऊभो रह'र बोल्यो, "भैंस थारी, दूहो बिलोवो थे अर चाटो थारो,पण आपस में जे विरोध अर विश्वासहीणता री भींता बधगी तो थारै पल्लै पड़ैलो पीचीजणो, माखण, मळाई और कठै ही चढ़ैला, बस पड़ता भींतां बधण देया ही मत, हां जावो अबै।"

बै गया अर सूरदास घटती कुर्सी पूरी करण में लागग्यो।

दिन री तीन, साढ़ी-तीन बजी हुसी, सिनाथ सूरदास कांनी टुरग्यो। "आंधो हो नहीं कर दियो," 'कियां ?' पूछू तो सरी, बोलती पोथी है ओ, 'आंधरे को सब कुछ दरसाई,' चेतना रै हर रू' में आंख देराखी है परमातमा बीनै। चालतै-चालतै, पीपळ रै गट्टै कानी बण देख्यो, छोरा केई ताम मेलै हा, दो-च्यार चरभर री कांकरी आगी-पूठी करै हा, बूढ़िया केई परियां, चिलम खींच-खींच धुवै रा छल्ला पून में छोडै हा।

बो वाड़ी पूगग्यो। गाळ रै करनाळो लाग्योड़ो हो, बण खोली, न इक-तारो, न कुर्सी अर न कोई बोरी रो आसण, जीव रहित सरीर-सी सूनी पड़ी ही साळ। सोच्यो वो गांव में गयो हुसी कठै ही, फेर बीनै टा लाग्यो कै बारै-साढ़ी बारैआळै गट्टै मे बैठ'र गयो, टा नी किसै गांव—किसी दिस ? कह तो बण पैलां ही दियो हो कै घणो ही लम्बो-चौड़ो देस है, सै खेड़ा आपणां ही है पण सिनाथ रा पग ही भारी अर काळजो हो। टुकड़ा में बिगरी बीरी याद जुड़-जुड़ अबार अचाणचकी एकळ हुगी बी में। बीरो एक पूरो

चितराम बीरी चेतना-खूटी पर आ टग्यो। सोचै हो बो—"आधो हो पण आख्या बाटतो, सुदामा हो पण हाथ ऊचो ही राखतो। सोवतो पण जागतो, अर जागतो जद रोवतो, जागै अर रोवै—कबीर हो बो। न जमा (सग्रै) रो मोह अर न जाग्या रो। आपरी ममता कठै ही नी ऊगी बीमे पण परायै खातर खडो मूकतो। फाटता सीडतो, टूटता जोडतो, कारीगरी बाटतो बो। धरती री मनस्या समझतो अर बीरै लारै चालतो। एकदिन ई माळ मे ही सुणायो हो ब्रण, 'पिया मोरा जागै, मैं कैसे सोई' जागण खातर ही जलम्यो है निरमै बो, पण अबै कठै मिलै ?" सागी पगा टुर पड्यो बो उदास-उदास।

चालतै रै, बीरा सुर रह-रह, बीरी चेतना मे भळे गु जण लागग्या कै, 'वर्ग-भेद री भीत सू ऊपर भूलो-भटकी, दुखियारी मानवी चेतना खातर उपासना रो बौपार चालू राखणो चाईजै—मन री मौज पर, जी भर'र देणो चाईजै, मैक बधै अर मुनाफै रो काई चाको ?" विचारा में खोयोडो जिया ही बो एक बाड सारकर निकळै हो का केई मिल्या-सुर बीरै काना मे पड्या कै, आपणी भैस, दूहा-बिलोवा आपा, बीरो हीडो-चाकरी ही आपा *बजावा अर माथ र बीरो छावै माथिया', भावा री एक सैंज टकराहट बीरी* चेतना मे हुई, सागण गगा भळे बह उठी, बीरै काळजै री धरती पर। अरे आपा सोचा कै सूरदास गयो, गळत है आपणो सोचणो, बो तो आखै गाव री चेतना मे मौजूद है—जीवतो-जागतो, बो बी घर रै फळसै मे बड्यो—मैनतकसा री एक टोळी मे।

बीनै, धनजी री हाट मे, एक पसवाडै इक्को-दुक्को गाहक सौदो-सपटो लेवै हो, दूजै कानी गिद्दै पर पडित रामधन अर नत्थू गोदारो सेठ सागै गुरबत करै हा। कटारियाजी चुणाव खातर आयोडा हा, जीमा जूठा कर'र अबार ही गई है। थोडी ताळ पैला तो बरामदो काठो भरयो हो लोगा सू। नत्थू बोल्यो, "सेठा कवणो पदमी लुगाई है—धाडफाड अडधाकड, मिनखा रा पग पाछ दिरावै इसी, ऐसकै आ जीतगी तो आपणै गाव नै गुलजार कर कर देसी।"

सेठ बोल्या, "हा रुख तो इसो ही लाग्यो और की नहो तो, आपणो ऐसान तो मान ही सी, अर अड़ी-भड़ी मे बापड़ी आडी थासी, हाथ मोकळा

लम्वा है ई रा।"

रामधन बोल्यो, 'सुणी है, सिनाथ, पदमा अर आधियो अैस एकर ई कनै गया हा नेता वण'र, अण आपरा पूरा पगोथिया ही नी चढण दिया, सूका ही तिसळा दिया, ओजूं ही वां सागै घणो रुख क्यानै जोड़ै है ?"

सेठ मन ही मन वडो राजी हुयो बोल्यो, आ आप मिनख चरावै हैं, एवड़ थोड़ो ही रुखाळै ?"

इत्तै मे ही सुरतियो नायक आयग्यो, पोतियो बाध्या, वगल में छोटी-सी एक वुगचडी दिया। हाय जोंड'र वरामदै में, हाट री थळी आगै बैठग्यो। रोगी देखता ही वैद वेमारी नै जाणग्यो, तो ही पूछ्यो सेठ धीनै, "आव सुरता, अवकै तो खासै दिना सू आयो रे ?"

"सेठा, मा चलगी परस्यू, की गूघरी रो वन्दोवस्त तो करणो ही पड़सी, आप माईत हो, कवूतर नै कुवो दीसै ज्यू मनै तो आगै-लारै आप ही दीसो।"

"अवै तो वन्दोवस्तआळा घणा हीं जागग्या गांव मे नुवा पीर, वै करसी।"

"जागग्या तो जागो सा, घोड़ै रा लम्वा हुसी तो पैलां आपरा ही उडासी, सवार नै कठै जाग्या है, मनै ई सूं कांई, म्हारै तो छायां है थारी, अर थारी ही रैणी चाईजै।"

नत्थू बोल्यो, "है जिका सेठा म्हारै सूं किसा छाना है, एक तो मिनाथ है म्हारै, वीरै आपरै ही दोना भाया रै घोड-मी वैठी है दो छोरी, वानै मावळ धोरियै चाढ दे'सी तो ही घणी है, एक घणो वूसवूसाकड आंधियै नै समझो, वो तो सुणी है आज झोळी-झिडी उठा'र पग रमायग्यो कठै ही।"

सेठ वोल्यो, "गयो तो लारो छूट्यो, ही जितो सगळो ही चूंवाड़ी हो, वोलो ही आक सूं ही खारो।"

रामधन बोल्यो,"एकाध ओर हुवैलो इस्यो ही कोई, पण अै सै सराधिया वादल है, वानै देख'र कोई घडा ऊंधा मारै तो, भूल है वांरी।"

धनजी वोल्यो, "अवार तो थारै दो महीनां रा दाणा है जितै तो आभो थांनै टोपसी-सो लागै, पण दिल्ली ओजू दूर है, चौमासो अळगो है भलो। तेड़ो भेज'र वुलावां तो ही सिर हिलावो, इसा थे कांई प्रधानमत्री रा वेटा

हो ? काल ताईं छाछ-राबडी पा-पा'र टाबरां दाईं पाळ्या, आज जबाब देवो, 'सेठ काईं पूछ बाढमी म्हारो, कमाई म्हारी कर'र खावां', पूंछ तो रामजी ही नीं राख्यो, हूं कांईं बाढू ?"

रामधन बोल्यो, "अबार जमानो हीं भलाई रो नी रैयो सेठां।"

नत्थू बोल्यो, "थे सेठा, चौमासो अछूगै री फरमाई, पण लेठा तो ग्रिस्त मे और ही घणा ही है, छोरै-छोरी रा फेरा, किनारै आयोडा डैण-डोकरी, माएरा-मसाला, सवाड-पाणी, तातौ-मादगी अर आपस रो कूटा-मारो। थे लिछमी रा पुत्र हो, थां बिना बस्ती मे पार पडै है कदेई ?"

रामधन बोल्यो, "चौधरी, पाप रो बाप, खेता री रकम तो ओजू बाकी ही पडी है ?"

वाता सू तो सुरतियै रो मन आ इसो घायल कर दियो कै ओ आगै साक्‌ आंख मे घाल्यो ही नी रडकै। वो हाथ जोड़'र बोल्यो, "माईतां हूं लम्बी-चौडो नी जाणूं, हूं तो म्हारै जी री साखी भरू, हू तो आज तांईं न तो थारै गूं बदळ्यो अर न आगै बदळू, म्हारो आंटो तो थानै किया ही काढणो पडसी।"

सेठ पूछ्यो, "ल्यावै काईं है, बा तो सुणा ?"

बुगचडी खोल'र बोल्यो, "अै तो टूम है म्हारै कनै चांदी री, इग्याराना-तीनपाव अर बोरी सो-तीन है मोठ।"

"अर रिपिया ?"

"रिपिया हजार-आठसै मे तो पाणी ही नी पड़ै।"

"फेर तो मुश्कल है पार पड़नी, घास-कचरो कठै गयो ?"

"पडचो है पाच-सात गाडो।"

"वीरां काईं करसी थारै किसो घीणो है ?"

"नांग लेया, मसीन पर।"

रामधन बोल्यो, "सेठा पुरखो अबार आ'र गयो ही हो, परसू जान चढमी छोरै री, अर ओ बापड़ो आयो ही है, धीरै-सुस्तै मै आ ढूकसी, गांव में बससी वीनै तो पीं न को रस्तै ईं देवळो नै धोकणो हीं पड़सी।"

नत्थू बोल्यो, "सेठां, ईं छोरै पर तो, मैर करो को, म्हारै कैणै सूं हीं औरा दाईं पोचो नो पड़ै ओ।"

टूम सेठ मायं मेलदी, इत्तै मे केसरो कोटवाळ आ पूग्यो बोल्यो, "दो ट्रक आया है पालो भरण नै ।"

नत्थू बोल्यो, "थे तो न्याल हुग्या सेठा, पालो करड़ो ऊंचो गयो, बीस-बाईस रा भाव है सहर मे, हजारीमलजी ही पइसा चोखा कूट लिया अैस ।"

"की दाळ-रोटीआळा पइसड़ा हुसी ही अैसतो, आवतै री आवतै दीखसी, अैस जिसा असार कम ही लागै, सुरतिया चाल देखा आयै भाड़ै की स्सारो तो लगा । "चालो", अर सै ही टुरग्या ।

सेठ सोचै हो, "गांव रा दो-च्यार सनकी बासण जचा'र खडा करण मे लाग्योडा है, पण बांनै आ ठा क्यानै है कै नीचलो एक ही बासण सिरका दियो कण ही तो सै भाडा छेडै जा पडसी, लोकी रा लाख मारग हैं, अै किसो-किसो समझसी ।"

सूरज छिपग्यो, बत्ती हुगी । ट्रक भरीज्या जित्तै सुरतियै री चोसगी पालै मे चालै ही । मूं अर माथो खख सू भरीजग्या, ओळखणी में ही नी आवै हो बो । हाथ अर पगा मे कांटा खुभग्या हा । ट्रक भरीजै पछै—बड़ी नरमाई सू बोल्यो, "अबै जाऊ सेठां ?"

"हा जा, काल मोठा री बोरी तीन लेवतो आए, घास नै हूं गाड्या भेजू हूं ।"

"भेज देया ।"

"तो जा" अर सेठ बत्ती रै चानणो लोट गिणन मे लागग्यो ।

□□